- जीने का राज

- मुनि ज्ञान

- प्रथम सस्करण अगस्त 2002, 2100 प्रतिया

- मूल्य 20/-

अर्थ सहयोगी श्री सायरचन्द जी छल्लाणी

प्रकाशक
श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ,
समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर

मुद्रक
अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, बीकानेर
दूरभाष 547073

प्रकाशकीय

श्रमण भगवान महावीर ने चतुर्विध सघ के कुशल सचालन को उत्तरदायित्व आचार्य श्री सुधर्मा स्वामी के कधो पर रखा। सुधर्मा स्वामी ने आचार्य श्री जम्बू स्वामी एवं जम्बू स्वामी ने आचार्य प्रभव स्वामी के कधो पर रखा। उसके पश्चात् से आचार्य परम्परा निरन्तर गतिमान चली आ रही है।

साधुमार्गी के इस दीर्घकालीन इतिहास मे हास और विकास का क्रम चलता रहा है। यह सुखद सयोग रहा है कि हास के विकट काल मे भी समर्थ एव सुयोग्य आचार्यो का पावन सानिध्य इस परम्परा को प्राप्त होता रहा है।

श्रमण परम्परा में लगभग 200 वर्ष पूर्व शिथिलाचार व्यापक रूप से फैलता जा रहा था। शुद्ध साधुत्व के दर्शन दुर्लभ होते जा रहे थे। क्षेत्र, धर्म स्थल एव शिष्यो के व्यामोह मे साधुता मग्न होती जा रही थी। ऐसे युग मे आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा का जन्म हुआ और उन्होने दीक्षित होकर आगमिक ज्ञान और शुद्ध साधुता के बल पर साधुमार्गी-परम्परा को प्राणवान बनाया।

आचार्य श्री हुक्मीचन्द म सा के बाद इस परम्परा को पश्चात्वर्ती आचार्यो ने उत्तरोत्तर आगे बढाया। आज हमे परम प्रसन्नता है कि समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानेश के पट्टधर प्रशान्तमना, व्यसन मुक्ति के प्रेरक, श्री वाल प्रतिबोधक, आचार्य श्री रामलालजी म सा के सानिध्य मे साधुमार्ग की वह धारा विकसित रूप मे उभर कर आ रही है।

आचार्य श्री रामेश के निर्देशन मे श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ जिनशासन की सुरक्षा/सवर्धन के लिए कृत सकल्प है। सघ की शासन उन्नयन की विभिन्न प्रवृत्तियो में सत्साहित्य का प्रकाशन भी एक अह प्रवृत्ति है। प्रस्तुत कृति जीने का राज का प्रकाशन उसी ध्येय की पूर्ति है।

प्रस्तुत कृति विद्वद्वर्य ओजस्वी व्याख्याता, सत प्रवर श्री ज्ञानमुनिजी म सा के ज्ञान का सदोह है। साधुमार्गी धर्म सघ के अष्टमाचार्य श्री नानेश के [illegible] सुशिष्य श्री ज्ञानमुनिजी ने 13 वर्ष की अल्प आयु मे दीक्षित होकर [illegible] ज्ञान साधना, अथक लगन एव रचना धर्मिता द्वारा अपने नाम को [illegible] प्रदान की है। मुनि श्री विद्वान साहित्यकार और सफल प्रवचनकार है। [illegible] और वक्तृत्वकला से उन्होने शासन की जो भव्य प्रभावना की है [illegible] है। इतिहास, चितन स्मरण, काव्य उपन्यास, कहानी, [illegible] अनेक विधाओ और विषयो पर आपकी गद्य व पद्य में अनेक

कृतिया प्रकाशित हो चुकी है। जो जैन-समाज मे समादृत है। प्रस्तुत कृति के लिए हम मुनि श्री के आभारी है। प्रस्तुत कृति जीने का राज का प्रकाशन असावरी जिला नागौर निवासी सघ/शासननिष्ठ सुश्रावक श्री सायरचन्द जी छल्लाणी के अर्थ सौजन्य से हो रहा है। साहित्य के प्रकाशनार्थ प्रदत्त अर्थ सहयोग हेतु सघ हार्दिक साधुवाद एव आभार ज्ञापित करता है। प्रकाशन प्रक्रिया मे सहयोग हेतु श्री उदय नागोरी धन्यवाद के पात्र हैं। पूरा विश्वास है मुनि श्री की कृति मे सन्निहित सदेश आत्मसात कर पाठक अतरावलोकन करने मे समर्थ होगे और जीवन को सम्यक् दिशा मे अग्रसर करेगे।

निवेदक

शान्तिलाल साड

सयोजक

साहित्य प्रकाशन समिति

श्री अ भा सा जैन सघ, समता भवन, बीकानेर

अर्थ सहयोगी परिचय

विद्वद्वर्य, ओजस्वी व्याख्याता श्रद्धेय श्री ज्ञानमुनि जी म सा की प्रस्तुत कृति **जीने का राज** का प्रकाशन सघ/शासननिष्ठ, सेवाभावी सुश्रावक श्री सायरचन्दजी छल्लाणी के अर्थ सौजन्य से हुआ है। मूलत ग्राम असावरी जिला नागौर निवासी श्रीमान झूमरमलजी छल्लाणी के आत्मज श्री सायरमलजी को सरलता, सेवा व समर्पणा के सस्कार विरासत में मिले, जिन्हे आपने वृद्धिगत रखा और समाज मे अपनी पृथक् पहचान बनाई। आपके पितृश्री विगत तीन दशक से नित्य सामायिक, स्वाध्याय एव त्यागमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आप दोनो समय सामायिक की साधना करते है तथा लगभग 25 वर्षो से चौविहार का पालन करते है। ईमानदार, सादगीपूर्ण जीवन, सरल/सहज व्यवहार, सत्य के प्रति समर्पित जैसे गुणो से युक्त व्यक्तित्व है आपका।

श्री सायरचन्द जी व इनके अनुज द्वय-श्री कैलाश चन्दजी एव श्री सुमेरचन्दजी ने कक्षा 5 से 11 तक जैन हॉस्टल, भोपालगढ मे रहकर जैन विद्यालय मे अध्ययन किया एव तदनन्तर जैन दिवाकर होस्टल, ब्यावर से बी कॉम किया। सन् 1978 मे इन्होने मामाजी व ननिहाल वालो के साथ निर्यात (Export) का व्यवसाय किया और अथक परिश्रम, प्रतिभा व लगन से अनवरत सफलताए अर्जित की। विगत 25 वर्षो मे इन्होंने 60-70 बार विदेश यात्रा की। अमेरिका, इटली, फ्रास, जर्मनी, स्पेन, डेनमार्क, U K आदि देशो मे प्रामाणिकता व विश्वसनीयता की छाप छोड़कर आपने जैन समाज, राजस्थान व भारत को गौरवान्वित किया है।

सन् 1985 मे तीनो भाइयों ने सयुक्त रूप से Jewellery (जवाहरात) व Handicrafts (हस्तकला) का व्यापार प्रारभ किया। जवाहरात मे दिल्ली राज्य का अवार्ड (Award) मिला व दो बार अखिल भारतीय स्तर का (1993 व 1999) Jewel का अवार्ड मिला।

मौसम बडा सुहाना है, अत घर में मन नहीं लग रहा। आज तो इच्छा हो रही है, चम्बल गार्डन (Garden) मे घूम आए। कुछ खाने पीने का सामान भी साथ ले लो व जल्दी से कनक को भी तैयार करके ले चलो आज सैर सपाटे की मौज लूटे।

सेठ शकर प्रसाद की बात सत्यवती को भी बडी मन भाई। उसने कहा– हा–हा जरूर चलिये। ऐसे मन भावन अवसर तो बहुत कम आया करते हैं। पर साथ मे लेने के लिए सामान्य मिठाई– नमकीन तो अच्छी नहीं लगेगी। आप कहो तो गरमा–गरम पकौडे व सूजी का बढिया हलवा भी बनालू। हॉट (Hot) बैग मे ले जाएगे तो ठडा भी नहीं होगा। बगीचे के अन्दर जो बढिया झूले लगेगे, वहीं झूलते हुए खाएगे।

हा ! यह तो बहुत अच्छी योजना है बडा मजा आएगा सेठ सा ने कहा। पतिदेव का समर्थन पाकर सत्यवती तुरन्त रसोई घर की ओर बढी। सोचा कि कनक तो अभी नीद ले रहा है, तब तक मैं रसोई घर मे काम कर लू, वह जग जाएगा तो बहुत दिक्कत हो जाएगी।

रसोई घर मे जाकर जल्दी–जल्दी उसने नमक मसाले बेसन सूजी घी, शक्कर आदि सामान पास मे इकट्ठे किये व गैस जलाने के लिए लाइटर, (Lighter) भी ले आई। शकर प्रसाद जी भी उसे कार्य मे कुछ सहयोग करने के लिए उसके पीछे–पीछे ही आ गये थे। सत्यवती ने गैस का बटन खोलकर ज्योही लाईटर (Lighter) चालू किया, अचानक भयकर धमाका हुआ। गैस टकी से गेस पहले ही लीक हो रही थी लाइटर लगाते ही गैस ने आग पकड ली, टकी फूट गई, सारा कमरा धधक उठा। ऊपर की छत भी उस भयकर विस्फोट से धडाधड गिर पडी। देखते ही देखते मकान स ज्वाला उठ गई सेठ शकर प्रसाद व सत्यवती दोनो ही आग से बुरी तरह झुलस गए फिर ऊपर से छत और आ पडी दोनो दब गये। मन के अरमान मन म ही रह गये। कहा पिकनिक (Picnic) मनाने का प्रोग्राम (Programme) था कहा यह की लपटे। क्या सोचा क्या हुआ ? दुनिया मे हजारो व्यक्ति प्रतिदि ही कल्पनाए सजोते हैं, कितने ही श्रावण के झूल झूलते हें और ही मौत का झूला झूल जाते हें ? व्यक्ति सोचता क्या हे और हाता है। होता वही है जो उसके कर्मो म लिखा होता हे। कभी–कभी कर्मो आगे पुरुषार्थ भी बौना प्रतीत होने लगता है।

आसपास के पडौसियो ने शकर प्रसाद की हवेली से जब ज्वालाए देखी तो सभी दौडे बुझाने के लिए। किसी न अग्नि शमन कन्द्र पर

फायर ब्रिग्रेड (Fire Bngade) बुलाने फोन किया। वहा किसी को जल्दी से विश्वास ही नही हो रहा था– श्रावण का मास, रिमझिम बरसात और आग। गर्मी के मौसम मे तो फिर भी यदाकदा आग लग जाया करती है। पर वर्षा काल मे । फिर भी जल्दी ही फायर ब्रिगेड (Fire Bngade) गाडी आई आग बुझाई गई। इधर रिमझिम वर्षा जो इतनी देरी से थमी हुई थी वह भी प्रारम्भ हो गई जिससे आग पर कट्रोल (Control) शीघ्र ही हो गया। पुलिस ने अन्दर जाकर देखा–रसोई घर के हालात को देखकर सारी स्थिति समझ ली गई कि गैस टकी का विस्फोट होने से यह दुर्घटना हुई है। सेठ सेठानी को मलवे मे से किसी तरह बाहर निकाला, वे बेहोश थे, धीमी–धीमी श्वास चल रही थी। हास्पिटल ले जाया गया, डाक्टर्स पहुचे तब तक तो उनके प्राण पखेरु उड चले किसी अन्य स्थल की ओर ।

पास पडौसियो मे से किसी को ध्यान आया अरे ये दोनो तो चले गए पर इनके बेटे कनकसिह का क्या हाल है उसे तो किसी ने देखा ही नहीं ? सभी तुरन्त घर की ओर भागे, बहुत बडी हवेली थी, रसोई घर व उसके आसपास के कमरो मे आग लगी थी पर सेठ जी का बेडरूम इन सब से अलग था वहा तक आग नही पहुची थी। बेडरूम मे जाकर देखा तो बालक कनकसिह मात्र 2 वर्ष का ही था पालने मे आराम की नीद सोया था। उस बच्चे को क्या मालूम कि कौनसे दु ख के काले बादल उसकी जिदगी पर छा गये है।

अब उस नन्हे लाल का लालन पालन कौन करे ? निकटतम रिश्तेदार तो कोई थे नही दूर–दूर के रिश्तेदारो तक तो खबर ही नही पहुची, किसी के पास पहुची तो भी स्वार्थमय इस ससार मे परमार्थ का कार्य कौन करे ? विरले ही व्यक्ति होते है जो परमार्थ मे जिया करते हैं।

माता–पिता ही प्रमुख आधार होते हैं। जब आधार ही नही रहे तो आधेय टिकेगा कैसे। अगर टिके तो वह आश्चर्य ही समझना चाहिए।

कनकसिह की उम्र अभी लम्बी थी, माता–पिता का साया उठ जाने पर भी उसकी जीवन गाडी किसी तरह चलने लगी। पडोस मे एक बुढिया माजी रहती थी, जो अकेली थी, उसे उस बच्चे पर दया आई। देखा कि इस तरह तो यह कनक भी ससार से चल पडेगा। मुझको इसकी परवरिश किसी तरह करना चाहिए। वह स्वय मजदूरी करके अपना जीवन चलाती थी उसी पैसे से वह कनकसिह का पेट भी भरती थी। कभी कोई उसके लिए दूध आदि की व्यवस्था भी कर देता था।

समय बीतता गया। कनकसिह माजी की छाया मे बडा होने लगा। धीरे–धीरे वह 5 वर्ष को हो गया। माजी ने कुछ सेठ लोगो को कह कर उसके पढाई की व्यवस्था करने की ठानी। पर कौन सुने। दनिया मे दु खी की पीर सुनने वाले विरल ही मिलेगे। सभी अपने सुख के लिए हजारो रुपये खर्च कर सकते हैं पर पराये के लिए 50 पैसे भी नही।

बालक कनकसिह की पढाई की कोई व्यवस्था नही हो पा रही थी फिर भी माजी ने प्रयास नहीं छोडा। उसने एक सेठ को हाथ जोडे उसकी प्रार्थना से दयार्द्र हो सेठ ने जो हवेली खण्डर का रूप बन चुकी थी वह बेची। कुछ रुपया अपन पास रख लिये व दस हजार रुपया से कनकसिह की पढाई के लिए व्यवस्था की। कनकसिह स्कूल जाने लगा पढाई करने लगा प्रतिवर्ष वह पास होता गया व धीरे–धीरे आठवी कक्षा मे प्रविष्ट हुआ। अब तक वह 13 वर्ष का हो चुका था।

वृद्धा मा जिसने कनकसिह को जीवनदान दिया था एक दिन उसे ज्वर ने आ घेरा। कनकसिह अधिक तो समझता था नही पर फिर भी अपनी अक्ल के अनुसार पास ही रहने वाले डॉक्टर को बुला लाया। डॉक्टर ने वृद्धा की हालत देखी बुखार के कारण शरीर तवे जैसा तप रहा था थर्मामीटर (Thermometer) लगाया तो पारा 106 डिग्री पर था डॉक्टर ने तुरन्त उसे अस्पताल ले जाने को कहा। कनकसिह दौडा और आटोरिक्शा (Autonkshaw) लाया उसमे अपनी पालित मा जिसे वह अम्मा कहता था को बिठाकर हास्पिटल ले गया। डॉक्टर ने इलाज प्रारम्भ किया विविध इन्जेक्शन दवाईया दी गई जिसमे कनकसिह के पास जो लगभग 1000 रुपये की पूजी थी उसमे से 800 रुपये खर्च हो गए। रुपया खर्च भी हुआ पर बुखार ठीक नहीं हुआ। लगभग 3 दिन हो गए अब तो थर्मामीटर

(Thermometer) मे पारा ओर अधिक बढ गया। कनकसिह की अम्मा तडफने लगी उसे लगा अब ये प्राण जाने वाले हैं। कनकसिह को समीप बुलाया उसके सर पर हाथ रखते हुए बोली– बेटा ! अब मैं जा रही हू मेरे से हो सकी इतनी सेवा मैंने की, अब तुम स्वय स्वावलम्बी बनना। दुनिया बडी विचित्र है सुख के साथी सब है दु ख के कोई नहीं। मेरे प्यारे बेटे ! खुश रहना हरदम । मा की आख बेटे के चेहरे को निहार रही थी। किशोर बालक कनकसिह की आखो से आसूओ का सैलाब बह चला, वह चिल्लाया मा मा मुझे यू मझधार मे छोड जा रही हो, मा मैं तेरे बिना जी नही सकता। मा ऽ ऽऽऽ । गला रूध गया। शरीर काप उठा। और उधर वह परोपकारी मा किसी अनजान देश की यात्रा की ओर चल पडी। देह निढाल पडी रही देह का सरताज कहीं चला गया।

कनकसिह 13 वर्षीय बच्चा ही था पर जन्म–मृत्यु के बारे मे कुछ–कुछ समझने लगा था। अम्मा की निष्प्राण देह देखते ही वह घबरा उठा, आसपास पडास के 2–3 आदमी वहा आ गये थे, उन्होने उसे कुछ समझाया। बुढिया माजी का दाह सस्कार किया। कनकसिह अकेला ही रह गया। एक मात्र जो सहारा था वह भी उठ गया। जमा पूजी समाप्त हो जाने से पेट भरने की समस्या खडी हो गई। इतने दिन तो उसकी अम्मा मजदूरी करके गुजारा करती थी।

समझदार, लज्जाशील व मधुर व्यवहारी। उसे पाकर कनकसिह का जीवन कुछ आराम से बीतने लगा। फिर भी पैसो की समस्या तो ज्यो की त्यो ही थी ही। उसने एक बैंक मे नौकरी के लिए आवेदन किया। भाग्य अच्छा था 15 दिन बाद ही उसे चपरासी की नौकरी मिल गई। लेकिन वेतन बहुत कम था, मात्र 1500 रुपये मासिक, जिससे पति–पत्नी दोनो का जीवन बसर करना बहुत मुश्किल था। फिर भी सोचा कि कोई बात नही सरकारी बैंक मे नौकरी तो मिल गई धीरे–धीरे तनख्वाह बढ जाएगी। बैंक की सर्विस (Service) के अलावा समय मे कुछ दूसरा काम धधा करेगे ताकि आर्थिक तगी न रहे।



30 अप्रेल की सुबह 7 बजे थे। इमेन्युअल (Imumanual) स्कूल की प्राथमिक माध्यमिक विद्यालय की परीक्षाओ का रिजल्ट (Result) घोषित होने लगा था। इस विद्यालय मे पढने वाले पहली से आठवी तक के सभी विद्यार्थियो के मन मे आज बडी उत्सुकता थी। अपने वर्ष भर की मेहनत का प्रतिफल आज मिलने वाला था। सभी विद्यार्थी सुबह जल्दी उठे व तैयार होकर अपने विद्यालय के आगन मे पहुच गये।

हेड मास्टर साहब व सभी अन्य मास्टर जी भी वहा जल्दी ही पहुच गये थे। एक के बाद एक परीक्षा परिणाम (Result) घोषित होने लगा। पहली दूसरी तीसरी चौथी का रिजल्ट सुना दिया गया। सभी क्लासो मे प्रथम स्थान पाने वाले विद्यार्थी बालको का हेडमास्टर सा विशेष स्नेह से स्वागत कर रहे थे। उन्हे अपने हाथो से प्रशस्ति पत्र दे रहे थे। पाचवी क्लास का परीक्षा परिणाम सूची लेकर मास्टर सा खडे हुए। और बोले पाचवी कक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया है अनुराग शुक्ला सुपुत्र कनकसिह शुक्ला।

सुनते ही सारी सभा मे एक आश्चर्य सा फैल गया। अरे अनुराग ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है । एक साधारण नौकरी पेशा आदमी कनकसिह का पुत्र है यह अनुराग। जो कितना गरीब है, जिसके पास खाने–पीने की सामग्री व पढने की पुस्तके भी बराबर नही, यह फर्स्ट क्लास फर्स्ट (First Class First)। अहो गजब हुआ है।

स्वागत किया गया।

सभी विद्यार्थी अपने अपने घरो की ओर लौटने लगे। अनुराग शुक्ला जो कि पाचवी क्लास मे प्रथम आया था उसे उसके दोस्तो ने घेर लिया। बोले अनुराग ! बधाई है, आज तो मिठाई खिलानी ही पडेगी। तभी किसी ने कहा– अरे मिठाई तो रहने दे, आज तो हमे केवल केडबरीज (Cadburys) ही खिलादे, कोई बात नहीं। हा–हा, केडबरीज जरूर खिलाऊगा लो ये ! जब मे हाथ डालकर 20 रुपये का नोट निकालकर देते हुए अनुराग ने कहा। सामने खडे अभिनव ने वे रुपये लिये व तुरन्त केडबरीज चाकलेट (Cadburys Chocklate) खरीद लाया। सभी ने बडे प्रेम से एक दूसरे को खिलाई और हर्ष के साथ बाते करते हुए सारे दोस्त अपने–अपने घर की ओर बढ चले।

अनुराग भी अपना परीक्षा परिणाम लेकर अपने छोटे से घर मे पहुचा। माता–पिता उसका इन्तजार कर ही रहे थे। बेटे के घर मे आते ही उसके हाथ का परीक्षा फल कनकसिह अपने हाथ मे लेकर देखने लगे। मा कुसुमवती ने पूछा–लाल ! तू पास हो गया।

अरी पास होने का क्या पूछती है। देख अपना बेटा तो पूरी क्लास मे फर्स्ट (First) आया है। ओ हो 96% अक प्राप्त किये हैं। शाबास !

हर्ष विभोर होते हुए कनकसिह ने कहा– ये सब आपके ही आशीर्वाद का प्रतिफल हे। आपने मेरी पढाई के लिए कितनी तकलीफे झेली हैं । दिन रात परिश्रम करके आप दोनो ने मेरी पढाई का खर्च उठाया है। अनुराग पिता जी के चरणो मे झुकता हुआ बोला। हा बेटा। बात तो तेरी सही है। अगर तेरे पापा जीवन विकास के लिए साइड–बिजनेस (Side Business) छोटे–मोटे मेहनत मजदूरी के कार्य नहीं करते तो आज तुझे यह सफलता मिल पाना असभव था। कुसुमवती ने कहा।

कनकसिह बोले– इसमे क्या ? ये तो मेरा कर्त्तव्य ही था कि मेरी सतान का पूर्ण विकास करने मे सहभागी बनू। जो माता–पिता अपनी सन्तान के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन नही करते उन्हे योग्य शिक्षण प्रदान नही करते, वे सच्चे माता–पिता न होकर बालको के लिए दुश्मन हे। मैंने तेरे जन्म के साथ ही यह दृढ सकल्प कर लिया था कि चाहे जो हो मुझे जितना भी अतिरिक्त परिश्रम करना पडेगा मैं करूगा भूखे रहना पडेगा तो भूखा रहूगा अभावों मे जीना पडेगा तो जीऊगा लेकिन अपने पुत्र को बढिया से बढिया पढाई करवाऊगा। ताकि मेरे बेटे को वो दिन नहीं देखना पडे जो मैंने

बचपन से आज तक देखे हैं। मैं तो परिस्थितियो का मारा आठवी तक ही पढकर रह गया पर मेरी यह कगाली मेरे पुत्र-परिवार के लिए अभिशाप न बने। मैं दु खो मे जीऊगा, पर अपने बेटे को सुख के पालने मे झूलते देखूगा, तो मेरी सारी मेहनत सफल हो जाएगी तभी कुसुमवती ने कहा- आपके इन उन्नत विचारो ने ही अपने बेटे अनुराग व पुत्री विमा को कान्वेन्ट स्कूल (Convent School) मे इगलिश मीडियम (English Medium) की पढाई कर पाने मे सफलता प्रदान की है। अन्यथा हमारे पास है ही क्या ? मात्र बैंक की आपकी नौकरी 1500 रुपये से क्या होने वाला। उससे तो हम चार प्राणियो का पेट भर पाना भी मुश्किल है आपने कितने कष्ट सहे हैं-सुबह उठते ही घर-घर मे अखबार बाटना फिर बैंक मे सर्विस पर जाना, वहा से आते ही 2 घटे सेठ धनराज की फैक्ट्री (Factory) पर दवाईयो की पैकिग (Packing) करना लेबिल (Label) चिपकाना आदि कार्य करना। फिर शाम को कभी दूध बेचना कभी चने, सिगदाने आदि का ठेला चलाना, दिन रात आपने न अपने खाने-पीने की परवाह की न सोने व आराम करने की।

और कुसुमवती तूने भी कुछ कम नही किया। प्रतिदिन घर का सारा कार्य सभालते हुए हमेशा 5 6 घरो मे बर्तन माजने, कपडे धोने रसोई बनाने जाना। दोनो बच्चो का ध्यान रखना उन्हे पढाना। दिन भर तू भी कब आराम करती है तूने मेरी इच्छा की पूर्ति के लिए कितना सहयोग किया है ? कनकसिह बोले।

और हा हम तो अपनी ही रामायण गाने बैठ गए बेटा। इतने अच्छे नम्बर लाया है इसका मुह तो मीठा करे। और हा आज बढिया गरमा-गरम हलवा बना हम सब भी खायेगे और अपने बेटे को भी खिलाऐगे। ओर विमा कहा गई ? वह अभी तक आई ही नही ? कनकसिह ने पूछा।

कुसुमवती- हा। पडौसी वाली आटी की लडकी पूजा के साथ गार्डन (Garden) मे खेलने गई है। अभी तक आई नही उसे भी जरा आवाज लगा दो। मैं रसोई घर मे जाती हू।

पापा की आवाज सुनकर विमा तुरन्त दोड आई। उसके आते ही कनकसिह ने कहा–देख विमा तेरा भेया फस्ट डिवीजन (First Divison) पास हुआ है, यही नही सभी विद्यार्थियो मे फस्ट भी आया है। तू तो खेल रही है, देख तो सही, भेय्या के अक कितने बढिया आये हैं। तू भी अच्छे नम्बर लाएगी ना, मेरी बिटिया।

विमा जो अभी तीसरी क्लास मे ही पढ रही थी तुतलाते हुए बोली– हा पापा! मैं भी अच्छे नम्बर लाऊगी फिर आप मेरे लिए एक नई साइकिल लाएगे ना।

हा जरूर जरूर तू फस्ट आएगी तो मैं तेरे लिए नई साइकिल और खिलौने भी लाऊगा।

पिता पुत्री के बीच ऐसी बाते चल रही थी कि तभी रसोई घर से कुसुमवती ने आवाज दी–अजी! हलवा बन गया है, जल्दी आइये! मैंने प्लेटे तेयार कर दी है।

पिता, पुत्र मा व बेटी चारो ही बडे प्रेम से स्वादिष्ट हलवा खा रहे थे और अपनी प्रसन्नता बढा रहे थे। अनुराग व विमा बडे खुश थे तो उससे भी अधिक खुशी कुसुमवती और कनकसिह को थी क्योकि इस प्रसग से उन्हे अपने भावी के लिए सजोये सपने साकार होते नजर आ रहे थे।



इमेन्युअल स्कूल की छट्टी कक्षा का छात्र अनुराग अपने हम उम्र के अन्य सभी छात्रो से अधिक प्रतिभा सपन्न छात्र था, वह अपने दोस्तो के साथ हर प्रकार की प्रतिस्पर्धा चाहे वह खेल कूद हो, भाषण हो, गायन हो, नेतृत्व कला हो, आगे रहता था। हर प्रतिस्पर्धा मे इनाम जीतने वाला यह बालक एक प्रतिस्पर्धा मे सदैव पिछड जाया करता था। वह क्या ? वह प्रतिस्पर्धा थी वैभव प्रदर्शन की।

कान्वेट (Convent) स्कूल मे चूकि अधिकाश छात्र बडे–बडे धनाढ्य सेठो डॉक्टरो, वकीलो के पुत्र थे जिनके पास धन सपदा की कोई कमी नही थी। प्रतिदिन ही उन्हे जेब खर्च के लिए 10–15 रुपये अपने मम्मी डैडी से मिला करते थे। जिनसे वे प्रतिदिन स्कूल मे मौज मस्ती किया करते। अनुराग के दोस्त भी कुछ इसी तरह के थे। किसी के पिता मिल–मालिक थे तो किसी के हीरा व्यवसायी। कोई कार एजेन्सी (Car Agency) के मालिक का सुपुत्र था तो कोई प्लास्टिक फैक्ट्री (Plastic Factory) के स्वामी का इकलौता लाल। जो कि जब–जब नये वस्त्र पहनकर आते व अपना बडप्पन जताते थे। ये रईसजादे पैसे की दौड मे अनुराग से बहुत आगे थे, और सदा ही अनुराग को चिढाया करते थे।

एक दिन इन्टरवेल का समय चल रहा था। सभी छात्र अपने–अपने टिफिन लेकर स्कूल गार्डन मे नाश्ता करने जाने लगे। अनुराग के दोस्तो ने देखा अनुराग अभी तक चुपचाप बैठा है, नाश्ता करने नहीं चल रहा है तो उन्होने उससे कहा–चलो अनुराग ! ऐसे चुपचाप क्यो बैठा है ?

अनुराग– नहीं ! तुम जाओ ! मैं थोडी देर बाद खाऊगा। दोस्त पकज– क्यो ? बाद मे क्या है ? चलो–चलो हमारे साथ ही तुम्हे भी खाना पडेगा।

अनुराग– अच्छा ! तुम कहते हो तो चले चलता हू। और उसने अपना टिफिन उठाया व उनके साथ–साथ गार्डन मे पहुच गया।

आम के वृक्ष की शीतल छाया मे बैठ कर सबने अपने लच बाक्स खोले। लच बाक्स खोलते ही पारस बोला आज तो मेरी मम्मी ने नाश्ते मे इडली साभर भेजा है। देखो ना कितना स्वादिष्ट है ? अरे ! मेरे टिफिन मे तो आज रसगुल्ले व कचौरी है। तेरी इडली तो मुझे नहीं भाती रसगुल्ले

खाओगे तो खाते ही रह जाओगे। कमल ने कहा– ये इडली ओर रसगुल्ले–कचौरी तो रोज दिन ही खाते रहते हैं, मेरे बाक्स म तो आज काजू की कतली और मेवे का मिक्चर आया हे जयेश ने बीच मे ही अपना बडप्पन जताया। और मेरे टिफिन मे तो देखो ना मेरी बहिन ने एक नई वैरायटी (Vanety) भेजी है, जो तुम लोगो ने कभी नही खाई होगी ये देखो । राजीव ने कहा ओर साथ मे सेब केले, अगूल आदि का फ्रूट सलाद (Fruit Salad) और अनुराग तुम्हारे बाक्स मे क्या है ? जरा दिखाओ तो सही। कमल ने उसका टिफिन छीनकर खोलते हुए कहा– वाह–वाह क्या सुन्दर चीजे भरी है इसकी मम्मी ने। पराठे भी नहीं, कल की बासी रोटी भरकर भेजी है, और इस सुखी रोटी को खाएगा भी किससे ? सब्जी तो दूर रही अचार का भी पता नहीं। पकज उचकते हुए बोले ! अरे ये कोने मे नमक मिर्च पडा है इसी से खा लेगा ये ठडे टुकडे और तो क्या खाएगा ये बेचारा ? इसके किस्मत मे ये ही लिखे हैं। जयेश ने कहा।

अनुराग चुपचाप बैठा सबकी बाते सुन रहा था। धनिक मित्रो के व्यग भी सह रहा था।

अरे ! तुम सब इस बिचारे के पीछे ही क्यो पडे हो ? ये एक ही तो गरीब बाप का बेटा हे, क्या हो गया यदि तुम अपने टिफिन मे से थोडा–थोडा इसे भी दे दो तो ! राजीव ने झूठी शेखी बघारते हुए कहा।

नहीं ! मुझे कुछ नही चाहिए। मैं मेरे टिफिन मे जो कुछ है वही खा लूगा। मेरी मा ने मेरे लिए जो कुछ भेजा हे वह तुम्हारी मिठाइया से भी बढकर हैं अनुराग ने स्पष्ट कह डाला।

लो ! ये तो नाराज हो गया ! नही नहीं अनुराग ! हम सब दोस्त है दोस्त की इन मजाकिया बातो मे नाराज नही होना चाहिए। लो आओ हम सब एक साथ मिल बाट कर खाएगे। कमल ने अनुराग को मनाते हुए कहा।

अनुराग– मैं कोई नाराज थोड ही हुआ हू। मैंने तो अपने मन के विचार तुम्हे कह दिये।

जो कुछ भी हो अनुराग– तुम्हे हमारे साथ मिलकर खाना ही होगा। लो जरा मुह खोलो ये मीठा रसगुल्ला ऽ ऽ ! जरा मजे से खाओ तो सही। कहते हुए कमल ने एक रसगुल्ला जबर्दस्ती अनुराग के मुँह मे ठूस दिया।

अनुराग ने रसगुल्ला खाया। सभी दोस्तो ने अपनी–अपनी वस्तुए मिल बाटकर खाई।

इधर इन्टरवेल (Interval) का समय पूरा होते ही घटी बज उठी सभी छात्र अपना कार्य जल्दी–जल्दी पूरा करके कक्षा मे पहुच गये। अनुराग भी अपनी पढाई मे लगा। पढाई वह मनोयोग पूर्वक किया करता था। जो भी टीचर्स (Teachers) होमवर्क (Homework) देते वह शीघ्र ही पूरा करने के बाद ही सोता था। जब कि उसके वे धनाढ्य दोस्त जब तब मटरगस्ती मे ही लगे रहते थे। उनका होमवर्क (Homework) कभी भी पूरा नही होता था। स्कूल के खाली पीरियड (Penod) मे भी वे लोग कोई न कोई शरारत किया करते थे। स्कूल आने के बाद भी उनका लक्ष्य पढाई नही, मौज मस्ती ज्यादा रहता था। व्यवस्थित अध्ययन न होने से वे जब तब अध्यापको की डाट फटकार व दण्ड के पात्र बनते थे। यही कारण था कि ये सब, क्लास मे सदैव पिछडे रहते थे। और अनुराग सबसे आगे। वह जानता था कि मेरे मम्मी–पापा किस तरह तकलीफे झेलकर मुझे इस स्कूल मे भेज रहे हैं। वे स्वय भूखे रह जाते हैं पर मुझे व मेरी बहिन विभा को उन्होने कभी भूखे नही सुलाया। वे खुद फटे पुराने कपडे पहनकर ही अपना तन ढक लेते हैं वे हमारे लिए अच्छी से अच्छी ड्रेस (Dress) लाने की कोशिश मे रहते हैं। अनुराग की उम्र अभी अधिक नही मात्र 14 वर्ष की थी। लेकिन अपने घर की स्थिति व माता–पिता के कष्ट को बखूबी समझने लगा था। वह चाहता था कि मैं अपने मम्मी–पापा के अरमानो को पूरा करू व इसके लिए परिपूर्ण अध्ययन होना आवश्यक है अपने इन अमीर दोस्तो के साथ अगर मैं भी मस्तिया मारने लगा तो फिर । यही कारण था कि इस प्रकार के रईसी सर्किल (Circle) मे रहकर भी वह अपने आप मे सादगी पूर्ण ढग से जीता था। और वे उनके दोस्त ऐसे थे कि अनुराग के गरीब होने पर भी उससे वे हर सभव तरीके से मित्रता कायम रखते थे क्योकि अनुराग पढाई आदि हर कार्य मे आगे था और उसी के सहारे से वे भी कुछ–कुछ अध्ययन करके परीक्षा मे पासिंग मार्क (Passing Mark) पा लेते थे। अनुराग से सहयोग पाते हुए भी वे जब कभी मौका मिलता तो उसे चिढाने मे उसकी गरीबी हालत पर व्यग कस कर उसका अपमान करने मे नही चूकते थे। फिर भी अनुराग सदैव उनसे मिलकर रहता व उनका भला ही किया करता था। पढाई चल रही थी, और मित्रता भी आगे बढती जा रही थी। एक के बाद एक क्लास मे सफलता हासिल करते हुए ये सभी साथी 12वीं क्लास मे पहुच गए।



कमल– क्यो रे अनुराग ! आज इतनी लेट क्यो आया है ? आज तो पिकनिक (Picnic) का प्रोग्राम रखा गया है। हम सब तो सुबह 7 बजे से यहा आ गये हैं ओर तू है कि 9 बजे तक भी उपस्थित नही है।

अनुराग– क्या करू यार ! आज आना तो जल्दी ही था। लेकिन अपनी ड्रेस (Dress) तेयार करने मे लेट हो गया। ड्रेस (Dress) गदी पडी थी, गदी ड्रेस (Dress) पहनकर कैसे आता ? और आज नल भी 1 घटा देरी से आया। पानी के अभाव मे मेरे शर्ट, पेन्ट कैसे धोये जा सकते थे। नल आने पर मेरी मा ने जल्दी से मेरे कपडे धोये सुखाये वह मैं पहनकर सीधे आ ही रहा हू।

कमल– ओ हो अनुराग। तो क्या तुम्हारे पास स्कूल यूनिफार्म (Uniform) के अलावा ओर अन्य ड्रेसे नही है। अहा ! आज ही मालूम पडा। इसीलिए तुम विदाउट (Without) यूनिफार्म के दिन हमेशा यही वाला शर्ट पैंट पहनकर आते हो।

पारस– ओर दखना। कमल ! ये नीला शर्ट–पेंट भी कितना पुराना हो गया है। फटने भी लगा है। वाह रे ! वाह रे भीख मगे तू एेसे कपडे पहनता है।

राजेश– डीयर (Dear) पारस ! तुम इस प्रकार अपने दोस्त अनुराग को अपशब्द क्या बोलते हो ? इसका बाप बेचारा गरीब है बैंक मे सामान्य पोस्ट (Post) पर कार्यरत है। वह कहा से नई–नई ड्रेस लाएगा ? वह तो इसे अच्छी स्कूल में पढने भेज रहा है, वही बहुत है।

राजीव– अरे ! तुम सब भी बडे अजीब लडके हो। जब भी देखो प्यारे दोस्त अनुराग के कपडो की ही नोक–झोक करने लगते हो। वाच (Watch) मे देखो टाइम (Time) क्या हुआ है ? 2½ बजे रहे हैं और इस तरह नोक–झोक करते हुए तो तुम दोपहर कर दोगे और चलो गार्डन (Garden) के बजाय पिकनिक (Picnic) इस स्कूल के अहाते मे ही हो जाएगी।

कमल–हा राजीव ! तुम्हारी बात एकदम ठीक है। अपन लोग व्यर्थ ही इस तू–तू मैं–मैं में लग गए। वस्तुत अच्छे कपडे पहनने मात्र से क्या ? बाहरी टीपटाप से नहीं अपितु आन्तरिक सौन्दर्य से ही व्यक्ति की पूजा होती है।

अनुराग– यस कमल ! मैं भी यही सोचता हू। बाहर के बजाय भीतरी सुन्दरता को बढाये। क्रान्तिकारी, सर्वजन हितकारी नये–नये विचारो के परिधान हम अपने अर्न्तजीवन मे धारण करे, यही श्रेयस्कर है।

पारस–अच्छा बाबा ! हो गई अब तुम्हारी आदर्शमय बाते। बहुत सुन्दर हैं तुम्हारे विचार। अब तो आगे बढो, कोई आटोरिक्शा पकडते हैं, और तो सारी तैयारी है ही । है ना राजीव।

राजेश– तो चलो ।

सभी दोस्त अपने स्कूल के अहाते से रवाना हो गये। दो ऑटोरिक्शा मे बैठकर सभी चबल गार्डन मे पहुचे। इधर–उधर घूमते हुए बगीचे की सुन्दरता का अवलोकन करने लगे। बगीचे मे कही गुलाब, कही चमेली, कही केवडे के फूल खिल रहे थे। लक्ष्मण झूला भी बधा था। पास ही कलकल सा निनाद करती चबल नदी भी उद्यान की शोभा बढा रही थी। पाचो दोस्त इधर–उधर घूमते जा रहे थे तभी उन्हे एक भयकर चीख सुनाई पडी। एकदम चौंककर पीछे देखा तो उनका ही दोस्त पारस अपने पैर को पकडकर जोर–जोर से चिल्ला रहा था। उसके समीप से ही एक काला लम्बा सर्प जाते हुए सभी ने देखा। सभी को समझते देर न लगी कि इसी ने पारस को काटा है। सब दौडे। कोई पारस के पैर को पकडने लगा तो कोई पत्थर उठाकर साप की तरफ फैंकने लगा।

तभी अनुराग ने कहा–अरे कमल। तुम उस साप को जाने दो उसे मार डालने से तुम्हे मिलने वाला भी क्या है ? तुम तो इधर आओ, लो पारस का पैर पकडकर अपने टावल से कसकर बाध दो।

अनुराग के कहे अनुसार वह टावेल को लाया और पैर पर बाधने लगा। अनुराग ने देखा–साप ने जोरदार काटा है, बडी तेजी से जहर फैल सकता है। और ये क्या ? पारस की हालत तो एकदम खराब होती जा रही है। अगर तुरत जहर नही उतारा गया तो खतरा है।

राजीव ने कहा– इसका जहर इसी समय उतारना जरूरी लग रहा है पर उतारे कैसे ? कोई उतारने वाला दिख ही नहीं रहा है।

कमल– और किसी को बुलाने की क्या जरूरत है ? कहते हैं ना, कि मुह से चूस–चूस कर थूके तो भी जहर उतर जाता है।

ज्येश– तो कमल तुम ही चूसोना जहर ?

कमल– हा, मैं चूस तो लूगा, पर यह जहर मेरे गले से भी नीचे उतर गया तो ? मैं मर न जाऊगा ?

जयेश– तो तुम्हे अपने मरने का खतरा इस कार्य से रोक रहा है अपने दोस्त के बजाय अपने प्राणों का मोह अधिक है। कमल कुछ नही बोल पा रहा था, अन्य मित्र भी एक दूसरे का मुह ताक रहे थे, खतरा कोन मोल ले ? फिर खतरा भी छोटा मोटा नहीं प्राणो की बाजी ।

अनुराग ने देखा– यह समय सोच–विचार करने का नहीं कुछ कर गुजरने का हे। अगर इस समय खतरे से डरा तो मेरा दोस्त अभी–अभी परलोकगामी हो जायगा। तुरन्त अपना मुह पारस के अगूठे से लगा जहर चूसता जा रहा था और थूकता जा रहा था। 10–15 बार ऐसा करने से जहर सारा बाहर आ गया, पारस की तबियत स्वस्थ होने लगी। धीरे–धीरे वह अपनी सामान्य स्थिति मे आ गया। उसे स्वस्थ देख सभी प्रसन्न हो गए। खुशी से उछलने लगे। पारस ने कहा– आज तो अनुराग ने मेरी जान बचाली नहीं तो में तो मरा ही समझो।

अनुराग– वो तो कुछ नहीं। पर पारस। तुम ये तो बताओ तुम क्या कर रहे थे, जो अचानक सर्प ने तुम्हे काटा ? क्या तुम्हे पहले सर्प नही दिखा था ?

पारस– अरे अनुराग ! वह सर्प मुझे पहले ही दिख गया था। वह तो इस पास वाली झाडी म चुपचाप पडा था मैंने सोचा कि यह जिदा है या मरा हुआ ? इसका परीक्षण करने के लिए यह छोटा सा पत्थर लेकर उस पर मारा था, मारते ही वह उछल कर मेरे पेर पर काट गया।

अनुराग– ओ हो ! तो गल्ती तुम्हारी ही हुई। जेसा करोगे वैसा भरोगे तुम्हीं ने उसे छेडा मगर तुम्हारा यह कुतूहल आज तम्हारी जान ही ले लेता। पारस जो अभी भी भयभीत था बोला– हा अनुराग ! आज मैंने गल्ती की आज तो तुमने मुझे बचा लिया अनुराग मे तुम्हे कभी नही भूल सकता । कहते हुए पारस का गला भर आया उसकी आखो मे आसू आ गए।

नही पारस ! मैंने तो कुछ विशेष नही किया यह तो मेरा कर्तव्य था अपने साथी को अपनी आखो के सामने मरते हुए मै कैसे देख सकता हू।

खैर ! चलो अब हम सब यहा से रवाना होते है। देर भी बहुत हो चुकी है।

और हा अब अपनी पिकनिक समाप्त। एक बार किसी अच्छे डॉक्टर के पास जाकर तुम्हे दिखाना भी है। जहर का कोई थोडा बहुत अश शरीर मे नही रह गया हो।

हा हा ! यह बात एकदम ठीक है। चलो हम सब अब रवाना होते हैं। डा जैन की डिस्पेन्सरी (Dispensary) यहा नजदीक मे ही है। सभी साथी शीघ्र रवाना हुए और डिस्पेन्सरी (Dispensary) पहुच गए।

डॉक्टर जैन वहा बैठे थे ही। सारी स्थिति जानकर उन्होने पारस का चैकअप किया। वह एकदम स्वस्थ था। डॉक्टर को आश्चर्य हो रहा था कि इतना जहर चढने पर भी उसका उस पर कुछ असर नहीं था। अनुराग की चूसकर जहर उतारने की कला पर सभी को सुखद अनुभूति हुई। सभी रवाना होने लगे। तो जयेश ने कहा– अरे जाने से पहले अनुराग का भी तो चैकअप करवा लो। इसने भी तो मुह से जहर चूसा है कहीं थोडा बहुत अश अन्दर पहुच गया हो तो।

नही–नहीं मैं एकदम स्वस्थ हू, परीक्षण की जरूरत नहीं। अनुराग बोला। नही तुम्हे भी चैकअप तो करवाना ही पडेगा कहते हुए कमल ने जबर्दस्ती उसे डॉक्टर के पास ले जाकर खडा कर दिया।

डॉक्टर सा ने देखा और बोले– वैसे तो अनुराग आप स्वस्थ हैं फिर भी गले के नीचे नली मे जहर का कोई थोडा–थोडा असर है। मैं आपको ये टेबलेट (Tablet) देता हू। एक अभी, एक दोपहर, एक शाम होने से पूर्व ले लेना बस एकदम सब ठीक हो जाएगा।

अनुराग ने टेबलेटस (Tablets) ली व अपने साथियो के साथ रवाना हो गया। सभी अपने–अपने घर की ओर बढ चले। सभी के मन मे अलग–अलग विचार थे। अनुराग अपना कर्त्तव्य पूरा करने के सात्विक हर्ष से विभोर था तो पारस अपने साथ घटित हुई घटना से, मौत को सामने देखकर उससे बच निकलने से हर्षित था तो साथ ही अनुराग द्वारा कृत उपकार के प्रति बार–बार आभारी हो रहा था। मन ही मन कुछ–कुछ सोचता ही चला जा रहा था। अन्य सभी अपनी दोस्ती की परीक्षा मे प्राप्त अनुतीर्णता पर खेद खिन्न थे फिर भी सतुष्ट थे, किसी तरह होने वाले अघटित से हम बच गए।



सर्दी का मौसम। कालेज के क्रीडा प्रागण मे बैठे 5–7 नवयुवक मस्ती मार रहे थे। स्कूल के कडे अनुशासनमय जीवन को पार कर ये सब अब स्वतत्र जीवन को पाकर के बडे प्रसन्न थे। 12वीं तक स्कूल की पढाई मे हर पीरियड (Period) अटैंड (Attend) करना अनिवार्य था पर कॉलेज लाईफ मे ऐसा कोई बधन नहीं था। अत ये सभी छात्र चलते पीरियड मे उठकर क्रीडाप्रागण मे आ बैठे थे। आजकल इन सबके दिमाग कुछ फिरे हुए थे। अनुशासन रहित जीवन इन लोगो को बुराईयो के गर्त मे ढकेल रहा था। धीरे–धीरे इन सब की उच्छृखलता बढती जा रही थी। मन ने चाहा तो पढाई का पीरियड अटैण्ड (Period Attend) करना नही तो बाहर घूमना कभी होटल मे गये तो कभी सिनेमा हाल मे। कोई पूछने वाला नही था इन सबको। इनके उन अमीर मा–बापो को तो अपने रईसजादो को यह भी पूछने की फूर्सत नही थी कि तुम कॉलेज गए या नही ? शायद उन रईस पैरेन्टस को यह भी पता नही, उनके सपूत कौनसी क्लास मे पढ रहे हैं। उन्हे तो अपने व्यापार धधे से एक मिनिट भी फुर्सत नही मिल पाती थी।

ऐसी निरकुश स्थिति म ये सभी छात्र जो कि प्रतिभा सम्पन्न छात्र अनुराग के आज से नही बचपन से ही मित्र थे अपने यौवन की मस्ती म उन्मत हो रहे थे। पूरे कॉलेज टाईम (Time) मे ये आवारागिर्दी किया करते थे। कभी मौका हाथ लगते ही किसी शरीफ लडकी को छेडने से भी नही चूकते थे। अनुराग को अपने दोस्तो की ये आदत पसद नहीं थी। पर वह उनके साथ चली आ रही मित्रता को तोड नही पा रहा था। और वह उनसे ठीक–ठीक व्यवहार रख रहा था। उसके वे दोस्त उसके साथ म व्यवहार किसी भी तरह तोडना नहीं चाहते थे। क्योकि अनुराग प्रतिभा सम्पन्न बुद्धिमान व होशियार छात्र था बचपन स लेकर अब तक वह प्रतिवर्ष कक्षा मे फस्ट रेंक (First Rank) ही प्राप्त कर रहा था। उसके हर विचार से हर प्रकृति स क्लास टीचर ही नही स्वय प्रिंसिपल महोदय भी बडे प्रभावित रहते थ। अनुराग मे अन्य पर नेतृत्व करन का गुण भी बडा प्रशसनीय था। जिससे हर छात्र पर उसकी धाक जम गई थी। सभी अनुराग से अनुराग करते थे। कुल मिलाकर पूरे विद्यार्थी परिसर म प्रारम्भ से ही उसकी बडी प्रतिष्ठा जम चुकी थी। ऐसे सर्वगुण सम्पन्न अपने दोस्त अनुराग को उसके मित्र कैसे छोड

सकते थे। उसके साथ रहने से उनकी प्रतिष्ठा भी जमी रहती थी क्योकि सभी जानते थे कि ये अनुराग के बचपन के साथी हैं। अनुराग के प्रति मित्रता होने से इन सभी दोस्तो की उच्छृखलता भी छिपी रहती थी, इनकी बुराईयो पर पर्दा डाला रहता था। कोई उन पर जल्दी से अगुली नही उठा पाता था और यह भी एक कारण था कि ये चारो दोस्त जिन्दगी के लक्ष्य से दूर भटकते जा रहे थे। वैश्यागमन व सुरापान करने का शौक भी अब इन्हे लगने लगा था। अनुराग को भी वे अपने अनुरूप ढाल लेना चाहते थे। लेकिन वे जानते थे अनुराग जल्दी से हमारी पकड मे आने वाला नही है। फिर भी उसे कैचअप (Catch up) तो करना ही है। रुपये पैसे की तो उनके पास कोई कमी थी नही । प्रतिदिन 100–120 रुपये का तो ये लोग यू ही धुआ कर देते थे। जबकि अनुराग को डैली (Daily) खर्च के लिए 5–7 रुपये भी कभी मिलते कभी नही। फिर भी अनुराग मितव्ययी स्वभाव के कारण बडी प्रसन्नता के साथ अपनी कॉलेज लाईफ (Life) व्यतीत कर रहा था।

अरे ए अनुराग ! कालेज से छूटते ही तू इतनी जल्दी कहा भाग रहा है ? अपने हाथो मे डायरी व एक पुस्तक लिए पारस ने जाते हुए अनुराग को रोककर पूछा।

भाग तो नहीं रहा हू पर हा छुट्टी हो गई है तो अब घर जाना ही है, मम्मी इन्तजार कर रही होगी। अनुराग ने जल्दी से उत्तर दिया।

मम्मी इन्तजार कर रही होगी ये तो ठीक है,पर जरा 2–4 मिनिट रुक गया तो क्या हो जाएगा ? हम भी तो तेरे दोस्त हैं इस तरह जब देखो तब तू अकेला ही क्यो भागता है। घर तो वही का वही है, तेरे को छोडकर कही भागेगा नही। तू थोडी देर तो हमारे साथ ही रहा कर। पूरे दिन कॉलेज मे भी तू एक पीरियड मिस नही करता जिससे कि एकाध पीरियड (Period) अपन थोडा मनोविनोद कर सके। पारस ने अपनी बात कही तब तक जयेश, कमल राजीव अमिताभ आदि भी उसके पास आकर खडे हो गए।

जयेश ने कहा– हा अनुराग, आज तो तुम्हे हमारे साथ होटल मे चलना पडेगा। साधना होटल अभी नई–नई खुली है। आज वहीं चलेगे। आज तो चलेगे ही सही। राजीव ने भी समर्थन दिया पर मैं आज नही चल सकता फिर कभी । अनुराग ने उन्हे टालते हुए कहा।

'पर क्यो' ऐसा नही हो सकता ? आखिर तुम हमेशा हमे टालते क्यो हो ? सभी एक साथ बोले।

अनुराग– नहीं टालने जैसी तो कोई बात नही ।

जयेश– टाल तो रहे हो फिर कहते हो टालने जैसी कोई बात नहीं। तो चले चलो ना यार। किस बात के ये नखरे हैं।

राजीव– अरे इसकी जेब खाली होगी। कही मेरे को सब बिल चुकाना नहीं पड जाए इसलिए ये नहीं आ रहा होगा ? अनुराग कुछ बोला नही।

कमल– तेरी जेब खाली है तो क्या हुआ ? हम हैं जो तेरे दोस्त। सब बिल पेमेन्ट (Payment) करेगे। अरे ! हमारे जैसे दोस्त के होते हुए तुम चिन्ता क्यो करते हो ? देखोना आज घर से पापा को बिना बताए ही ये 500 रुपया उठा लाया हू। आखिर ये रुपये किस काम आएगे।

अनुराग– इस तरह मम्मी–पापा के बिना दिये या उन्हे बिना कहे रुपया उठा लाना तो चोरी है। कमल ! ये एकदम गल्त बात है।

कमल– अपने मा–बाप का ही तो पैसा हे। कोई दूसरे का तो हे नही जो पूछने की जरूरत पडे।

अनुराग–अपने मा–बाप का धन है तो क्या हुआ ? हम उन्हे पैसा कमाकर दे या उनका पेसा ले ? ओर ले भी तो बिना पूछे ? इस तरह तो तुम्हारे मम्मी–पापा का विश्वास तुम पर से उठ जाएगा।

कमल– अनुराग ! इससे क्या विश्वास उठ जाएगा ? अपना धन आप ही मालिक। मेरे बाप का में ही तो इकलोता बेटा हू। आज खर्च करू तो भी सब धन मेरा हैं और कल करू तो भी मेरा। फिर सोच काहे का।

भले वह सब पैसा तुम्हारा ही हो पर अभी उसके मालिक तुम नहीं तुम्हारे पिता जी हें बिना पूछे रुपये उठा लाना तो सरासर चोरी है। तुम चाहे कुछ भी कहो। कहते हुए अनुराग के स्वर मे थोड़ी तेजी आ गई।

कमल–अच्छा बाबा ! इतने नाराज क्यो होते हो ? शाम को पापा घर आयेगे तो उन्हे बता दूगा कि 500 रुपये ले गया था। फिर तो कोई चोरी नही होगी। चलो अब तो चलने को तैयार हो हमारे साथ ।

हां अनुराग ! बहुत देर हो चुकी है। तुम्हारी इस [illegible] में। अब चले चलो हमारे साथ । कहते हुए उसने अनुराग का हाथ खींचा और आगे बढ गया। सारे दोस्त भी उसके साथ हो लिये। अनुराग को [illegible] भी उनके साथ होना पडा। [illegible] की [illegible] तो [illegible] सिटी (City) से बाहर [illegible] होटल (Hotel) [illegible] है [illegible] पर हम

सबको चलना है। फाइव स्टार (Five Star) होटल से भी वह होटल कुछ अन्य विशेषता लिए हुए है। अत्याधुनिक सुविधाओ से इसे सजाया गया बताते हैं। उसकी हर वस्तु अपने आप मे आकर्षक बताई जाती है। वेजिटेरियन, (Vegetarian) नान वेजिटेरियन (Non-Vegetarian) की भी सुविधा है। अन्दर क्या हो रहा है, इसकी बाहर कहीं कोई हवा भी नही लग सकती। सुरक्षा एव गोपनीयता की भी पूरी व्यवस्था है।

अनुराग को ये कुछ भी पता नहीं था। वह तो दोस्तो के साथ जिधर ढकेला गया उधर ही बढ गया। आगे कुछ दूरी पर जाने के बाद कमल ने एक टैक्सी (Taxi) ली, वे सब शीघ्र ही उसमे बैठकर साधना होटल मे पहुच गए। अनुराग ने वह होटल बाहर से देखी और बोला–ये तो कोई नई होटल खुली लगती है मैं तो इधर पहली बार ही आया हू।

जयेश– हा नई होटल खुली है, कल ही उसका उद्घाटन हुआ है। हमारा इरादा तो कल ही यहा आने का था, पर तुम कॉलेज से बहुत जल्दी रवाना हो गए, कॉलेज से निकलते ही हमने तुम्हे देखा पर तुम कही नजर न आए मानो पछी की तरह कही उड गये थे।

अनुराग– हा कल घर पर जरूरी काम था। मम्मी ने रसोई घर की कुछ खाद्य सामग्री बाजार से खरीदकर जल्दी ही मगवाई थी, अत मैं फटाफट चला गया था।

राजीव कोई बात नहीं। कल नही तो आज ही सही। आज भी तुम्हे हम जबर्दस्ती लाए हैं, अब हम जो भी कहे वह खा–पी लेना, मना मत करना।

पारस–हा अनुराग, राजीव की बात बिल्कुल सही है। तुम भी आज कल लडकियो की तरह क्या नाज नखरे दिखाने लग गये हो।

कमल–नखरे की क्या बात। अनुराग ठहरा गरीब बाप का बेटा इसे सकोच बहुत आता है।

'गरीब बाप का बेटा' प्रतिदिन ये शब्द सुनकर अनुराग बडा परेशान हो गया था। उसे ये शब्द बडे अपमान जनक लगते थे। उसके हृदय को तीर की तरह बीध देते थे। फिर भी वह कुछ बोलता न था। बस सोचा करता था– ये दुनिया भी कैसी है ? दुनिया की नजर मे दौलत ही सब कुछ है, व्यक्ति का ईमान कुछ नही है। जब कि मेरे पिता गरीब जरूर हैं पर नैतिकता व ईमानदारी के ऐश्वर्य से भरे पूरे हैं, जिसकी मेरे दोस्तो के करोडपति बाप रतिभर भी बराबरी नहीं कर सकते। पर यह सब अवगति इन्हें कराये

कौन ? दिल के हर विचार को सुनने के लिए योग्य पात्र चाहिए। अयोग्य पात्र मे डाला हुआ बढिया दूध चद मिनटो मे खराब हो जाता है।

सभी दोस्त बात करते–करते होटल के अन्दर पहुच चुके थे। होटल नई थी, सभी सुविधाओ से परिपूर्ण थी। हर तरह की व्यवस्था उसमे बडे आकर्षण तरीके से की गई थी। उसमें पहुचने पर सभी को लग रहा था, यह कोई होटल नही अपितु किसी बडे सेठ की सजी सजाई कोठी है।

एक आकर्षण डायनिग टेबल (Dyeing Table) पर सभी साथी जा बैठे। जाते ही बेरे ने सभी के लिए सुन्दर सी ट्रे मे ग्लासो मे पानी भर कर ला रखा। फिर बोला– क्या लाऊ साहब ! आप सबके लिए। कमल ने तुरन्त आर्डर (Order) दिया– हम पाच व्यक्तियो के लिए सबसे पहले आइसक्रीम ले आओ।

बेरा तुरन्त ही बढिया नक्काशीदार प्यालो मे आइसक्रीम ले आया। आइसक्रीम खाने के बाद कमल ने पूछा– और क्या खाओगे ?

राजीव– में तो आज चाइनीज खाऊगा। अनुराग तुम ?

अनुराग– मुझे तो अब कुछ खाना नही है तुम न मानो तो निम्बू की शिकजी भले पी लूगा।

जयेश– यार। नई होटल मे आये हैं तो आज तो कोई नई चीज खायेगे, ये शिकजी तो घर पर ही बहुत हे।

कमल– तो मगा लू चाइनीच व चाकलेट (Chocklete) केक।

राजीव– हा साथ मे कुछ ठण्डा पीने का हो तो वह भी चलेगा।

पारस– अरे ! तुम सब तो होटल के इस पहले हाल मे ही टिक गए। यही से खा पीकर रवाना हो जाओगे या दूसरे कमरे भी देखोगे। आगे के रूम मे जाकर देखो तो सही। वहा की सजावट कैसी है ?

कमल– हा पारस ! तुम्हारी बात एकदम सही है। चलो उठते हैं। यहा से दूसरे रूम मे चलते हैं। चलो उठो सब स्टैण्डअप (Stand-up) सभी को यह सुझाव पसद आया व एक साथ सभी उठ खडे हुए। आगे बढ गए। दो–तीन कमरे देखे। उनमे की गइ पेंटिग रग की इन्द्र धनुषी घटाए देखकर सभी दग–दग हो रहे थे। हर कमरे मे अलग–अलग रगो के सुन्दर पर्दे लगे व उन पर सुन्दर नक्काशी की गइ थी। गद्दे तकियो पर की गई कशीदाकारी तो आश्चर्य जनक ही थी। सभी कमरो को पार करने के बाद 5–7 सीढिया

सामने दिखाई दी। जिनसे नीचे उतरकर वे एक शानदार हॉल मे पहुच गये। यह हाल बडा शानदार सजा हुआ था। गद्दे तकिये सोफा सेट, आराम कुर्सिया डाईनिग टेबल (Dining Table) आदि सभी की घटाए अपने आप मे निराली थी। उस हाल मे 2–3 व्यक्ति थे जो वहा के कर्मचारी थे, बाकी तो पूरा हॉल खाली था। पाचो दोस्तो ने उस हाल मे जैसे ही प्रवेश किया। वैसे ही सामने खडे व्यक्ति ने उनका स्वागत करते हुए कहा– आइये–आइये पधारिये।

कमल–आपकी इस नई होटल की साज सज्जा देखते हम यहा तक आ गये हैं देखकर हम बडे दग हैं, गजब का डेकोरेशन (Decoration) किया है।

आप केवल देखने ही आये हैं या कुछ पीयेगे भी। अपने पास ही पडी बोतल की ओर ईशारा करते हुए उस होटल के कर्मचारी ने कहा– आगे वह फिर बोला–यहा आप लोग आये भी हैं और बिना पीये जायेगे तो फिर मजा अधूरा ही रहेगा ज्यादा नहीं तो आधा–आधा जाम ही सही।

अच्छा–अच्छा ठीक है। आज थोडी–थोडी तो । कहते हुए कमल ने अनुराग की ओर मुस्कराते हुए देखा।

अनुराग ने तुरन्त सिर हिलाते हुए कहा– नहीं यार। कमल ये मेरे से नही होगा। मेरी मम्मी–पापा ने प्रारभ से ही कसम दिला रखी है कि मैं कभी भी मास मदिरा अडे नहीं खाऊगा।

अच्छा कोई बात नहीं, तुम नहीं पीओगे। थोडी सी देर रुको तो सही। हम थोडी–थोडी लेकर अभी चलते हैं। कहते हुए कमल ने अनुराग का हाथ पकडा और पास पडी आराम कुर्सी पर जा बैठा। तीनो दोस्त भी उनके साथ–साथ वही आ बैठे।

तुरन्त बोतले खुली व आधी–आधी ग्लास भर कर उन सबके सामने आ गई। कमल–राजीव, पारस व जयेश ने एक एक ग्लास उठाली। हालाकि वे सभी उच्च खानदान के सभ्य परिवार के लडके थे लेकिन पैसे व यौवन की इस अगडाई मे सब कुछ भूल चूके थे। पर इन्हे क्या पता कि जिन्दगी का असली लुफ्त मौज मजा इन भोग–विलासो मे नहीं, सयम पूर्ण जीवन मे है। अनुराग बडा असमजस की स्थिति मे फस चुका था इस विलासिता के वातावरण में वह आ फसा था यहा से निकले तो कैसे ? वह इसी अधेडबुन मे था कि जयेश ने कहा–

अनुराग बाबू– क्या सोच रहे हो ? अरे ! इसमे इतना सोच विचार की क्या बात हे। आजकल व्हीस्की (Whisky) तो आम बात हो गई है, हर सभ्य आदमी इसे अपने गम को भुलाने के लिए पीने लगा है। वैसे भी इसमे कोई विशेष बुराई या पाप वाली बात नही है। ये है क्या ? अगूर आदि का ज्यूस (Juice) ही तो है, विशेष रीति से तैयार किया हुआ। इसे पीने से तुम्हारी कोई कसम–वसम टूटेगी नहीं।

अनुराग चुपचाप था उससे न तो हा करते बन रहा था और न ही ना करते। इतने मे पारस ने टेबल (Table) पर पडा वह ग्लास जो अनुराग के लिये था, उठाया व उसके मुह के पास ले जाकर बोला लो एक दो घूट ही ले लो, बस ज्यादा कोई जरूरी नहीं।

अनुराग– तो क्या व्हीस्की (Whisky) पीना जरूरी है मैं नही पीता।

राजीव–यार दोस्त। तुम हमारी इतनी भी बात नही रखोगे। हम कोई तुम्हे मास तो खिला नहीं रहे वह तो बडी बुरी चीज है पर इसमे तो कोई बुराई नहीं। यह तो ज्यूस (Juice) है केवल। जरा चख तो सही कैसा लगता है। और अनुराग के मना करने पर भी जबर्दस्ती उसके मुह मे ग्लास टेढा कर दिया। एक दो बूद उसके मुह मे चले गये।

'वाह' मजा आ गया। आज तो अनुराग को भी पिला ही दी। सभी दोस्त खुश होकर बोले–सभी ने अपनी–अपनी गिलासे मुह से लगाली। एक ही श्वास में सारी शराब खाली करके बोले–यार ! विशेष मजा नही आया। एक बार और हो जाए।

हा–हा रोज–रोज तो यहा आने का मौका मिलता नही है। आज आये हैं तो पूरा लुफ्त लेकर ही उठेगे। कमल ने कहा और थोडी व्हीस्की (Whisky) और ले आने का आर्डर दे दिया। उसको आज रुपयो की गर्मी जो थी। वह घर मे 100–200 नही पूरे 5000 रुपये उठा कर लाया था अनुराग को तो उसने 500 रुपये ही दिखाये थे।

इधर अनुराग ने देखा– आज तो मैं फस गया हू। मुह मे जबरदस्ती उडेले गये शराब के घूट को तो उतारना पडा पर अब गिलास मे और बची शराब का क्या करे। उसने इधर–उधर झाका। और कोई जगह तो उसे दिखाई नहीं पडी पर पास ही दो चार गमले पडे दिखाई दिये सभी दोस्त तो शराब के जाम पीने मे व्यस्त थे इसी व्यस्तता का फायदा उठा अनुराग ने अपने गिलास की शराब एक गमले मे डाल दी।

उसने देखा शराब का दूसरा जाम भी आ गया है और सभी उस मस्ती मे उतरे हुए हैं तो वह धीरे से उनके बीच से उठा और होटल से बाहर आ गया। जल्दी ही रवाना होकर अपने घर पहुच गया। उसकी मम्मी और बहिन विमा उसका कभी से इन्तजार कर रहे थे। विमा घर के बाहर ही खडी थी। अनुराग को देखते ही बोली– भैया ऽ ऽ। आज आप कितनी देरी से आए है ? देखोना। मैं और मम्मी कभी से आपका इन्तजार कर रहे हैं। आज मम्मी के पूर्णिमा का व्रत था, लेकिन उसने अभी तक खाना नहीं खाया। बोल रही थी अनुराग आ जाये तो अपन साथ–साथ ही खाए। गरम–गरम दाल बाटी बना रखी है। आपका इन्तजार करते–करते ठडी होने लगी है।

अनुराग–हा ! आज मुझे देर हो गई। मैं तो घर जल्दी ही आ रहा था पर दोस्तो ने रोक लिया।

विमा–भैया आपके दोस्त भी कैसे हैं ? जब देखो आपको रोक लेते हैं ।

अनुराग– तू मेरे को दरवाजे पर ही खडा रखेगी या अन्दर भी आने देगी। शायद घर पर लेट पहुचने के अपराध की सजा दे रही है। यह कहते हुए मुस्करा दिया।

विमा– ऊ हू। आप भी बडे खराब हैं। मैं और आपको सजा दू। कभी नहीं। मेरे प्यारे भैया। मैं आपके इन्तजार मे कितनी परेशान थी, एक घटा हो गया घर से अन्दर बाहर चक्कर लगाते हुए। कहते हुए विमा ने अपना मुह फूला लिया।

अनुराग– ओ हो तू तो नाराज हो गई। मैं तो मेरे से मजाक कर रहा था।

इतने मे उनकी आवाज सुनकर मम्मी कुसुमवती बाहर आ गई। बोली तुम लोग दरवाजे पर ही रुठते व मनाते रहोगे या घर के अन्दर भी आओगे।

हा– मम्मी ! अब चलते हैं अन्दर ! विमा का हाथ खींचते हुए अनुराग घर मे घुस गया। वे रूम मे बिछी अपनी चटाई पर बैठे, तब तक पापा भी घर आ गए। उन्हे देखते ही विमा बोली– अहा ! आज तो पापा भी जल्दी घर आ गए। बडा मजा रहेगा। आज हम सब साथ–साथ खाना खाएगे।

पापा–कनकसिंह ने उन्हे यो बैठे हुए देखा तो बोले–क्या बात है ? तुमने इतनी देर तक खाना नहीं खाया। घडी मे 7 बज रहे हैं। रोज तो तुम लोग 5½ या 6 बजे ही खाना खा लेते हो।

हा पापा । रोज तो अनुराग भैया कॉलेज मे छुट्टी होते ही साढे पांच बजे घर आ जाते हैं और हम साथ–साथ ही खाना खाते हैं। पर आज तो भैया बहुत लेट आये हैं, अभी कोई 10 मिनिट ही हुए हैं इनको घर आये हुए। और आज तो मम्मी के भी पूर्णिमा का व्रत था ये भी सुबह से भूखी हैं अनुराग कॉलेज से घर आएगा तो फिर साथ–साथ ही खाएगे। विभा ने सारी बात कह डाली।

बेटे अनुराग ! आज तुम लेट हो गए। कॉलेज मे कोई जरूरी कार्य था क्या ? अनुराग की ओर मुखातिब होकर कनकसिह ने पूछा ! नहीं पापा। कॉलेज मे तो कोई कार्य नही था। कॉलेज की छुट्टी होते ही मेरे दोस्त कमल पजक आदि ने मुझे घेर लिया था । कह रहे थे हमारे साथ घूमने चलना होगा। मुझे क्या पता मम्मी मेरे पीछे भूखी है नही तो मैं उनसे छूटकर आ जाता, अनुराग ने उत्तर दिया।

अच्छा कोई बात नही। फ्रैंडशिप (Friendship) ऐसी ही होती है। कभी–कभी दोस्तो का मन भी रखना पडता है। और फिर तुम्हारे वे सारे दोस्त तो बडे अमीर हे, में उन सबको जानता हू, कोई मिल मालिक का बेटा हे तो कोई जौहरी का बेटा है। किसी के पिता के पास खिलौने की फेक्ट्री हे तो किसी के पास साबुन की फेक्ट्री। तुम्हे उन सब के साथ कैसा लगता होगा ? क्याकि मैं तो एक साधारण नोकरी पेशा आदमी हू। कनकसिंह के ये शब्द सुनते हुए अनुराग ने उन्हे रोकते हुए बीच मे ही कहा–

नहीं पापा ! कोई विशेष अटपटा नहीं लगता है। क्योकि मेरे [illegible] के मित्र हैं और मेरे प्रति उन सबका गहरा लगाव है। वे मेरा हर बात मे खूब ध्यान रखते हैं। वेसे भी मित्रता तो मित्रता ही है। सुरूपता या कुरूपता, दौलत या निर्धनता इसमें कभी नही देखी जाती। मित्रता मे तो एक दूसरे के गुण व स्वभाव की एक रूपता देखी जाती है। जहा ये एकरूपता होती है वहा मित्रता सहज ही स्थापित हो जाती है। सच्ची मित्रता कोई सामान्य चीज [illegible] जो दौलत या अन्य किसी वस्तु से खरीदी जा सके।

पूज्य पापा जी ! आपका कहना यथार्थ है। मैं आपकी हित शिक्षा का ख्याल रखूगा । अनुराग बोल ही रहा था कि कुसुमवती ने बीच मे ही कहा– आप लोग तो बाते क्या करने लगे मानो किसी महात्मा का लेक्चर (Lecture) ही शुरू हो गया। अब बस भी करो। भोजन का समय हो चुका है देखो ! मैंने सब तैयारी कर ली है। सब ठण्डा हो रहा है।

अरी भागवान ! तू भी इतनी क्या जल्दी करती है। सुबह से जाता हू तो अब शाम ढले ही तो घर आता हू। अब भी अपने बेटे--बेटी से दो बात न करूतो कब करू। कनकसिह ने मीठे स्वर मे कहा–

आप दो क्या दस बाते करो ना ? आप और आपके बेटे–बेटी से। मेरी कौनसी मनाई है। पर जरा वक्त तो देखा करो। पहले भोजन कर लीजिए फिर भले पूरी रात लेक्चर (Lecture) देते रहना । कुसुमवती ने उलाहने के स्वर मे कहा।

अच्छा बाबा– अच्छा तेरी बात ठीक है। अब तुम्हारी ही मान लेता हू। लाओ क्या बनाया है आज ? कनकसिह ने नरम शब्दो मे कहा– और परोसा हुआ थाल अपने सामने खींच लिया।

अनुराग विभा भी उसके पास आ बैठे, कुसुमवती भी बडे प्रेम के साथ खाने व खिलाने लगी।

भोजन पूर्ण हुआ और सभी अपने–अपने कार्य से निवृत्त हो निद्रा देवी की गोद मे चले गये। सुखमय रात बडी शीघ्रता से व्यतीत हुई। सुख की घडिया बीतते कितनी देर लगती है।



अनुराग 25 अप्रेल सायकाल 5 बजे अपने घर पर बैठा ही बी काम (B Com) द्वितीय वर्ष परीक्षा की तैयारी कर रहा था। कॉलेज मे पढाई पूर्ण होने से 25 अप्रेल से 4 मई तक अवकाश घोषित कर दिया था। ताकि सभी छात्रगण अपना अध्ययन, परीक्षा की पूरी तैयार घर पर एकाग्रता पूर्वक कर सके। अनुराग के दोस्त जिन्हें परीक्षा की काई चिन्ता नही थी वे तो चीटिग (Cheating) या नकल बाजी करके पास हो जाने की नई–नई अटकले सोचा करते थे। उन्हे अपनी चीटिग (Cheating) पर विश्वास था कि पास तो हो ही जाएगे, और करना क्या है।

अनुराग को फस्ट (First) डिवीजन बनना है वह तो है कि पूरा किताबी कीडा उसे पढने दो। अपने को तो 10 दिन की छुट्टिया मिली है गुलछर्रे उडायेगे। कभी सिनेमा हॉल, तो कभी पार्क कभी क्लब तो कभी खेल कूद व सगीत सध्या मे। ये लोग अपना समय बिताने की योजना बना रहे थे। उधर अनुराग अपनी पढाई मे व्यस्त था गणित के सवाल हल कर रहा था। विमा की पास मे बेठी अपना अध्ययन कर रही थी कुसुमवती रसोई घर में भोजन तैयारी मे जुटी थी।

अरे ओ अनुराग भेया ऽ ऽ । अनुराग भेया ऽ ऽ। दोडो देखो तुम्हारे पापा को क्या हो गया है ? पडोसी के लडके पिंकेश ने हाफते–हाफते आकर आवाज दी। अनुराग ने ज्योहि ही आवाज सुनी तुरन्त उठ खडा हुआ। है ऽ ऽ क्या हुआ मेरे पापा को ? कहा है वो ? और वह तुरन्त दोडकर आगे घर से बाहर आया।

वो यहा नहीं। माल रोड की उधर वाली सडक पर। वहा बहुत भीड़ एकत्रित हो चुकी है। पींकेश न कहा।

ओ मम्मी । मै जा रहा हू, पापा का क्या हुआ है ? चिल्लाता हुआ अनुराग पैदल ही दौड गया। साईकल स्कूटर वगैरह भी उसके पास कुछ भ नहीं। विमा चिल्लाई–मम्मी । ओ मम्मी जल्दी करो क्या हो गया है चलो अपन भी चलें। घर को ज्यो का त्यो छोडकर मा बेटी दोनो ही भाग चली। अनुराग आगे–आगे बडी तेजी से भाग रहा था। करीब 4–5 मिनिट में वह एकत्रित भीड के समीप पहुच गया। हाफते–हाफते भीड को चीरते हुए वह घटना स्थल पर पहुचा तो हक्का–बक्का रह गया। उसके पापा श्री

कनकसिह जी ट्रक से कुचले पडे थे। उनके मुह नाक व सिर से खून बहा जा रहा था। अनुराग के मुह से एक भयकर चीख निकली – ओह ! पापा ! ये क्या हुआ ? भगवान मेरे पापा की ये हालत ?

भीड मे से किसी ने कहा– इस तरह इनके शरीर से बहुत खून चला जाएगा, जल्दी करो इन्हे सरकारी हॉस्पिटल (Hospital) मे ले चलो। डॉक्टर सक्सेना अभी हॉस्पिटल मे ही होगे।

अनुराग जो अब तक किकर्त्तव्य विमूढ था, कुछ समला और तुरन्त एक टेम्पो (Tempo) वाले को बुलाकर लोगो की सहायता से उन्हे टेम्पो मे लिटाया तब तक उसकी मम्मी और विभा भी वहा आ पहुची थी, यह दुर्दशा देख उनकी आखो मे अश्रुधारा बह चली। शीघ्र ही टेम्पो मे वे भी चढी और हॉस्पिटल पहुच गये। डॉ सक्सेना फुर्सत मे ही मिले, केस देखते ही वे बोले स्थिति बहुत बिगड चुकी है। उनके सिर पर गभीर चोट आई है, मस्तिष्क का आपरेशन अभी तत्काल ही करना पडेगा, व कम से कम दस बोतल खून चढाना तो अनिवार्य है। उससे ज्यादा भी जरूरत पड सकती है। जल्दी व्यवस्था करो।

डा साहब ! व्यवस्था क्या करू ! अनुराग ने पूछा ! क्या–क्या करते हो ? तुरन्त 10000 रु लाकर रखो मैं अभी सब ठीक किये देता हू। डॉक्टर ने कडक होकर कहा। 10000 रु ?

हा दस हजार रुपये मैंने तो कम ही बतलाये हैं, इससे ज्यादा भी लग सकते है क्योकि मस्तिष्क का ऑपरेशन कोई साधारण बात नहीं है, एक आपरेशन के कम से कम 800 रुपये तो मेरी फीस है।

डॉ सा ! हम गरीब हैं जरा हम पर रहम करो। इतने रुपये तो हम कहा से लायेगे। कुसुमवती ने रोते–रोते कहा। कहा से कैसे लाएगे ? ये मुझे नही मालूम ? ये फालतू बाते करने का मेरे पास टाईम नही। अगर 10000 रु ला सकते हो तो ठीक वरना ये केश यहा से उठा ले जाओ। डॉक्टर ने बेरहमी से कह डाला।

ओ हो ! साहब ! ऐसा मत करिये। मैं आपके पैरो पडता हू, डॉक्टर सा आप मेरे पापा का आपरेशन शुरू करिये, तब तक मैं कहीं से रुपये की व्यवस्था करता हू। अनुराग ने गिडगिडाते हुए कहा।

डॉक्टर ने देखा ये कगाल लोग क्या 10000 रु की व्यवस्था कर सकेंगे। अत इन्हे टालना ही अच्छा है। तब कडकडाती आवाज मे बोले इस

तरह मेरे आगे गिडगिडाने से काम नहीं चलेगा। ऐसे गरीबी का रोना रोने वाले, भीख मगे यहा रोजाना ही आते रहते हैं। पहले 10000 रु लाकर मेरी मेज पर रखो तो ठीक है नही तो SSS। मैं जा रहा हू ? घर पर श्रीमती जी इन्तजार कर रही होगी मैं कोई फालतू आदमी नहीं जो तुमसे बकवास करता रहू।

कितना स्वार्थमय है यह ससार ? धिक्कार हे ऐसी श्री मताई को जिससे व्यक्ति की क्रूरता–चरम सीमा पर पहुच जाती है। जिसमे गरीबो की दर्द भरी प्रार्थना के शब्द सुनना भी बकवास लगता है। जिसमे मानव दानव बनकर क्रूर अट्टहास करने लगता है। वस्तुत जिसे पैसे से ही प्यार है उसे मानवता से प्यार कहा ?

अनुराग की आखो मे आसू आने लगे थे पर वह उन्हे किसी तरह अन्दर ही अन्दर पीकर बोला–डॉक्टर साहब ! मेरे जीवन रक्षक मेरे पापा की जिन्दगी का सवाल है। आप जरा ठहरिये। मैं अभी रु ले आता हू और अनुराग झट से बाहर निकल पडा। वह जानता था कि घर मे तो 10000 रु तो दूर रहे 400–500 रु मिल पाना मुश्किल हे क्योकि घर की आर्थिक तगाई की अवस्था उससे छुपी नही थी। महीने की 25 तारीख थी अत पापा को प्राप्त वेतन मम्मी को मिलने वाली मजदूरी तो घर खर्च मे व परीक्षा की फीस मे ही समाप्त हो जाती थी। बहुत कजूसी करते हुए भी प्रतिमाह का खर्च इतना हो जाता था कि महिने के अत मे 100–50 रु भी मुश्किल से कभी बच पाते थे तो कभी वे भी नहीं। अब अनुराग क्या करे कैसे करे ? उसे याद आये अपने करोडपति मित्र जो हमेशा उसे साथ देने का वादा किया करते थे। जो उसकी हर इच्छा पर अपने प्राण लुटाने की बात करते थे।

वह सबसे पहले कमल के पास ही पहुचा। कमल के पिता [illegible] थे प्रतिदिन लाखो का लेन–देन हुआ करता था। 5–7 मिनट मे ही कई [illegible] खरीदकर वे बैठे–बैठे ही हजारो का मुनाफा कमा लिया करते थे।

यार कमल ! आज मुझे तुमसे कुछ सहयोग चाहिये। अनुराग ने घबराते हुए कहा।

फिर गई। बोला अनुराग 100–50 रुपये की बात होती तो मैं अपनी जेब खर्च मे से दे सकता था पर इतने रुपये तो (कुछ रुककर) असभव है।

असभव क्यो ? तुम ही तो कहते थे–मेरे पिताजी का मैं इकलौता पुत्र हू। उनकी सपत्ति मेरी सपत्ति है। तुम अपने पिताजी से रुपये मागकर ।

नहीं अनुराग ! यह नहीं हो सकता ! मेरे पिता जी बडे कजूस हैं वे तुम्हारे लिए इतने रु कभी नहीं देगे ? और फिर मेरे बाप से मैंने कभी मागना सीखा नहीं।

अनुराग को लगा– कमल किसी भी हालत मे रुपये देने को तैयार नहीं है और समय तो बीतता जा रहा हे, मेरे पापा मौत से सघर्ष कर रहे हैं। अत वह कुछ बोला नहीं और वहा से रवाना होकर पारस के घर पहुचा। जहा पर उसके अन्य साथी राजीव–जयेश भी आये हुए थे। अनुराग के अत्यन्त मुर्झाये चेहरे को देखकर तीनो ने सोचा– क्या बात है ? हमेशा खिलते रहने वाला यह मुखारविद इतना मुर्झाया हुआ क्यो है ? तीनो ने एक साथ ही पूछा– अनुराग ! इतने सुस्त क्यो हो ?

क्या बताऊ ? मेरे पापा अपनी बैंक की छुट्टी होने पर साइकिल से घर आ रहे थे पीछे से आ रहे ट्रक ने उन्हे टक्कर मार दी, मेरे पापा का बुरी तरह एक्सीडेन्ट (Accident) हुआ है। डॉक्टर ने इलाज के लिए 10000 रुपये मागे हैं मुझे तुम पर भरोसा है कि तुम मेरे बचपन के सच्चे मित्र हो, मुझ पर जी जान लुटाने वाले हो आज तुम मुझे थोडा सहयोग ? कहते हुए अनुराग ने तीनो की आखो मे झाका पर रुपये देने की बात आते ही–जयेश–राजीव पारस एक दूसरे का मुह ताकने लगे। रुपये कौन ?

अनुराग ने फिर पूछा– कहो ! क्या हुआ तुम सब चुप क्यो हो ? समय जा रहा है मेरे पापा मौत के झूले मे झूल रहे हैं उन्हे बचाना ऽ ऽ ऽ। आखिर राजीव ने मौन तोडते हुए कहा दोस्त अनुराग ! जहा तक रुपये का सवाल है 10000 रुपये कोई छोटी–मोटी बात तो है नही, हम इतने रुपये लाये तो कहा से ? 100–50 की बात हो तो फिर भी दे सकते हैं।

अनुराग ने सोचा यह मित्र है या और कुछ। प्रतिदिन 500–700 रुपये मेरे सामने यू ही खर्च कर देने वाले ये मेरे साथी मुझे 10000 रुपये के लिए इस तरह मना कर रहे हैं। पर रुपये लेना तो इनसे ही पडेगा और कोई रिश्तेदार या मेरे जान पहचान का व्यक्ति तो इस कोटा सिटी मे है नहीं,

जिनसे इतने रुपये माग लाऊ। अत उसने कहा पारस! मैं जानता हू, तुम्हारी जेबो मे प्रतिदिन ही हजारों रुपये ऐसे ही पडे रहते हैं अगर तुम तीनो चारो मिलकर 2–2 हजार रुपये भी दो तो भी मेरा काम बन जाय। ये समय है तुम्हारी मित्रता के परीक्षण का। इस तरह ऐसे वक्त पर धोखा देना तो अनुचित है। अनुराग के शब्दो मे थोडी तेजी थी।

जाने दो अनुराग, ये परीक्षा–वरीक्षा की बाते। पैसा कमाना आसान बात नहीं है हमारे बाप दादो ने कितनी मेहनत की है, तब कही जाकर इतना पैसा घर में है। क्या वे पैसे तुम कगालो को यू ही लूटा दे ? जा हट हमारे सामने से ? आज कह रहे हो बाप का इलाज कराना है कल कहोगे मा का परसो कहोगे बहिन का । क्या पैसे की खदान खुदी हुई है हमारे पास जो तुम्हे दे दे।

अनुराग विचलित हो के बोला– मैं कौनसा तुम से रोज रुपया मागने आया हू। इतने वर्ष हो गए मैंने तुमसे दो पैसे भी नही मागे। आज मैं मुसीबत का मारा SS। क्या तुम मुझे जरा भी सहायता नही दोगे ? क्या इतनी भी मित्रता नहीं निभाओगे ?

जयेश– जा–जा ये बाते हम नही सुनना है। ऐसे भीख मगे मेरे बगले पर रोज ही आते हैं। कौनसी मित्रता ? कौनसा साथ व कौनसा साथी। यह मित्रता तो केवल कॉलेज तक ही है पढाई तक ही है उसके बाद कोई किसी का नहीं SSS।

अनुराग–बस बस करो जयेश। मैंने नही सोचा था तुम ऐसे स्वार्थी मित्र हो। मैंने आज तक तुम लोगो पर विश्वास किया था पर तुम लोगो मेरे उस विश्वास की जडो को उखाड डाला है। घोर आश्चर्य और [illegible] है मुझे तुम्हारे इस विश्वास घात पर। आज तुमने मेरा दिल तोड [illegible]।

राजीव –रहने दो अनुराग। ये सब बाते। [illegible] तुम किसे सुना रहे हो ? आगे बढो यहा से दूसरा द्वार [illegible] तुम तो अपने बाप के पास जाओ ना कहीं वो बेचारा तुम्हारे [illegible] उस दरिद्री का मुह देख बिना ही न [illegible] जाओ SS।

अनुराग का काटो तो खून नहीं [illegible] गया। [illegible] रे दुनिया गजब है ये स्वार्थ ? [illegible] बचपन की मित्रता भी नष्ट हो जाती है। स्वार्थ की [illegible] सौजन्य सहृदयता आदि सभी [illegible] है।

अनुराग को मित्रो के वे हृदय भेदी शब्द अन्दर तक चुभ गये। उसने देखा – यहा पर अब कुछ मिलने की आशा नही है, और इस तरह अब समय भी बहुत व्यतीत हो गया है। ज्यादा देरी करने से फायदा नही। उधर पापा का क्या हाल होगा ? कही वे ? वह चुपचाप मित्रो के समीप से दूर हटा व ऑटोरिक्शा पकडकर हॉस्पिटल पहुचा। वहा जाकर देखा तो वही हुआ जिसकी आशका थी। उसे देखते ही डॉ सक्सेना बोले–क्यो रे दुष्ट! इतनी देर लगा दी। मुझे यहा बिठा गया और गया रुपये लेने। ले आया रुपये ? तू ने मुझे क्या सडक छाप व्यक्ति समझ रखा है। जो इस तरह तुम जैसे कगालों के लिए अपना बेशकीमती समय गवाता रहू। अब देख अपने बाप को ? यह तो मर चुका है तू भी कैसा बेटा है जो अपने बाप को नही बचा सका।

डॉक्टर सा ! मुझे माफ करना। आपका समय मैंने बर्बाद किया, पर क्या किया जाय? मेरी भी मजबूरी थी। कहते हुए अनुराग फफक–फफक कर रो पडा। अपने मृत पिता के समीप जा गिरा। डॉक्टर सा रवाना हो गए और अपने कर्मचारी को कहते गए इन लोगो को जल्दी ही यहा से रवाना करे। बेकार मे भीड इकट्ठी कर रखी है ।

दो चार मिनिट मे ही कर्मचारी आया और बोला उठाओ इस लाश को। अनुराग कुसुमवती व विमा फूट–फूटकर रो रहे थे। सिर पर जो एक सुख का साया था वह उठ चुका था वे आज निराश्रित बन चुके थे। कुसुमवती ने देखा–जो होना था। वह तो हो चुका है अब कुछ हिम्मत धारण किये बिना काम नही चलेगा। वह उठी और अनुराग से बोली–बेटा अनुराग ! उठ, अब तुझे ही सब कुछ करना है। जो करने वाले थे वो चले गए हैं। इस घोर विपत्ति के समय मे तुझे ही हिम्मत रखनी होगी। अन्यथा तो इस दुनिया मे अपना कहलाने वाला और कौन है ? जो इस वक्त मे काम आए ?

अनुराग जो अब तक धार–धार आसू रो रहा था मा के शब्द सुन कुछ हिम्मत धरकर उठ खडा हुआ। आज उसके दिल मे अपने बाप के चले जाने से जितना गहरा गम था उतना ही गहरा गुस्सा ? उसे अपने वे चारो ही दुष्ट मित्र घोर दुश्मन नजर आ रहे थे। डॉ सक्सेना का क्रूरता भरा वह मदमाता चेहरा आखो के सामने घूम रहा था ? जिसने पैसो को ही सर्वोपरी मानकर मानवता दया करुणा नैतिकता को तिलाजली दे दी थी। दीवार के सहारे सिर टिकाकर वह सोचने लगा– मेरे पापा व मैंने आज तक ईमान को अपनाया दौलत को नही। मैंने इन्सानियत की पूजा की, हैवानियत की नहीं। लेकिन इस ईमान की राहो पर चलने का नतीजा क्या आया ? अगर मेरे पापा

व में इस इमान के चक्कर मे नहीं पडते तो आज यह दिन मुझे नहीं देखना पडता। मेरी ईमानदारी व इन्सानियत का ही प्रतिफल हे–मेरे बाप की अकाल मौत ? अगर मैं इन सबको तिलाजली देकर अनेतिकता की पगडडी पर चलता तो आज मेरे सामने लक्ष्मी निवास करती। शरीर पर ये फटे टूटे वस्त्र न होकर बेश कीमती राजसी वेशभूषा होती। मेरे रहने के लिए वह टूटी–फूटी झोपडीी न होकर आलीशान कोठी होती और सबसे बडी बात होती मैं दोलत के सहारे अपने बाप को बचा लेता। डॉ सक्सेना जैसे व्यक्ति की पैसे की प्यास पूरी करके उनका ऑपरेशन करवा लेता खून की 10 बोतले क्या 100 बोतले चढवा देता।

ओ हो ! मैं भूला अब तक भटकता रहा इस ईमान व इन्सानियत की अटकलो मे अटकता रहा। अब ऐसा नहीं होगा। यह दुनिया इमान की नही बेईमान की है। यह दुनिया मानव से प्यार करने वाली नही दौलत से प्यार करने वाली है। यह ससार इन्सानियत का नही हेवानियत का है मुझे इस दुनिया की चाल मे अपनी चाल मिलानी होगी। दुनिया की चाल से विपरीत चलकर मैंने वात्सल्य मूर्ति जीवन रक्षक पूज्य पिता जी को खो दिया। यह मेरी भयकर भूल थी। अब आज से ही मैं प्रतिज्ञा करता हू– मैं इस ईमानदारी व इन्सानियत को कभी प्रेम नहीं करूगा। कभी नेतिकता करुणा व स्नेह को गले नहीं लगाऊगा। अब मे चलूगा हिंसा झूठ बेइमानी व भ्रष्टाचार की राह पर ओर मजा चखाऊगा इन धन के लोभी डॉ सक्सेना जेसे नर पिशाचो को। उन बेईमान, मतलबी दोस्तो का बता दूगा कि किसी सच्चे मित्र का दिल तोडना कैसा होता है ? विश्वासघात का परिणाम कितना भयानक होता है ?

दीवार के सहारे सिर टिकाये अनुराग न जाने क्या क्या सोचता ही चला जा रहा था। उसके मन मे विचारो का अन्त नहीं आ रहा था तभी कुसुमवती ने आवाज दी– बेटे ! इस तरह कब तक गम मे डूबे रहोगे ? देखोना, तेरे पापा का यह देह यो ही पडा है घंटो [illegible] रात तक यहा रूकना ठीक नही इधर यहाँ से लाश [illegible] भी आवश्यक है। यहा के कर्मचारी बार–बार लाश उठाने का [illegible] रहे है।

इन्सानियत, निर्लिप्त्ता व इन्साफ तो उसकी निगाहो मे अदृश्य है, पैरो तले कुचले जाते है। खैर । मम्मी, मैं अब जाता हू किसी टेम्पो को ले आता हू। कहते हुए अनुराग हॉस्पिटल के आहते से बाहर निकल पडा।

बाहर कई टैम्पो वाले खडे थे, उन्हे वस्तुस्थिति बताई और चलने को कहा तो एक टैम्पो वाले ने कहा मैं चल तो सकता हू। पर डेड बॉडी (Dead Body) को ले जाना है। अत 100 रुपये लूगा।

अनुराग ने अपनी जेब सभाली तो उसमे केवल 5 रु निकले उसने सोचा इन 5 रुपये से तो टैम्पो आएगा कैसे ? और मान लीजिए घर ले जाकर घर मे जमा रुपये से 100 रुपये इसे दे दू तो वह भी नही जमेगा ? क्योकि घर पर जमा पूजी केवल 400–500 रुपये होगे, उन 400–500 रुपयो मे से यदि इन्हे 100 रुपये दे दू तो बाद मे पापा के अन्तिम सस्कार के लिए पैसा ? यह कहा से लाऊगा, उसमें भी तो 400–500 रुपये लग जाएगे ? एक ही मिनिट में उसने यह सब सोचकर टेम्पो वाले से कहा– भाई इतने रुपये तो मैं नही दे सकता। कोई और साधन देखता हू।

यह कहकर वह वहा से रवाना हो गया। इधर–उधर देखा तो सयोगत सामने ही एक ठेले वाला दिखलाई दिया। वह उसके पास दौडा और सारी स्थिति बताकर पूछा– तुम चलने को तैयार हो ?

ठेले वाले ने कहा– हा । चल तो सकता हू पर डेड बाडी (Dead Body) ले जाने की बात है, 25 रुपये मे तैयार हू।

अनुराग 25 रुपये तो बहुत ज्यादा होते हैं, कुछ कम करो तो SS।

ठेले वाले ने देखा यह कोई खानदानी लडका परिस्थितियो के मारा मेरे पास आया है। अन्यथा तो डैड बाडी (Dead Body) को ठेले गाडी मे कौन ले जाता है ? जिसकी थोडी भी अच्छी स्थिति हो वह अपने पिता को टेम्पो मेटाडोर (Matador) मे ही ले जाना चाहता है। मैं भी गरीब हू, गरीबो की पीडा कैसी होती है ? यह भलीभाति जानता हू। मुझे इसके साथ कुछ रहमियता दिखानी चाहिए। ऐसा कुछ सोचकर बोला–भाई । वैसे मेरा भाडा तो 25 रुपये ही हे लेकिन तुम कितना देना चाहते हो ? तुम्हारी जितनी इच्छा हो उतने ही दे दो।

भाई । बात ऐसी है कि अभी मेरी जेब मे केवल 5 रुपये है, अधिक नहीं। पॉकेट खोलकर दिखाते हुए अनुराग ने कहा। अगर इतने से न हो तो घर पहुचने पर मैं तुम्हे थोडे रुपये और दे दूगा।

व में इस इमान के चक्कर मे नहीं पडते तो आज यह दिन मुझे नहीं देखना पडता। मेरी ईमानदारी व इन्सानियत का ही प्रतिफल हे—मेरे बाप की अकाल मोत ? अगर में इन सबको तिलाजली देकर अनेतिकता की पगडडी पर चलता तो आज मेरे सामने लक्ष्मी निवास करती। शरीर पर ये फटे टूटे वस्त्र न होकर वेश कीमती राजसी वेशभूषा होती। मेरे रहने के लिए वह टूटी—फूटी झोपडी न होकर आलीशान कोठी होती ओर सबसे बडी बात होती में दोलत के सहारे अपने बाप को बचा लेता। डॉ सक्सेना जेसे व्यक्ति की पेसे की प्यास पूरी करके उनका ऑपरेशन करवा लेता खून की 10 बोतलें क्या 100 बोतले चढवा देता।

ओ हो ! मैं भूला, अब तक भटकता रहा, इस ईमान व इन्सानियत की अटकलो मे अटकता रहा। अब ऐसा नहीं होगा। यह दुनिया इमान की नहीं, बेईमान की है। यह दुनिया मानव से प्यार करने वाली नही, दोलत से प्यार करने वाली है। यह ससार इन्सानियत का नहीं हैवानियत का है मुझे इस दुनिया की चाल में अपनी चाल मिलानी होगी। दुनिया की चाल से विपरीत चलकर मैंने वात्सल्य मूर्ति, जीवन रक्षक पूज्य पिता जी को खो दिया। यह मेरी भयकर भूल थी। अब आज से ही मैं प्रतिज्ञा करता हू— मैं इस ईमानदारी व इन्सानियत को कभी प्रेम नहीं करूगा। कभी नैतिकता करुणा व स्नेह को गले नही लगाऊगा। अब मैं चलूगा हिसा झूठ बेइमानी व भ्रष्टाचार की राहो पर और मजा चखाऊगा इन धन के लोभी डॉ सक्सेना जेसे नर पिशाचो को। उन बेईमान, मतलबी दोस्तो को बता दूगा कि किसी सच्चे मित्र का दिल तोडना कैसा होता है ? विश्वासघात का परिणाम कितना भयावह होता हे ?

दीवार के सहारे सिर टिकाये अनुराग न जाने क्या—क्या सोचता ही चला जा रहा था। उसके गम भरे विचारो का अन्त नही आ रहा था तभी कुसुमवती ने आवाज दी— बेटे ! इस तरह कब तक गम मे डूबे रहागे ? देखोना तेरे पापा का यह देह यो ही पडा हे घडी 8 बजा रही हे, अब देर रात तक यहा रूकना ठीक नही इधर यहॉ से लाश उठाना भी आवश्यक हे। यहा के कर्मचारी बार—बार लाश उठाने का कह रहे हें।

अनुराग बोला — हा मम्मी ! इस दौलत की दुनिया मे गरीबो की क्या वेल्यू (Value) है ? यहा पर अगर दो—चार गरीब एकत्रित हो तो भीड इकट्ठी हो जाती है ओर दो—चार अमीर एकत्रित हो तो महफिल कही जाती हे। दुनिया की नजर पर दौलत का विचित्र नक्शा चढा हुआ है जिसम उस केवल स्वार्थ, धन सम्पत्ति, पद, प्रतिष्ठा व अमीरी ही नजर आती हें। परमार्थ

इन्सानियत निर्लिप्त्ता व इन्साफ तो उसकी निगाहो मे अदृश्य है, पैरो तले कुचले जाते हैं। खैर । मम्मी, मैं अब जाता हू किसी टेम्पो को ले आता हू। कहते हुए अनुराग हॉस्पिटल के आहते से बाहर निकल पडा।

बाहर कई टैम्पो वाले खडे थे, उन्हे वस्तुस्थिति बताई और चलने को कहा तो एक टैम्पो वाले ने कहा मैं चल तो सकता हू। पर डेड बॉडी (Dead Body) को ले जाना है। अत 100 रुपये लूगा।

अनुराग ने अपनी जेब सभाली तो उसमे केवल 5 रु निकले उसने सोचा इन 5 रुपये से तो टैम्पो आएगा कैसे ? और मान लीजिए घर ले जाकर घर मे जमा रुपये से 100 रुपये इसे दे दू तो वह भी नही जमेगा ? क्योकि घर पर जमा पूजी केवल 400–500 रुपये होगे, उन 400–500 रुपयो मे से यदि इन्हे 100 रुपये दे दू तो बाद मे पापा के अन्तिम सस्कार के लिए पैसा .. ? यह कहा से लाऊगा, उसमे भी तो 400–500 रुपये लग जाएगे ? एक ही मिनिट मे उसने यह सब सोचकर टेम्पो वाले से कहा– भाई, इतने रुपये तो मैं नहीं दे सकता। कोई और साधन देखता हू।

यह कहकर वह वहा से रवाना हो गया। इधर–उधर देखा तो सयोगत सामने ही एक ठेले वाला दिखलाई दिया। वह उसके पास दौडा और सारी स्थिति बताकर पूछा– तुम चलने को तैयार हो ?

ठेले वाले ने कहा– हा ! चल तो सकता हू पर डेड बाडी (Dead Body) ले जाने की बात है 25 रुपये मे तैयार हू।

अनुराग 25 रुपये तो बहुत ज्यादा होते हैं, कुछ कम करो तो ऽऽ।

ठेले वाले ने देखा यह कोई खानदानी लडका परिस्थितियो के मारा मेरे पास आया है। अन्यथा तो डैड बाडी (Dead Body) को ठेले गाडी मे कौन ले जाता है ? जिसकी थोडी भी अच्छी स्थिति हो वह अपने पिता को टम्पो मेटाडोर (Matador) मे ही ले जाना चाहता है। मैं भी गरीब हू, गरीबो की पीडा कैसी होती है ? यह भलीभाति जानता हू। मुझे इसके साथ कुछ रहमियता दिखानी चाहिए। ऐसा कुछ सोचकर बोला–भाई ! वैसे मेरा भाडा तो 25 रुपये ही है लेकिन तुम कितना देना चाहते हो ? तुम्हारी जितनी इच्छा हो उतने ही दे दो।

भाई ! बात ऐसी है कि अभी मेरी जेब मे केवल 5 रुपये है, अधिक नहीं। पॉकेट खोलकर दिखाते हुए अनुराग ने कहा। अगर इतने से न हो तो घर पहुचने पर मैं तुम्हे थोडे रुपये और दे दूगा।

नही नहीं, तुम भी मानव हो मे भी मानव हू। मानवता के नाते हम भाई भाई हैं। भाई ही भाई के काम नहीं आएगा तो ओर कान आएगा। लो चलो मे तैयार हू। तुम्हारी जो इच्छा हो दे देना, न भी दो तो कोई बात नहीं। ठेलेगाडी वाले ने कहा ओर अपनी गाडी ढकेलने लगा।

अनुराग ठेले गाडी वाले की सहृदयता व सहानुभूति के प्रति गदगद था। वह उनके साथ ले गया। दोनो हॉस्पिटल पहुचे। कुसुमवती व विमा इन्तजार करते खडी थी। ठेले गाडी को देख कुसुमवती ने कहा– अनुराग ! क्या कोई टेम्पो नहीं मिला ?

हा मम्मी ! टेम्पो वाले तो किराया बहुत अधिक माग रहा हे। ये ठेलेगाडी वाला भेया कितना सज्जन व दयालु हे मेरे कहते ही शीघ्र आ गया। क्या फर्क पडता है टेम्पो नहीं तो हाथ गाडी ही ठीक है। अनुराग ने प्रश्न भरी निगाह से कुसुमवती की ओर देखा।

हा, ठीक हे। उठा लो अपने पापा को। कहते हुए कुसुमवती ने कदम बढाया। तुरन्त अनुराग, विमा भी उनके साथ हुए। हाथगाडी वाला भी उन्ह सहयोग देने लगा। चारो ने मिलकर कनकसिह की निर्जीव देह को गाडी मे रखा। और आगे बढे घर पहुचे तब तक रात्रि के 10 बजे चुके थे। घर पहुचने पर अनुराग ने कनकसिह की देह को व्यवस्थित रूप से घर मे रखा गाडीवान को 5 रुपये अपनी जेब के और 5 रुपये अपने घर मे पडे रुपयो मे से या 10 रुपये निकाल कर देने लगा तो गाडीवान बोला– नही भेया ! मैं ये रुपय नहीं लूगा।

तो 10 रुपया और 20 रुपया ले लो। अनुराग ने कहा– नही मुझ रुपय नहीं चाहिए न 10 चाहिए न 20 न 25 रुपये। ये रुपये आप अपन पास रखो। तुम्हारे सामने ये विकट परिस्थिति खडी हे तो क्या मे तुम्हारा इतना सा कार्य भी नही कर सकता। अनुराग अचरज मे पड रहा था ये भी क्या व्यक्ति हे 25 रुपया किराया की जगह 5 रुपया भी नही ले रहा है। कितनी सहानुभूति है इसके पावन हृदय मे। उसने जबर्दस्ती रुपये देने चाह पर उसने नही लिय अन्तत अनुराग को हार माननी पडी। वह उसे हाथ जोडत हुए बोला– तुम्हार जैसा मानवता प्रिय सहृदय व्यक्ति मेंने दूसरा नही दखा।

अनुराग जी ! तुमन मुझे पहचाना नहीं मे तो तुम्ह पहचान गया। मेरा नाम प्रदीप हे, बचपन मे पहली से पाचवी कक्षा तक मे तुम्हारे साथ ही पढा था तुम तो अब कॉलेज मे पहुच गये हो पर मुझे ता पाचवी कक्षा पढ कर

ही स्कूल छोडना पडा था। क्योकि पिता जी बीमार हो गए थे, घर मे कोई कमाकर लाने वाला नही था तब पढाई छोडकर मैं तो मजदरी करने मे लग गया। खैर । अब मैं चलता हू। और भी कुछ काम हो तो मुझे याद करियेगा। कहते हुए वह ठेलेवाला आगे बढ गया।

अनुराग ! देखता रह गया। अरे यह वही प्रदीप है जो मेरे साथ बचपन मे पढा करता था, हा अब याद आया, यही लडका कई बार मुझसे पढाई मे सहयोग लिया करता था। एक से लगाकर पाचवी कक्षा तक सदैव जब मैं कक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया करता था तो यह हमेशा दूसरा स्थान प्राप्त किया करता था। ओ हो ! इसके समान कितने ही प्रतिभा सम्पन्न बालक गरीबी के कारण बीच मे ही पढाई छोड देते होगे। मेरी भी यही हालत होती, अगर मेरे पापा–मम्मी कठिन परिश्रम व मेहनत मजदूरी करके मुझे पढाई नही करवाते । अनुराग सोचता ही जा रहा था कि कुसुमवती ने पुकारा अनुराग !

हा– मम्मी।

क्या सोच रहे हो।

यू ही खडा हू। देख रहा हू। उस ठेलेवाले की सहृदयता। बोलो– अब् क्या करू ? पापा चले गए ! मम्मी अब हमारा क्या होगा ?

क्या बताऊ बेटा ? सुख की ठडी छाया से हटकर अब हम दु ख की कडकाती धूप मे आ पडे हैं। तेरे पापा का कितना सहारा था, फिर बचपन से लेकर आज तक उन्होने कभी सुख के दिन नही देखे, अब कुछ तू बडा हुआ तेरे से आशा बाधकर वे चल रहे थे कि अनुराग अब पढ लिख गया है, थोडे ही वर्षो मे अच्छी सर्विस कर लेगा, या कोई व्यापार धधा शुरू करेगा व कमाने लगेगा तो फिर मैं आराम करूगा। पर आराम के दिन आने से पहले ही बेटा ! वे तो चले । कहते हुए कुसुमवती की आखो मे अश्रु देख अनुराग भी अपने आप को रोक नही सका। उसकी रूलाई फूट पडी।

इधर विभा ने देखा– मा ओर भैया दोनो ही क्रन्दन कर रहे हैं। हृदय जो पहले ही भरा था फिर सुबक पडा लेकिन उसने सोचा–अगर इस तरह मैं भी रोती रही तो क्या होगा ? इस तरह रोने से तो मानसिक दु ख और बढ जाएगा। उसने कहा भैया – ऽऽ। ओ अनुराग भैया ऽऽ। आप ऐसा नहीं करना। मम्मी आप तो बडे हैं आप अगर इतने कायर दिल बनोगे तो हमारा क्या होगा ? आप को तो और अधिक हिम्मत रखनी चाहिए।

विभा के शब्दो को सुनकर भी कुसुमवती व अनुराग के आसू थमे नही। बहती हुई अश्रु लडियो को देख विभा विह्वल हो उठी। वह जोर से चिल्लाई–मम्मी ऽऽ । आप चुप हो जाओ, में किसी भी तरह आपके आसू नहीं देख सकती। पापा चले गए–यह एक गहन दु ख तो हे ही और आपके ये आसू इस गम को और अधिक गहन बनाये जा रहे हें। रोने से अगर दु ख कम होता चला जाता हो, तो में भी आपके साथ रोलू। आप कितने ही आसू बहाओ पर पापा तो अब वापिस आने वाले हैं नही ? फिर ये रोना क्यू ?

कुसुमवती सुबकती हुई बोली– विभा । तू कहती है वह सच है रोने से गया हुआ व्यक्ति वापस नही आता। इस ससार का यह अटल नियम है, कि इस देह से जो जा चुका है वह वापिस नही लौटता। पर मेरा मन रोके नही रूक पा रहा है। बेटी । तेरे पापा ने तेरे लिए भी कितने अरमान सजोये थे, कितने ऊचे स्वप्न उन्होने देखे थे। वे कहा करते थे, विभा को एम एस सी पास कराऊगा। जब मेरी बेटी पढ–लिखकर होशियार हो जाएगी, वह मेडिकल (Medical) शिक्षण ग्रहण कर डॉक्टर बन जाएगी तब मैं किसी डॉक्टर लडके के साथ ही उसकी शादी करूगा। मेरे घर पर तोरण मारने वाला मेरा जवाई डॉक्टर होगा या फिर कोई बहुत बडा इन्जीनियर (Engineer) होगा या वकील होगा। बेटी उनके वे सब सपने अधूरे । कहते हुए कुसुमवती बडे जोरो से रोने लग गई। उनके दिल का दर्द आखो से बह रहा था। उनके नेत्रों से प्रवाहित मानो गगा–यमुना मे विभा भी अब डूबने लगी थी।

वातावरण क्रन्दन व अकुलाहट व पीडा से भरा था। कुसुमवती का रुदन सुनकर आस पडौस दौड आये। घटित हुए इस दुखद हादसे से सभी व्यथित थे। मधुर व्यवहारी, प्रामाणिकता एव नेतिकता से परिपूर्ण कनकसिह की इस अकाल मृत्यु ने सभी को खिन्न बना दिया था। दु ख तो उन सबको बहुत था ही फिर कुसुमवती के रुदन से समी के हृदय को हिला दिया था। सब की आखो मे आसू बह चले थे कुछ समय तक तो यही क्रम चलता रहा गहरे नि श्वास, हिचकिया व सिसकिया वातावरण को अत्यन्त दु खद बनाती चली गई। आखिर पडोस मे रहने वाले अकल किशोरीलाल ने उन्ह ढाढस बधाते हुए कहा–

कनकसिह का जीवन हकीकत मे अपने आप मे अनूठा रहा। वह ईमानदारी व इसानियत के सहारे आजीवन गरीबी से सघर्ष करता रहा। उसने अपनी जिन्दगी मे हजारो कष्ट उठाये पर किसी अन्य को कष्ट देना स्वीकार नहीं किया। ऐसे व्यक्ति के जाने से कुसुमवती जी । दु ख किस नही

है ? पर इस प्रकार रोने से तो कोई फायदा नही। समझदार व्यक्ति ऐसे प्रसगो पर हिम्मत व धैर्य का परिचय देते हैं वे रो धोकर अपने दु ख को अधिक नही बढाते हैं। हिम्मत व धैर्य के शस्त्रो के द्वारा दु खो से सघर्ष करना विरल व्यक्तियो का ही काम है। कुसुमवती जी व बेटे अनुराग ! परिस्थिति मे जो अपना मानसिक सतुलन बनाये रखता है वही महान् होता है।

किशोरीलाल जी के इन सहानुभूति पूर्ण शब्दो से वातावरण की गमगीनी कुछेक अशो मे कम हुई। सभी चुपचाप थे। घडी मे देखा तो 11 30 हो चुके थे। आस पडौस के एकत्रित व्यक्ति अपने–अपने घर लौटे। दो–तीन सज्जन पडौसी वही ठहरे। दु ख की रात्रि भी व्यतीत हुई।

पात काल होते ही आस–पडौसियो ने मिलकर स्नेहिल हृदय श्री कनकसिह की देह का दाहसस्कार किया। निकट का रिश्तेदार तो कोई था नही जो वहा उपस्थित होता।

अनुराग जिसके ऊपर मानो व्रजपात हुआ था, इस भीषण कष्ट के समय अपनी गृहस्थी का निर्वाह करते हुए अन्दर ही अन्दर न जाने क्या–क्या सोचता रहता था। कभी उसकी नजरो के आगे डॉ सक्सेना का क्रूर चेहरा घूम रहा था तो कभी मतलबी दोस्त कमल राजीव, पारस आदि के निर्दयी चेहरे। कभी हाथगाडी वाले प्रदीप की मानवता याद आ रही थी तो कभी पडौसियो की सहृदयता। एक दो तीन करते धीरे–धीरे दिन बीत रहे थे और अनुराग का सकल्पशील हृदय किन्ही सकल्पो को पूर्ण करने के लिए योजनाए बना रहा था।

उसकी इन्सानियत अब हैवानियत के रूप मे उभरने लगी। उसकी मासूमियत ने कठोरता का रूप अपना लिया। दौलत का नशा गहराता चला गया। अब उसे दौलत के बिना सब कुछ बेकार नजर आने लगा। उसने तो मन मे दृढ निश्चय कर लिया कि अब अधिक से अधिक दौलत कमाना ही मेरा लक्ष्य होगा चाहे वह वैध तरीके से कमाया जाय या अवैध तरीके से। इससे मुझे कोई मतलब नही, पर इस मतलबी दुनिया को शिकस्त देने के लिए मुझे धन कमाना ही होगा। इस दृढ निश्चय के साथ ही वह रात्रि मे सोचने लगा कि हर आने वाला प्रभात मेरी जिन्दगी का दूसरा ही रूप होगा।

वाह री दुनिया ! जिसने एक शरीफ इन्सान को हैवान बना दिया। एक सन्मार्गगामी नवयुवक को उन्मार्ग मे धकेल दिया। हकीकत मे समाज की इसी दयनीय दशा के कारण आज के नवयुवक कई बार अपराध करने के लिए विवश हो जाते हे। उन अपराधी नवयुवको का जितना अपराध नहीं उतना आज के समाज के ठेकेदारो राजनेताओ की स्वार्थपरस्ता का है।

राजधानी एक्सप्रेस दिल्ली से कोटा जाती हुई बडी तेजी से बम्बई की ओर बढी जा रही थी। अभी कोई रात्रि के 3 बज रहे होगे अधिकाश यात्री मस्ती से सो रहे थे। कोई–कोई ही ऊग रहा था, बाकी सबको नींद आ चुकी थी। उसी ट्रेन मे यात्रा कर रहे एक नोजवान को न तो नींद आ रही थी न ऊग रहा था। उसका दिमाग कुछ और ही काम कर रहा था। उसने देखा कि एक महिला अपने पर्स को सिरहाने रख कर बेखबर सो रही है। आसपास सीट पर बेठे यात्री भी निद्राधीन हे। बस अवसर पाकर उस नौजवान ने उसके पर्स के एक भाग की ओर धारदार पत्ती का निशान लगा ही दिया। पर्स उस स्थान से कट गया वहा अगुली डाली तो उसके हाथ मे कुछ नोट आ गए उसने फूर्ती से उसे जेब मे डाले और शोचालय की ओर बढ गया। वहा जाकर उसने देखा कि 500–500 के दस नोट थे, कुल मिलाकर 5000 रुपये थे। उसने रुपयो को शोचालय की खिडकी के पास ही सुरक्षित स्थान पर छिपा दिये ओर अपनी सीट पर आकर ऊगने लगा। रात्रि की नीद मे क्या कुछ हुआ किसी को कुछ भी पता नहीं चला। सवेरे आठ बजे राजधानी एक्सप्रेस बम्बई सेन्ट्रल पर आकर खडी हो गई। सभी यात्री अपने–अपने डिब्बो म से निकले ओर टैक्सियो मे बैठकर गन्तव्य की ओर बढते चले। वह नोजवान ओर कोई नहीं था यह वही अनुराग था जो अपनी पूरी कॉलेज मे ईमानदार एव नैतिकता के उच्चादर्शो पर जीने वाला छात्र था। परिस्थितियो ने जिसकी जिन्दगी को बदल डाला था। पिता जी के स्वर्गवास हो जाने के बाद घर का सारा भार उसी के कधो पर आ पडा था। उसे अपने चल रहे अध्ययन को बीच मे ही रोकना पडा था। क्योकि नोकरी से उसे कोई विशेष पेसा मिलने की आशा नही थी। जबकि उसे इस धनिको की दुनिया मे अपने अस्तित्व को बहुत शीघ्रता के साथ प्रतिष्ठित करना था। इसके लिए उसे कोई मार्ग शीघ्रगामी प्रतीत नही हुआ। बस इन्हीं सब विचारो ने उसे 'क्राईम' (Cnme) की दुनिया मे प्रवेश करने के लिए विवश कर दिया। अत अपराध की दुनिया मे अनुराग शुक्ला का यह पहला ही प्रयास था, जिसस उसने 5000 रुपये प्राप्त किये थे। यह सोचते हुए वह फुटपाथ पर आगे बढ रहा था व मन म सोच रहा था कि बम्बई मे बिना पेसा क्या होने वाला ह। खाने के लिए रोटी ओर रहने के लिए स्थान भी नहीं मिलने वाला है। इसीलिए उसने ट्रेन म सो रही लेडिज (Ladies) के पर्स पर हाथ साफ कर लिया ओर उसम सफलता प्राप्त की थी।

बबई फुटपाथ पर चलते हुए किसी रेस्टोरेन्ट (Restaurent) को देखकर अनुराग वहा पहुचा और पहले पेट भर भोजन किया। उसके बाद जिन्दगी मे पहली बार ही सही, सिगरेट को मुह पर लगाया और उसका धुआ उडाते हुए अगली योजना की तैयार करने मे लगा। इसमे तो कोई शक नही कि अनुराग शुक्ला अत्यन्त स्मार्ट (Smart) प्रतिभाशाली नौजवान है। उसकी प्रतिमा जो सद् जीवन की ओर लगने वाली थी उसे समाज के आर्थिक अभिशाप ने अपराध की ओर लगा दिया। अनुराग ने सबसे पहले तो अपना नाम बदला। अनुराग शुक्ला की जगह वह रायबहादुरसिह बन गया। गाव भी बदला तो नाम भी बदल लिया। गाव और नाम ही नही जीवन की सारी शैली बदल ली। अभी गर्मी का टाईम (Time) था और बरसात भी चालू नही हुई थी अत रात्रि मे सोने की तो इतनी समस्या नही थी। यही कही जूहू चोपाटी समुद्र के किनारे सो लेता था और सवेरे ही वह अपने काम मे लग जाता था। उसने अपनी योजना के अनुसार भीड भरी ट्रेनो और बसो मे चलना इधर–उधर यात्रा करना चालू किया। कभी बाद्रा से चर्चगेट तो कभी दादर से कल्याण इस प्रकार कभी यहा तो कभी वहा। इन ट्रेनो व बसो की भीड मे दिनभर मे वह मौका मिलने के साथ ही दो चार के पॉकिट तो मार ही लेता था। इस प्रकार हजार पाच सौ रुपये रोज उसके हाथ लगने लगे। कभी–कभी कुछ भी नही मिलता। लेकिन जितना भी पैसा उसके हाथ लगता वह उसे फिजूल खर्च नही करता था। उसे जोड–जोड कर कुछ नया काम करने की धुन थी। हा एक रामपुरी चाकू और एक पिस्तौल जरूर उसने अपनी सुरक्षा के लिए खरीद ली थी। जो हर वक्त वह अपने पास रखता था। कुछ भाग्य का प्रबल सयोग ही समझिये कि 5–6 महिने मे ही उसने इस छोटी मोटी लूटपाट मे एक लाख रुपये इकट्ठे कर लिये और एक सैकिण्ड हेण्ड (Second Hand) कार खरीद ली। बस खुद ही ड्राईविग (Driving) सीखकर उसे किराये पर चलाने लगा। किन्तु किराये पर चलती गाडी से कितना पैसा प्राप्त हो सकता था। किन्तु वह कई बार शरीफ आदमियो को मौका देखते ही पिस्तौल दिखाकर डरा धमकाकर लूट लेता था। जब उसके पास कुछ पैसा और जुड गया तब वह बबई के अधेरी मे धाराबी झोपडपट्टी मे 500 रुपये महिने मे किराये से एक खोली ले ली। अब वह कभी खोली पर तो कभी कार मे राते गुजारने लगा।

झोपड पट्टियो मे भी अपराधी तत्त्व के लोग कुछ ज्यादा ही रहा करते थे। जिसके कारण दुर्बल लोगो पर कहर बरसाया जाता था। कहावत है 'समरथ को नही दोष गुसाई' समर्थ व्यक्ति के लिए दोष नही रह जाता।

रायबहादुर के तो कोई परिवार था नहीं वह अकेला ही था। इसलिए उसे तो आगे पीछे की वहा कोई चिन्ता नही हुआ करती थी।

झोपडपट्टी मे खाली–खोली पानी पहुचाने के लिए पाइप लाइन (Line) नही लगी हुई थी। वहा तो झोपड पट्टी के बीच एक ट्यूबवेल (Tube-Well) खुदा हुआ था। सभी लोग वहीं से पानी भरा करते थे। वहा पर भी मैं पहले, मैं पहले के चक्कर मे कई बार सिर फूट जाया करते थे। एक बार एक शिवा नामकी भोली–भाली लडकी जिसके पिता घर पर बीमार थे। मा उसकी सेवा में लगी थी। वह लडकी पानी भरने आई। उसके 15 मिनिट बाद एक हालिदा नामक तेजतर्रार लडकी आई। वह शिवा को पानी भरते हुए एक तरफ हटाकर स्वय पानी भरने लगी। शिवा कहती रह गई कि नम्बर मेरा हे पर वह कुछ भी सुनने को तैयार नही। जब उसे ज्यादा कहा गया तो हालिदा ने उस मासूम शिवा को दो चार थप्पड की ओर मार दी। धक्का देने से उसका मिट्टी का घडा भी फूट गया। वह बिचारी रोने लगी। ठीक उसी समय रायबहादुर अपने घर से निकलकर काम पर जा रहा था। उसन जब यह अन्याय देखा तो उसने हालिदा को फटकारा और उसे अपना घडा हटाने के लिए विवश कर दिया। हालिदा तेज बोलने लगी– ओ हराम जादे। तू कौन होता है, हमारे बीच मे आने वाला जानता नही मैं कौन हू। में इस झोपडपट्टी के दादा सलीम की बहिन हू। मुझे छेडने की इस झोपडपट्टी मे किसी की भी हिम्मत नही है। तुम नये–नये आए हो। मालूम नही हे तुम्हे। कहीं मेरे भाई के सामने आए तो मारे जाओगे।

रायबहादुर उन गीदड भभकियों से कहा डरने वाला था। वह बोलो– ए छोकरी। जबान सभालकर बोल। हराम जादा मैं हू या तू है। यह समय बता देगा। तू अपने भाई का मुझे भय बता रही है तो सुन ले तेरे भाई जेसे 5660 आ जाय तब भी मेरा कुछ नहीं बिगाड सकते। उस जैसे लफगे को में जेब मे रखता हू। यह कान खोलकर सुन ल। अब इस झोपडपट्टी मे हम चाहेगे वो होगा।

यह कहते हुए रायबहादुर आगे बढ गया। लेकिन हालिदा के अभिमान को जबर्दस्त चोट लगी थी। उसने अपने भाई सलीम को सारी बात बताई उसे सुनकर उसका गुस्सा सातवे आसमान पर चढ गया। उसन सोचा यह सिर फिरा कौन आ गया। वह समझता क्या हे अपने आपको फन उठान के साथ ही कुचल डालना जरूरी हे। उसने उसी वक्त योजना बना ली। अपने दोस्त, करीम, जहीन किरीट अब्दुल, रहमान सलमान विनोद राजेश आदि सबको अपनी योजना बतला दी।

ज्योही रात को कोई 12 बजे रायबहादुर अपनी झोंपडी पट्टी पर आया तो एक तरफ से उस पर लकडी का जबर्दस्त प्रहार हुआ। लेकिन प्रहार होने से पहले ही आपत्ति उसने सिर पर चोट लगने से पहले ही लकडी को हाथ मे पकड लिया और बिजली की फूर्ति के साथ उसी लकडी से सामने वाले पर प्रहार कर उसे भूमि चटा दी। इस बीच दूसरे लोगों से भी अपना बचाव करता हुआ गजब का चमत्कार दिखाया। किसी को पैरो से तो किसी को लाठी से तो किसी को हाथो से ऐसी चोट पहुचाई कि सभी बेहोश होकर भूमि पर पडे तडफडाने लगे। इस मारामारी मे उसे भी चोटे लगी थी। लेकिन उसकी इसे चिन्ता नही थी।

रायबहादुर बडे इत्मीनान के साथ बोला– दोस्तो ! और भी कुछ कर गुजारी करने की इच्छा हो तो बोलो। सभी को रायबहादुर के दिमाग और ताकत पर बडा आश्चर्य था। वे सोचने लगे कि इस अकेले ने हम जैसो को पटखनी मारी है। ऐसे व्यक्ति से भिडना खतरे से खाली नहीं होगा। शक्ति के सभी पुजारी होते हैं। उन्होने भी रायबहादुर से उसी वक्त सधि कर ली, दोस्ती कायम कर ली। बल्कि यही नही उन सबने उसे अपना कमाण्डर मान लिया। जो तुम कहोगे वही होगा। बस फिर क्या था। अब पूरी धारावी झोपडी पट्टी मे राय बहादुर का नाम गूजने लगा। सभी उसका लोहा मानने लगे।

रायबहादुर ने झोपडी पट्टी में हो रही हिसा एव अन्याय पर ताकत के साथ कडे प्रतिबध लगा दिये। उसका यह निर्देश जारी हो गया कि कोई भी झोपडीपट्टी वाले इस बस्ती मे किसी भी व्यक्ति के साथ धोखाधडी नहीं करेगे। किसी भी लडकी के साथ बदसलूकी से पेश नहीं आएगा। ईमानदारी के साथ सारे काम करने होगे। कहीं भी अराजकता आई तो रायबहादुर एव उसकी गैग के लोग कडे से कडा जो भी दण्ड देगे, वह मजूर करना होगा। रायबहादुर की इस घोषणा से झोपडीपट्टी वासियों की जिन्दगी मे अद्भुत परिवर्तन आ गया। अन्याय का राज्य खत्म हुआ। सभी मे भाई चारा कायम हो गया। कोई किसी की भी लडकी के साथ छेडखानी करना ही भूल गया। क्योकि रायबहादुर का गहरा आतक जो सब पर था। हर अन्यायी व्यक्ति उससे घबराता था। झोपडीपट्टी के बाहर रहने वाले व्यक्तियो को लूटा–खसोटा जा सकता है। पर झोपडियो के लोगो को नही। बाहर तो रायबहादुर खुद भी यही काम करता था। इस व्यवस्था के कारण झोपड पट्टी मे रहने वाले सभी लोग उसका अहसान मानने लगे। क्योकि अब उन्हे किसी अपराधी तत्त्व का कोई डर नही रह गया था। 

रात्रि के कोई बारह बजे थे। भायदर मे समुद्र किनारे एक सामान्य–सी होटल के ग्राउण्ड फ्लोर (Ground Floor) के किसी कमरे मे कुछ आदमियो की कहा कही के साथ घुसर–फुसर भी चल रही थी। होटल के बाहर ही रायबहादुर अपनी कार की पिछली सीट पर ऊघ रहा था। उसे जब घुसर–फुसर सुनाई दी तो लगा कि कोई महत्त्वपूर्ण बात हो रही है। सुनना चाहिये क्या बात कर रहे हैं लोग। वह दिवाल के पास गया और खिडकी से सटकर खडा हो गया ताकि कमरे के भीतर वालो को कुछ आभास न हो। अब वह सुनने लगा। आवाज भी साफ आ रही थी। अन्दर चार श्रीमत परस्पर बात कर रहे थे। सेठ हजारीमल ने लक्ष्मीचन्द से कहा–सुनो दोस्त ! इस बार तो करोडो का लाभ होने वाला है।

वह कैसे ? सुनो विदेश से जो मालवाही जहाज आ रहा है उसमे अपना कोई 20 करोड का माल है। उसमे अपने का 50 प्रतिशत कमाई है। कल रात्रि को 11 30 बजे वह अपने सकेत के अनुसार उधर से गुजरेगा तो हमे कोई दस बजे तक अपने गतव्य तक पहुच जाना है क्योकि उबड खाबड रास्ते को पार करने में 1½ घटे जो लग जाएगा। फिर सामान जहाज से उतारना और झोपडी मे रखकर व्यवस्थित करने मे भी समय लगेगा। अत कल रात काफी काम रहेगा। अलर्ट (Alert) रहना जरूरी हे। इस प्रकार का निर्णय लेकर चारो साथ निकले। रायबहादुर तो पहले से ही सावधान था। वह फिर पहले की तरह अपनी कार मे ऊघने लगा। उन चारो सेठो मे से तीन दादर की तरफ जाने वाले थे। जिनका एक ही कार मे चले जाना सभव था। पर एक को ठाणा जाना था। उसके लिए टेक्सी की जरूरत थी। उसने देखा–यह टैक्सी पडी है। ताली बजाकर आवाज लगाई तो वह बहादुर हडबडाता हुआ उठा। सेठ लक्ष्मीचद बोला– सुनो– ठाणा चलना हे।

टैक्सी वाला बोला– रात्रि के 12½ बज रहे हें। डबल चार्ज (Double Charge) लगेगा।

सेठ बोला– ठीक है गाडी बढाओ आगे। रायबहादुर ने गाडी स्टार्ट (Start) की गियर (Gear) मे डालकर आगे बढा दी। आधा घण्टा लगातार दौडने के बाद गाडी ठाणा पहुच गई। सेठ के निर्देशानुसार उसे रायबहादुर ने चौराहे तक छोड दिया। सेठ लक्ष्मीचद बाई तरफ मुडता हुआ एक पतली

गली मे घुस गया। चुस्त–दुरुस्त रायबहादुर भी अपनी टैक्सी को एक तरफ खड़ा करके उसका पीछा करने लगा। सेठ लक्ष्मीचद ने पतली गली पार करके चौडी रोड पर दाई तरफ 57 नम्बर बगले के बाहर जाकर बैल बजाई। भीतर से खाकी वर्दी पहने नौकर आया। उसे रोबीली आवाज मे सेठ बोला– बहादुर ! यह क्या बदमाशी है। तुम्हे पूरी रात बाहर चौकसी करने के लिए रखा है न कि अन्दर बगले मे जाने के लिए। तुम अन्दर कैसे थे ? बहादुर बोला– मालिक ! मैं तो बाहर ही था। पर पर ।

यह पर पर क्या होता है। सच बताओ अन्दर क्या कर रहे थे। सेठ बोला।

वाचमेन से कुछ कहते नहीं बन पाया। इतने मे तो लक्ष्मीचद की लडकी बाहर आई। उसने कहा– इसे तो मैंने बुलाया था। क्योकि रात को ए सी चलते–चलते खराब हो गया था। अब इतनी रात कोई कारीगर ठीक करने को आने के लिए तैयार नही था। इधर गर्मी कितनी तेज पड रही है। मैं झुलस सी गई तब वाचमेन बोला– मुझे ठीक करना आता है। मैंने कहा– जल्दी से ठीक कर दो। इसलिए यह मेरे रूम का ए सी ठीक कर रहा था। बात इस तरह सफाई से प्रस्तुत की गई कि उन दोनो के वासनात्मक कुकृत्य को महाघाघ लक्ष्मीचद भी समझ नहीं पाया। वह वाचमेन को बाहर खडे रहने का आवश्यक निर्देश देकर अन्दर चला आया। सत्य है कडवे बीज से मीठे फल की आशा नही रखी जा सकती है। यदि बाप स्वय ही दुराचारी हो तो सतान के सदाचारी होने की कल्पना केवल स्वप्न की तरह व्यर्थ है।

इधर रायबहादुर छाया की तरह सेठ लक्ष्मीचद के पीछे लगा हुआ था। उसने सेठ को बगले मे घुसते हुए साथ ही नौकर को डाटते हुए एव उसकी लडकी को भी लाईट के प्रकाश मे देख लिया। इसी बीच नौकर का नाम बहादुर और लडकी का नाम निशा है, यह भी जान लिया।

सेठ के भीतर प्रवेश करने के बाद रायबहादुर ने सेठ का बगला नम्बर भी नोट कर लिया। अब रायबहादुर पुन अपनी टैक्सी के पास पहुच गया। और टैक्सी को किसी टैक्सी स्टेण्ड (Taxi Stand) पर लगाकर वह फिर से पिछली सीट पर सुस्ताने लगा। लेकिन अब उसे नीद नही आ रही थी। वह अपनी आली योजना पर बडी ही जागरूकता के साथ विचार करने लगा। उसने उन चारो सेठों की बातो के हर पहलू पर चिन्तन करना प्रारम किया। उसे लगा कि चारो सेठ बड नामी तस्कर हैं। इनका देश विदेश मे लम्बा जाल फैला हुआ है। कस्टम (Custom) विभाग से लेकर मिनिस्टरी (Ministery)

तक भी इनके हाथ मे रहती है। पानी का जहाज (Ship) के कर्मचारियो से भी मिली भगत है। इसीलिए 20 करोड का दो नम्बर का माल आज रात को 11 बजे आ रहे जहाज से आने वाला है। जिसे कुछ किलोमीटर की दूरी पर उतार लिया जाएगा। रायबहादुर सोचने लगा– जहाज कहा से आ रहा है और कितने किलोमीटर की किस दिशा की दूरी पर माल उतरेगा। बहुत गहन सोच के बाद ही उसे समझ मे आया कि यह जहाज सिगापुर से आ रहा है और भायदर की तरफ से आएगा। अब माल किस जगह उतरेगा ? तो रायबहादुर ने सोचा कि 1½ घटे मे उस जगह तक जीप में पहुचा जा सकता है। जैसा कि वे चारो बोल रहे थे और जीप उबड–खाबड रास्ते मे भी 40 कि.मी प्रति घटा की रफ्तार से चल सकती है। ऐसी स्थिति मे 60 कि.मी की दूरी होनी चाहिए। आईडिया (Idea) ठीक जमेगा। अब रायबहादुर सोचने लगा। क्यो न इन चारो सेठ को ब्लेकमेल (Black mail) करके अपना उल्लू सीधा किया जाय।

यह सब योजना बनाते–बनाते उसे 2–3 घटे के लिए नींद आ गई। जब वह जागा तो फिर उसके मस्तिष्क ने अपनी योजना को मूर्त रूप देने के लिए सारी व्यवस्था बिठाने में गति देना प्रारम्भ किया। नाश्ता करने के बाद रायबहादुर मनीष मार्केट (Manish Market) अर्थात् चोर बाजार मे पहुच गया। वहा सस्ते भाव मे महगी से महगी चीज मिल सकती है। एक ऑटोमेटिक (Automatic) ढग से चलने वाला केमरा खरीदा। एक छोटी सी आधुनिक सिस्टम (System) से चलने वाला टेपरिकार्डर (Tape Recorder) खरीदा। साथ ही साईलेन्सर (silenser) लगी पिस्तौल भी खरीद ली। सारी सामग्री खरीदने के बाद वह एक बार अपनी खोली पर पहुच गया। वैसे दो–दो तीन–तीन दिन तक भी वह अपनी खोली पर नही आता था। यह पडौसियो को मालूम था। अत उसके आने न आने से कही कोई आश्चर्य महसूस नहीं होता था।

आज वह तीन दिन बाद अपनी खोली पर आया था। अन्दर गया। और अपनी खाट पर सोकर अगली योजना को सफल बनाने के लिए चिन्तन करने लगा क्योंकि किसी भी पहलू पर फाल्ट (Fault) होने पर रायबहादुर को अपनी जान का खतरा था। अत वह हर पहलू पर सूक्ष्मता से सोचा करता था।

सायकालीन 5 बजे बुलेटप्रुफ (Bullet proof) मोटर साइकिल किराए पर लेकर रायबहादुर सिगापुर की तरफ से आ रहे पानी के जहाज के साथ साथ समुद्र के किनारे–किनारे उसे चलाने लगा। क़रीब घटा सवा घटा चलने

के बाद वह सकेतित स्थल पर पहुच गया। उसे चार झोपडिया दूर से नजर आने लगी वह समझ गया यही स्थल है जिसके लिए सेठ लक्ष्मीचन्द रात को ईशारा कर रहा था। उसने झोपडी के पास आकर उसका सूक्ष्मता के साथ अवलोकन किया। उसे देखकर आश्चर्य हुआ कि झोंपडी बाहर से जरूर घास फूस की है किन्तु भीतर मे पक्की चूने पत्थर की बनी हुई है। एक झरोखा भी है। लेकिन इस समय बद है।

रायबहादुर को भीतर होने वाली बात को भी टेप करना था। अत उसने झोपडी के मुख्य द्वार पर जहा जाइट पाइट (Joint Point) था। वहा झोपडी के बद होने के बावजूद भी कुछ छिद्र बना रहता है। उस पाइट (Point) पर टेपरिकार्ड (Tap Record) का क्लीप (Clp) लगा दिया। जो की रिमाट से सेट था। अत दूर से ही उसे चालू किया जा सकता था। फिर उसने झोपडी के मुख्य द्वार के सामने कुछ ही दूरी पर एक झुरमुट था वहा बैठकर मुख्य द्वार पर क्या हो रहा है, इसका पूरा ध्यान रखा जा सकता था। झोपडी मे बैठा आदमी आसानी से झुरमुट के भीतर की ओर नहीं देख सकता था पर झुरमुट मे बैठा व्यक्ति झोंण्डी मे देख सकता था। सब कुछ सावधानी के साथ निश्चय कर लेने के बाद रायबहादुर उस झुरमुट मे सतर्कता के साथ बैठ गया और सिगरेट का धुआ उगलने लगा।

इधर वे सफेद पौश सेठ कहलाने वाले चारों ने सेठ रात्रि के 8 बजे अपनी कमाण्डर (Commander) जीप ली। उनमें से एक ड्रायविंग (Driving) करना लगा। उबड–खाबड जमीन से एव पत्थर से गाडी को बचाता हुआ। मद मद प्रकाश मे ही गाडी आगे बढाये जा रहा था। हाथ सधे हुए होने से कही कोई भारी झटका नहीं लगा था।

करीब 9½ बजे चारो सेठ कमाण्डर (Commander) जीप द्वारा मेन पाइट (Main Point) पर पहुच गए। यद्यपि चारो निर्भय थे। उनकी दृष्टि मे यह सुरक्षित स्थान था। फिर भी जागरूक थे। बडी सावधानी से आगे बढते हुए झोपडी के पास पहुचे। सब कुछ यथावत लगा। कही कोई अनहोनी नहीं थी। इधर रायबहादुर ने उनके आने से पहले ही 3–4 फर्लांग तक मोटर साईकिल के निशान मिटा दिये थे। ताकि उन्हे किसी तरह की शका न हो। ऐसे भी वह मोटर साईकिल को जीप वाले मार्ग से नहीं लाकर अन्य मार्ग से लेकर आया था। जिस मार्ग से जीप नही आ सके। ताकि उन्हे लाईट (Light) व प्रकाश मे भी किसी वाहन के जाने का कोई निशान ही नजर नहीं आए और रायबहादुर छिपा भी ऐसी जगह था। जहा जल्दी से किसी की

दृष्टि नही पड सकती।

चारों सेठ बडे इत्मीनान के साथ झोंपडी खोलकर अन्दर में चार्जेबल लाइट (Chargeble Light) जलाकर बेठकर गप्पे मारने लगे। अब उन्हें सिगापुर से आने वाले जहाज का इन्तजार था जो कि ग्यारह बजे आने वाला था।

रायबहादुर बडी सावधानी से भीतर मे हो रही हर गतिविधि से दूर से ही दृष्टि जमाए था। रायबहादुर दूरबीन साथ लाना भी नही भुला था। पेन्सिल टार्च (Pencil Torch) को दूरबीन से सेटकर वह उस दूरबीन से बडे आराम से भीतर होने वाली गतिविधि को देख पा रहा था। करीब एक घटे के बाद समुद्र की छाती पर दूर से आ रही भारी भरकम सीप नजर आने लगी। जहाज ज्यो–ज्यो नजदीक आ रहा था त्यो–त्यो लाल लाईट (Light) जल बुझ रही थी। इधर ये चारों सेठ तस्कर भी सावधान हो गए थे। उन्होने भी अपनी तरफ से हरी लाईट (Light) जला बुझाकर लाईन क्लीयर (Line Clear) होने का सकेत दिया। इसके तुरन्त बाद पास वाली झोपडी से एक छोटी सी पनडुब्बी निकाली ओर उसे पानी मे उतारकर दो सेठ उसे चलाते हुए सिगापुर से आ रहे जहाज के पास ले गए। उसके पिछले भाग से उसे जोड दिया गया। जहाज बडी ही मद गति से सरकने लगा। इसी बीच जहाज के कर्मचारी दिलीप व मुदित ने सिगापुर से आए दो नम्बर के माल के पैक बद बक्से पनडुब्बी मे डालने लगे। कोई दो मिनिट मे सारा माल पनडुब्बी मे डालकर उसका बडे जहाज से सबध काट दिया गया। शिप बडी तेजी के साथ आगे चल पडा ओर पनडुब्बी को दोनो सेठ खेते हुए किनारे ले आए। किनारे लगने पर पहले से खडे दो अन्य सेठो ने माल को पनडुब्बी से निकालना प्रारभ किया। और बोरे उठा–उठाकर झापडी म ले जाकर डालने लगे। जब सारा माल झापडी मे पहुच गया। तब उस पनडुब्बी को पानी से निकाला और फिर पास वाली झापडी मे रखकर उरो बद कर दिया। अब वे मुख्य झोंपडी मे आकर बोरे खोलने लगे ओर माल बाहर निकालन लगे। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को माल गिना रहा था। उराम वह बोल रहा था सोने की छडे 500, घडिया 500 केमरे 100 हीरो के हार 100 मोतिया के सेट 200 ऐसे सभी माल को निकाल कर गिना रहे थे ओर उनकी कीमत बतलाकर माल का हिसाब लगा रहे थे। उनकी याजनानुसार 20 कराड के माल मे 10 करोड का प्रॉफिट (Profit) स्पष्ट नजर आ रहा था।

रायबहादुर पूरी तरह जागरूक था। जब ये चारा बात करने लग थे। ठीक उसी वक्त रिमोट (Remote) से उसने टेप रिकार्डर चालू कर दिया

वातानुकूलित शानदार ऑफिस मे सेठ लक्ष्मीचद सिगार पी रहा था। इतने मे बाहर से वाचमेन आया उसने कहा कि कोई नोजवान आपके नाम से यह लिफाफा दे गया है। ऐसा कह कर वह लिफाफा सेठ लक्ष्मीचद की टेबल (Table) पर रखकर वह बाहर चला गया। सेठ ने भी आश्चर्य मिश्रित जिज्ञासा के साथ वह लिफाफा खोला तो उसे एक पत्र हाथ लगा उसमे लिखा था– ' सेठ लक्ष्मीचद ! तुम ऊपर–ऊपर से जाने माने हीरे जवाहरात के व्यापारी हो लेकिन अन्दर मे क्या हो ? यह बात शायद ही कोई जाने कि तुम इस देश के गद्दार जाने माने तस्कर हो। अपने स्वार्थ के पीछे इस देश को लूट खसोट कर खाने वाले हो। इसके साथ एक टेप कैसिट और कुछ छाया चित्र भेज रहा हू। इन्हे बडे इत्मीनान से देख लेना। जिससे तुम्हारी काली करतूते तुम्हारे सामने आ जाएगी और कैसिट को भी सुन लेना। जिसमे तुम्हारी अत्यन्त विवादास्पद बाते टेप है। अभी तो यह तोहफा तुम्हारे पास ही भेजा जा रहा है, पर हमारी, बात न मानने पर यही तोहफा देश की गुप्तचर एजेन्सी (Agency) सी बी आई को और पत्रकारो को भी भेजा जा सकता है जिसके बाद तुम्हारे बचने की कहीं कोई जगह नहीं होगी। यदि तुम्हे बचना है तो बिना किसी होशियारी के बोरीवली नेशनल पार्क (Borivali National Park) के गाधी धाम पर राईट की दिशा मे एक पत्थर के पास एक करोड रुपये भरकर ब्रीफकेश (Briefcase) रख दो तो तुम्हे कोई खतरा नही होगा। अन्यथा तुम तो क्या तुम्हारे परिवार का कोई भी सदस्य नही बच सकेगा। खबरदार !!! यदि पुलिस को या अन्य किसी गुडा तत्त्व को सूचित करने की कोशिश की तो तुम्हे कहीं का भी नही रखा जाएगा। तुम्हारी जिन्दगी और मौत, तुम्हारे हाथ मे। हमारे आदमी तुम्हारी और तुम्हारे साथी बिहारीलाल, कजोडीमल, मुरारीलाल पर भी कदम–कदम पर कडी निगरानी रखे हुए हैं। जरासे ईशारे पर वहीं ढेर कर दिये जाओगे।

तुम्हारा हित चिन्तक

यह पढते ही तो सेठ लक्ष्मीचद को ए सी (A C) मे भी परीना छूट गया और वह घबरा उठा। उसी घबराहट के बीच जब उसने फोटो दखे तो अन्दर तक काप उठा। यह वे चित्र थे जिसमे शिप से माल उतारकर पनडुब्बी मे डाला जा रहा है। दिलीप मुदित कर्मचारिया के फोटो भी साफ है। फिर

पनडुब्बी से माल झोपडी मे पहुचाया जा रहा है। यही नही सारे माल को खाल–खोलकर अलग किया जा रहा है, उन सबके भी छाया चित्र है। करीब 30 फोटो थे। जो कि लक्ष्मीचन्द सेठ के डराने के लिए पर्याप्त थे। जब कैसेट सुनी तब तो सेठ लक्ष्मीचन्द की रही सही हिम्मत भी चूक गई। उस कैसेट मे उन चारो की साफ आवाजे आ रही है कि 500 सोने की छडे है, घडिया 500 कैमरे 100 हीरो के हार, 200 मोतियो के सेट आदि । 20 करोड का माल 10 करोड का प्रॉफिट । सारी बाते सेठ लक्ष्मीचद एव उनके साथियो की आवाज मे टेपरिकार्डर बोलता जा रहा था।

बस बस ! अब तो सेठ लक्ष्मीचद की आखो मे अधेरा छाने लगा। अब तक की गई हराम की कमाई का परिणाम भविष्य मे अधेरे के रूप मे सामने आने लगा। वह समझ गया कि हमारे पीछे कोई बहुत ही शातिर एव तेज तर्राट आदमियों की गेग लगी हुई हैं। यदि जरासी भी गलत हरकत की तो सपत्ति ही नहीं जान से भी हाथ धोना पडेगा। पुलिस मे चले गए तो रही सही इज्जत भी जाएगी। बहुत देर वह होश मे आया तो तुरन्त ही अपने साथी मुरारी बिहारी एव कजोडीमल को फ़ोन किया और जल्दी से जल्दी आपातकालीन मीटिग (Meeting) करने के लिए होटल ताज का 520 नम्बर का कमरा बुक किया गया। आधे घटे मे ही चारो ताज होटल पहुच गए। कमरा नम्बर 520 मे। सभी की जेबो मे साइलेन्सर (Silenser) लगी ऑटोमेटिक (Automatic) रिवाल्वर (Revolver) थी। पता नहीं कौनसा खतरा कब सामने खडा हो जाय।

कमरे को पूरी तरह अन्दर से बद कर दिया गया। सेठ बिहारीलाल ने कहा– लक्ष्मीचन्द ! तेरे आज इतने होश क्या उडे हुए हैं। ऐसी क्या घबराहट हो गई है। क्यो तुमने आपातकालीन मीटिग बुलाई है ? वह पता नही प्रश्नो की कब तक बौछार करता रहता। इससे पहले ही मुरारी बोला–यार तुम भी कोई आदमी हो। बिचारे लक्ष्मी को बोलने तो दो, आखिर यह चूहा किसी बिल्ली को देखकर इतना डरा–डरा सा हो गया। इतने मे कजोडीमल बोला– कोई बात नही मैंने इसकी बिल्ली को डराकर भगाने के लिए कई कुत्ते पाल रखे हैं। लक्ष्मीचद बोला– यार तुम अपने आपको पता नही क्या तीसमारखा मानने लगे हो दुनिया मे एक से एक धुरधर बैठे हुए हैं। रावण अपने को अजेय मानता था, वह भी मारा गया। रावण की सोने की लका भी मिट्टी मे मिल गई। केवल अपनी शक्ति का गुमान मत करो, तुम लोगों से भी दमदार दिमागी लोग दुनिया मे बैठे हैं। यदि पुलिस के कुत्ते होते तो मै

उन्हे कच्चा ही चबा जाता। पर यह तो कुत्ता नहीं शेर है शेर। अभी तो तूने देखा ही कहा है। देखोगे तो पता चल जाएगा। तो यार ! फिर बतादे ऐसा कोनसा शेर पैदा हो गया है, इस अपराध जगत मे। जो हम जैसो को भी आखे दिखाने लगा है। बिहारी के कहने पर सभी शात होकर लक्ष्मीचद की अगली बात सुनने लगे।

सेठ लक्ष्मीचद ने वह पत्र उनके सामने रख दिया। लो पहले इसको पढलो। जब तीनो ने पत्र पढा तो उन्हे लगा जैसे बिजली का नगा तार छू लिया हो, एकदम उछल पडे। फिर जब फोटो देखे और कैसेट देखी तो उनका भी लक्ष्मीचन्द जैसा हाल हो गया। बल्कि उससे भी ज्यादा बदहाल। एक बोला– यार ! वाकई यह तो बहुत ही खतरनाक खेल है। कैसे पार पडेगी यह बात। लक्ष्मीचद बोला– है इस शेर को पिजरे मे डालने की ताकत। यह तो तुम जैसो को कच्चा ही चबा जाय ऐसा है। हा यार ! मान गए इस बहादुर को। समझ मे नहीं आया उस जगल मे कहा से उसने अपनी आवाज टेप कर ली। यही नहीं फोटो भी ले लिए। लगता है उसकी गेग मे 2–4 आदमी न होकर 10–20 आदमियो की गेग लगती है। अन्यथा इतना बडा जाल नही रचा जा सकता था।

बिहारीलाल बोला दोस्तो ! यह तो हो गया सो हो गया अब करना क्या है, यह सोचने वाली बात है।

मुरारी बोला– सोचना क्या है – अभी तो उसे कहे अनुसार उसे एक करोड रुपये दे देना चाहिए। अन्यथा ऐसे ही बर्बाद हो जाएगे। माग कोई बहुत बडी नहीं है, यह तो 5 या 10 करोड माग ले तो भी देना पडे। खैर 1 करोड रुपये देकर अभी तो अपना पिण्ड छुडाया जाय। फिर भविष्य मे ऐसी ब्लेकमेलिग (Blackmailing) न हो इसका पुख्ता इन्तजाम करना होगा। सभी ने रायमशविरा करके यह निर्णय लिया। इसमे किसी भी प्रकार की चिटिग नहीं करना है। यदि गफला करने की कोशिश की तो खतरा बढ सकता है। चारो ने मिलकर उसी वक्त 25–25 लाख रुपये का इन्तजाम किया। 500–500 रुपये के नोटो की गडिडया कोई 200 गडिडया बनाई गई। उन्हे एक ब्रीफ केश (Briefcase) मे भरकर निर्देशानुसार ठीक रात्रि 10 बजे वे अपनी मर्सिडिस (Mercedes) गाडी मे बैठे और बोरीवली नेशनल पार्क की ओर बढते चले गए।

रायबहादुर ने जाल तो इस तरह बिछाया कि उन्हे हकीकत मे इस जाल के भागीदार 10–20 आदमिया का अहसास होने लगा। जबकि यह थी

एक ही आदमी की दिगामी साजिश। जिस मे बडे–बडे तीस मारखा भी फस गए। रायबहादुर कोई रात्रि की 10 बजे के बाद मे ही गाधीधाम से कोई 200 मीटर की दूरी पर शस्त्रो से लेस होकर बैठ गया। जहा से निर्देशित स्थान नजर आ सकता था। यद्यपि उसे विश्वास था कि जिस तरह का जाल बिछाया गया है उसमे तो कही गडबड होने की समावना नहीं है। फिर भी सावधानी रखना जरूरी था। ठीक 11 बजने के 2 मिनिट कम मे एक छाया उभरती नजर आई और वह निर्देशित पत्थर की ओर बढ रही थी। रायबहादुर को समझते देर नहीं लगी कि यही लक्ष्मीचद है। वह उसी रेज (Range) मे पिस्तोल ताने देखता रहा। कहीं कोई गलत हरकत तो नहीं हो रही है ? उस छाया ने पत्थर के पास पहुच कर उसके एक किनारे ब्रीफ केश (Brief-case) रख दिया। और बडी सावधानी के साथ वह छाया गाधी स्मारक की ओर बढती चली गई। कुछ दूरी पर जाने के बाद मर्सिडिस गाडी मे बैठकर साथ रवाना हो गए। कही कोई गडबड नही फिर भी इत्मीनान के तौर पर कुछ देर तक इन्तजार करना जरूरी था। रायबहादुर के दिमाग मे एक आशका यह भी थी कि हो सकता है– बिफकेश मे रुपये न होकर टाइम बम हो और उठाते ही फट जाय तो मारा जाऊगा। अत एक घण्टे की लगातार प्रतीक्षा के बाद कही कोई अघटित नहीं हुआ, तब वह धीरे–धीरे उस पत्थर की ओर बढने लगा। पत्थर के पास पहुचकर पहले उसने ब्रीफकेश को अपने ढग से जाच की। जब उसे कही कोई गडबड नजर नहीं आई। तब वह उसे उठाकर एक बडे पत्थर की ओट मे बैठकर खोला। पेन्सिल टार्च से देखा तो मालूम हुआ कि 500–500 के नोटो की गडिडयो से भरा है। देखते ही उसकी आखो मे एक चमक उतर आई। फिर भी वह बहुत सावधान था। उसे यह लग रहा था कि एक भी गलत कदम उठ गया तो जिन्दगी खतरे मे पड सकती है। अत उसने तुरन्त उसे बन्द करके आहिस्ता–आहिस्ता नीचे उतरना प्रारम्भ कर दिया। फिर सडक पर आकर त्रिमूर्ति के रास्ते से होता हुआ मैन गेट (Maingate) के पहले ही राजेन्द्र नगर की तरफ छलाग लगाकर बगीचाकार खाने की तरफ से आगे बढता हुआ मैन रोड (Main road) के उस पार खडी अपनी टैक्सी तक सुरक्षित पहुच गया। ब्रीफकेश को टैक्सी मे रखा और स्टार्ट (Start) करके चल पडा अपनी खोली की ओर।

❑

आज रायबहादुर की खोली मे उसके नये दोस्त करीम, जहीन किरीट, अब्दुल रहमान, सलमान, विनोद, राजेश की एक गुप्त मत्रणा होने लगी। रायबहादुर बोलो—दोस्तो ! नेक नीयति से चलकर कोई भी जिन्दगी में खास सफलता नहीं प्राप्त कर पाया है। ये बडे—बडे धनवान लोग जो आज फाइव स्टार होटलो मे एश कर हम जैसे गरीबो की मजाक उडा रहे हैं कहते हैं— " जिसकी लाठी उसकी भैंस"। ऐसी स्थिति मे हमे भी कुछ न कुछ बडी छलाग लगानी होगी। छोटे—छोटे पाकिट मारने से पेट तो भर सकता पर एश नहीं हो सकता। फिर हर समय खतरा भी बना रहता हैं इसलिए मैं सोचता हू कि अपन सब मिलकर एक जुट होकर कोई बडा काम करे जिसमे करोडो की आय हो।

रायबहादुर के मुख से ऐसी बात सुनकर सलीम बोला—दोस्त ! हम भी चाहते तो यही हैं। पर हमे ऐसा कोई काम मिल नहीं रहा है। जिससे करोडो का धन मिल जाए। यदि किसी व्यक्ति का किडनेप (Kidnap) करते हैं तो खतरा हर वक्त बना रहता है। 2—4 बार ऐसा किडनेप (Kidnap) करने पर पकडे जाने की पूरी समावना वनी रहती है। अत इतना बडा खतरा भी मोल नही ले पा रहे हैं।

इसी बीच विनोद बोला— दोस्तो ! हमे रायबहादुर की तीव्र बुद्धि पर भरोसा है। यदि वह कोई योजना बनाता है तो हम उसे करने को हर वक्त तैयार हैं। हमारी तो बुद्धि भी इतनी काम नही करती है। इतने मे राजेश बोल पडा—बिलकुल सही बात कही हे विनोद ने। रायबहादुर जब से इस धारावी झोपडपट्टी मे आया है तब से यहा के रहन—सहन मे भाइचारे मे काफी सुधार हुआ है। दिल और दिमाग दोनो से तेज हे दोस्त हमारा। इस प्रकार सभी अपने—अपने विचार रखते चले गए। अब रायबहादुर सबकी बात ध्यान से सुनता हुआ उनके शब्दो के आधार पर उनकी मानसिकता की परख कर रहा था। अत मे वह बोला—दोस्तो ! किसी भी काम को अन्जाम देने से पहले हमे सगठित होना जरूरी है। अन्यथा कोई भी काम पूरी तरह सफल नहीं हो सकता। सगठित होने के लिए कुछ बातो का दृढता के साथ ध्यान रखना जरूरी होगा। सभी दोस्त एक साथ बोले—बोला—बोलो जो भी तुम कहोग हम सबको सहर्ष मजूर है।

रायबहादुर ने अपनी बाते आगे बढाते हुए कहा सुनो प्रथम तो यह कि हम मे से कोई भी एक दूसरे के साथ जरा भी धोखा करने की कभी कोशिश नही करेगा। एक दूसरे के प्रति पूरी तरह ईमानदारी से रहना है।

दूसरी बात किसी के भी कभी कहीं पकडे जाने पर उसके छुडाने की एव उसके परिवार के पालन-पोषण की सारी जिम्मेवारी मेरी होगी। लेकिन उसकी जिम्मेवारी यह होगी कि पकडे जाने के बाद भी मरना मजूर करले पर अपने साथियो का नाम नही बताना और न ही हमारे अति गोपनीय स्थानों की जानकारी देना यदि किसी ने भी धोखा देने की कोशिश की तो उसे गोली से उडा दिया जाएगा। जिसे जो काम करने का निर्देश दिया जाएगा उसे वही काम पूरी हुशियारी के साथ करना होगा।

सभी दोस्तो ने रायबहादुर की बात ध्यान से सुनी और उसी अनुसार चलने की कसम खाई। और सबने मिलकर बहादुर गेग की घोषणा की जिसका सरदार रायबहादुर को घोषित कर दिया। रायबहादुर ने आठो दोस्तों को उसी वक्त 25-25 हजार रुपये दिये और कहा कि सभी अपने कपडे नये बनालो। बाल आदि बनाकर सवारकर अपटू डेट (Uptodate) हो जाओ। मवाली की तरह नही रहना है। अगला काम फिर कभी बताऊगा। सभी लडके सल्यूट मारते हुए खोली से बाहर हो गए। सभी की आखों मे एक उत्साह भरी चमक थी कि अब भविष्य सुनहरा है।

इधर रायबहादुर का पत्र शिप के कर्मचारी दिलीप, मुदित्त के पास पहुचा। उसमे लिखा था-दोस्तो ! तुम्हारी कार गुजारियो का छायाचित्र साथ मे है उसे भी देख लो। यदि तुमने हमारा काम नही किया तो हम तुम्हे कहीं का नही रखेगे। तुम्हारी ही नही तुम्हारे परिवार की जिन्दगी भी हमारे हाथो मे है यदि कुछ भी गडबड की तो सब कुछ साफ होते देर नही लगेगी। यदि तुमने हमारा भी काम किया तो सुख पाओगे। नही तो मार दिये जाओगे। समझलो तुम्हे क्या करना है। शाम को 6 बजे तुमसे फोन पर बात होगी। तैयार रहना। यह बात पक्की है कि हमारे पर भरोसा करोगे तो धोखा नहीं खाओगे।

दिलीप मुदित ने पत्र पढने के साथ ही जब अपने फोटो देखे तो [illegible] रह गए। ये वे फोटो थे जिसमे वे शिप से माल पनडुब्बियों मे डाल रहे थे। समझ लो यह तो भारी आपत्ति जनक फोटू है ये, अगर आगे पहुचा [illegible] तो नौकरी चले जाने का खतरा है। जेल मे भी जाना पड सकता [illegible] करे हम ?

मुदित ने दिलीप से कहा–सुनो । खतरा क्यो मोल लिया जाय। क्यो न हम उनकी बात मान ले और हमारे योग्य कोई बात हो तो या कोई काम हो तो कर देना चाहिए। ताकि हमे भी लाभ ही होगा, क्योकि उन्होंने लिखा है कि हमारे यहा धोखा नहीं खाओगे। सब निर्णय करने के बाद वे फोन का इन्तजार करने लगे। ठीक समय पर फोन आ गया– हेलो–हेलो के साथ ही आवाज गूजी। क्यो दोस्त क्या निर्णय है तुम्हारा।

दिलीप– वाकई तुम एक जोरदार चीज हो। दूर की कोडी मारी है। हम तुम्हारी बुद्धि के कायल हैं। जो भी तुम कहोगे हमारे योग्य होगा, वह हम करने को तैयार हैं।

दोस्तो । तुमसे मुझे यही आशा थी। इसीलिए मैंने तुम्हे पहले ही दोस्त मान लिया था। हम भी दोस्ती निभाएगे और तुम्हे भी निभाना है। अभी तो कोई खास काम नहीं है पर कुछ ही दिनो मे सिगापुर से शिप मे माल भरेगे उसे तुम्हे सुरक्षित रखना है। और बबई से 150 किलोमीटर की दूरी पर कुछ मछुआरो की नौकाए मिलेगी। वे जब सफेद झडा दिखाएगे तो उनकी नौका मे माल उतार देना। एक खेप मे तुम्हे 50 हजार रुपये दिये जायेगे।

मान गए दोस्त, मान गए तुमको। तुम भी बहुत ऊची चीज हो। रायबहादुर ने बडी हुशियारी से दिलीप और मुदित दोनो शिप कर्मचारियो को अपनी जाल मे फसा लिया। अब बहादुर करीम जो कुछ होशियार था उसको साथ लेकर सिगापुर, बैंकाक, हागकाग आदि पास के अनेक देशों की यात्राए की और करीब 50 लाख का माल खरीदा। उस सारे माल को इण्डिया की शिप मे चढा दिया गया और रायबहादु" और करीम फ्लाइट से पुन बाम्बे पहुच गए।

बॉम्बे से 150 कि मी दूर पर ही चार मछुआरो को 100–100 रुपये का लोभ देकर सारा माल उतरवा लिया गया। वहा पर जहीन व अब्दुल पहले से ही टैक्सी लेकर पहुचे हुए थे। उन्होने सारा माल टेक्सी मे उतरवा लिया। और रायबहादुर के निर्देशानुसार वे उस टैक्सी को लेकर सूरत पहुचे। वहा पर पहले से ही चार सुनार तैयार थे। जिनके माध्यम से उस सोने को गलाकर उसके हार बनवाए गए। और उन्हे बॉम्बे मे पहले से ही फिक्स शोरूम मे बेच दिये गए। प्रथम बार ही उन्हे इस व्यापार म करीबन 1 करोड का लाभ हुआ। सभी दोस्तो को आठ इम्पोर्टेड (Imported) आटोमेटिक कैमरे रिवाल्वर टेपरिकार्डर आदि दिलवा दिये गए। इसके साथ ही बॉम्बे कस्टम विभाग से सपर्क साधा गया। क्योकि शिप (Sheep) से माल लाने में महीना लग जाता है। व्यापार में तेजी नहीं आ सकती थी। अत कस्टम के अधिकारी से गुप्त

मन्त्रणा करके हर एक ट्रिप (Tnp) मे आने वाले माल पर 10 व्यक्तियो को 50–50 हजार रुपये बाध दिये। छोटे कर्मचारियो को 25–25 हजार रुपये देना निश्चित कर दिये। पायलेट और परिचारिकाओ तक के 10–10 हजार रुपये देने का आपस मे समझौता कर लिया। इस प्रकार विदेशी कस्टम विभाग से भी सम्पर्क साधा गया। उनके भी इसी रीति–नीति से रुपये बाध दिये। सुरक्षा का पुखता इन्तजाम कर दिया गया। कहीं कोई खतरा नहीं रहा। रहमान और सलमान के साथ मे करीब 5 करोड के पन्ने, माणक और हीरे लेकर उन्हे अमेरिका भेजा गया था। उसने वहा के व्यापारियो से बात करके सारा माल उचित दामो मे बेच दिया। इस बार भी उन्हे विशुद्ध पाच करोड का प्रॉफिट हुआ। रहमान और सलमान का दूसरा ट्रिप इण्डिया से अमेरिका का था। रायबहादुर ने यहा सस्ते भावो मे 5 करोड की हीरोईन खरीदी और उसे अमेरिका मे ऊचे दामो मे बेचकर फिर उसमे 5 करोड रुपये कमाए। इस प्रकार उनका व्यापार चल निकाला। उस बहादुर गेग के आठों सदस्य रायबहादुर के ईशारे पर अपनी जान देने तक को तैयार रहते थे। रायबहादुर भी उनका पूरा ध्यान रखता था। ज्यो–ज्यो अच्छी कमाई हुई। रायबहादुर ने बोरीवली, दहीसर भायन्दर, गोरेगाव मे अच्छी–अच्छी जगह एक एक बिल्डीग मे दो–दो फ्लेट खरीद लिए समुचित व्यवस्था कर दी। स्वय रायबहादुर ने अपने लिए जुहू पर समुद्र के किनारे फिल्मी सितारो के बगले के पास ही एक आठ करोड रुपये मे बगला खरीद लिया। जहा पर चार नौकरो के अलावा रहने वाला अब तक वह अकेला ही था। माता कुसुमवती और बहिन विमा को तो वह कोटा ही छोड आया था। जिन्हे छोडे करीब 2 वर्ष हो चुके थे। जबकि वह उन्हे साल छ महीने मे ही कमाकर लाने का आश्वासन देकर आया था। एक रात को सोते हुए उसके मन मे विचार आया कि अरे ! मुझे तो ध्यान ही नही रहा। मैं तो यहा करोडो मे खेल रहा हू। मेरी माता और बहिन विमा अपना खर्च कैसे चला रहे होगे ? उनके पास तो महिने भर का राशन भी नही था। मैं उन्हे यह कहकर चला आया था कि इधर–उधर से उधार लेकर काम चला लेना। लेकिन गरीब को उधार भी कौन देता है। गरीब की हर कोई मजाक उडाने मे रहता है। ऐसी स्थिति मे उन दोनो के साथ क्या बीत रही होगी। जल्द ही कोटा जाना चाहिये। इसी बीच उसे अपने कोटा के हैवान दोस्तो का भी ख्याल आया। जिनकी स्वार्थ परस्थी के के कारण उसके पिता का स्वर्गवास हुआ था। और उस जैसे शरीफ इन्सान को अपराध के दल्दल मे उतरना पडा और मैं कहा से कहा तक पहुचता जा

रहा हू। यह सब उन दुष्टो की देन है अब मैं उन्हे नही छोडूगा । उनसे बदला लेना ही है। यह सोचते हुए कि कल ही बाम्बे दिल्ली राजधानी से दोस्तो के साथ कोटा जाने का निर्णय लेकर वह सो गया।



मम्मी अब मैं बॉम्बे जाकर धन कमाना चाहता हू। यहा तो नौकरी करने पर भी उदर पोषण जितना भी अर्थोपार्जन होना मुश्किल है। मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हू कि करीब 1 वर्ष मे वापस लौट आऊगा। तब तक बहुत कुछ कमा लूगा। ताकि हम आराम से जिन्दगी व्यतीत कर सके।

कुसुमवती बोली– नही बेटा नही ! मैं अब तुम्हे कहीं पर भी भेजना नही चाहती। चाहे आराम से जीए या दु ख से रहे। पर रहेगे एक साथ ही। तेरे पिता भी इस दुनिया मे नहीं रहे और तू भी यहा से चला जाय, तब फिर हमारा सहारा कौन रहेगा। अब तुम ही एक मात्र सहारे हो अत यही पर रहो।

अनुराग बोला– मम्मी ! आपका कहना किसी दृष्टि से ठीक है किन्तु मैं आपको छोड कही भाग नही रहा हू। किन्तु धन कमाने के लिए कुछ तो करना ही पडेगा। एक वर्ष की तो बात ही है। 1 वर्ष के बाद तो मैं आ ही जाऊगा। यद्यपि माता कुसुमवती और बहिन विमा, भाई को भेजने के लिए कतई तैयार नही थी। पर अनुराग का दृढ निश्चय देखकर उन्हे भी झुकना पडा।

एक दिन अनुराग शुक्ला बॉम्बे के लिए रवाना हो गया। बॉम्बे जाकर वह अनुराग के स्थान पर रायबहादुर बन बैठा। जहा उसने अपना जोरदार रूतबा जो जमा लिया था।

इधर कुसुमवती और विमा पर तो मानो दु ख का पहाड ही टूट पडा था। वे किधर की भी नही रही। फिर भी जीना तो था। 2–4 दिन तो ऐसे गमगीन माहोल मे निकालते चले गए। विमा की कॉलेज भी छूट गई थी। घर की स्थिति भी नाजुक थी। महीने भर जितना राशन तो था ही आगे क्या होगा दोनो को यह चिन्ता खाए जा रही थी। 10–15 दिन बीत जाने के बाद कुसुमवती ने आसपडौस मे कुछ काम करना प्रारम किया। कहीं बर्तन माजना तो कही कपडे धोना तो कही घर की सफाई। विमा नहीं चाहती थी कि मेरे रहते मा काम करे। पर कुसुमवती जवान लडकी को कही बाहर किसी के घर भेजने के लिए तैयार नही थी। यो करते–करते गुजर बसर होने जितना राशन जुटने लग गया।

इधर कॉलेज मे अनुराग के दोस्तो के बीच चर्चा होने लगी। कमल ने [illegible] से कहा यार ! अनुराग ने तो कॉलेज छोड दी। वह तो बहुत दिन से

कॉलेज नही आ रहा है। जयेश बोला– यार ! खोज करना चाहिये। आखिर क्या बात हुई। वह क्यों नहीं आ रहा है।

इतने में बीच मे पारस बोल पडा – यार ! उसके बाप का एक्सीडेट हो गया था, तो हम से पैसे मागने आया। उसे 10 हज़ार रुपये चाहिये थे। यह बात अलग है कि अपने पास जेब खर्च के लिए पैसे काफी रहते हैं। पर वह इसलिए तो नहीं कि उन पैसो को ऐसे फटीचरों के लिए उडा दिया जाय। वैसे भी अपन इतने धर्मीजीव नहीं जो दान करते फिरे। हो सकता हे उसे कहीं सहयोग नहीं मिला हो और उसका पिता मर गया हो तो घर की स्थिति डावाडोल भी हो सकती है। क्योकि उसके घर मे उसके बाप के अलावा कमाने वाला कोई नहीं है। राजीव ने भी पारस की बात में हा मे हा मिलाई। बात मुझे भी ऐसी ही लग रही है।

तब फिर क्या एक बार उसके घर जाकर देखना चाहिये। उसकी एक बहिन विभा भी तो है। वह भी अब तो बडी हो गई है। उसका क्या हाल हे जानकारी करनी चाहिये।

तब कमल ने कहा–फिर चलो चले, अभी ही। परस्पर परामर्श करके पाचो दोस्तो ने अपने टू व्हीलर (Two Wheeler) तो वहीं छोडे और पारस की मारूति वन थाउजेंट (One Thousand) मे बैठकर सभी रखियाल की ओर चल पडे। कुछ दूर चलने के बाद ही पारस को ध्यान आया और वह बोला कि यार ! अपन जा तो रहे हैं, पर यदि अनुराग वहीं हुआ और वह अपनो को देखकर नाराज हो गया तो एक नई आफत खडी हो सकती है। क्योकि जब वह पिता के एक्सीडेट (Accident) होने पर रुपये मागने आया था। तब हमने उसे नहीं दिये थे। उसको गुस्सा भी हो सकता है। इतने म पकज बोल पडा यार ! वह बहुत शरीफ आदमी है। नाराज होने वाला नहीं है। अगर हो भी गया तो हम कह देंगे कि हम तो तुम्हे सहयोग करने आए हैं। वैसे भी वह मेरे पास तो रुपये मागने आया नहीं था अत मुझसे तो नाराज होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

पारस बोला – तब ठीक है पहले उसके घर म तुम लोग जाना जब ऐसी कोई झझट नहीं हो तो फिर मुझे बता देना। में दूर खडा रहूगा। ईशारा पाते ही आ जाऊगा। पकज बोला– ठीक–ठीक हे या बात करते–करते ही रखियाल आ गया। कच्ची बस्ती थी। कुछ दूरी पर गाडी रोक दी गई।

पारस को छोडकर चारो दोस्त चलकर अनुराग के घर पर पहुचे। निहायत सीधा सादा घर था। एक कमरे और एक रसोई थी। जब वे घर मे घुसे उस वक्त कुसुमवती के पेट मे तेज दर्द हो रहा था। विमा उसका उपचार करने मे लगी थी। तेल से पेट को मसल रही थी पर वह ठीक नहीं हो रहा था। वह दर्द से कराह रही थी। और अनुराग को पुकार रही थी। पर अनुराग वहा था कहा। ज्योही राजीव ने देखा कि कुसुमवती की तबियत खराब है और वह अनुराग–अनुराग पुकार रही है। त्योही वह बोल पडा माता जी। चिन्ता मत करिये अनुराग का दोस्त मैं आ गया हू। चलिये जल्द करिये मैं आपका इलाज करा देता हू। उसने तुरन्त पारस को इशारा करके गाडी, मकान के बाहर मगवाली और कुसुमवती एव विमा को गाडी में बिठाकर पास ही क्लिनिक (Clinic) मे ले गए। डॉक्टर को दिखाने के बाद डॉक्टर के कथनानुसार पास ही के मेडिकल स्टोर्स (Medical Store) से दवा खरीदकर एक टेबलेट तो उसी वक्त खिला दी गई बाकी दवा साथ लेकर उन्हे कार मे बिठाकर रखियाल में उनके घर पर छोड दिया गया। दवा से दर्द मे फर्क पड गया था। कुसुमवती ने इस सकट मे दिये गए सहयोग के प्रति अनुराग के दोस्तो को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया। विमा भी कृतज्ञता की नजरों से देखने लगी।

राजीव बोला– माता जी ! इसमे ऐसी कोई बात नहीं है। अनुराग हमारा दोस्त है। उसकी मम्मी, हम सब की मम्मी। उसका दु ख हम सबका दु ख है। वह काफी दिनो से कॉलेज नही आ रहा है तो हमने सोचा ऐसी क्या बात हो गई। कही कोई गडबड तो नहीं है। इसलिए हम उससे मिलने आए थे। पर यहा आते ही देखा तो आप की तबियत खराब है तो हम उपचार कराने मे जुट गए। हमारा भाई अनुराग कहा है ?

कुसुमवती बोली – बेटा ! क्या बताऊ। उसके पिता का एक्सीडेन्ट हो जाने से तथा समुचित इलाज न हो पाने के कारण वे तो इस दुनिया से चल बसे हैं। हमारे घर की आर्थिक स्थिति भी नाजुक है। सारा खर्च उसके पिता के वेतन से ही चला करता था। उनका स्वर्गवास हो जाने से स्थिति और भी खराब हो गई है। यही कारण था कि अनुराग ने और विमा ने दोनों ने कॉलेज छोड दी है। यो कहते–कहते उसकी आखो मे आसू आ गए। कहा तो इसके पिता की तमन्ना थी कि मैं अपने बेटे–बेटी को उच्च शिक्षा दिलाकर हाई सोसायटी (High Society) मे जीने लायक बनाऊगा। लेकिन तकदीर हमारी, एटी की बीच मे ही चले गए। अब अनुराग रोजी रोटी के लिए बॉम्बे

चला गया हे। उसे मेंने बहुत मना किया, पर वह माना ही नहीं। वह कहता हे मा पैसे बिना कुछ नहीं है। अत मुझे जाकर धन कमाना हे। मना करते–करते भी चला गया। फिर रोते हुए कुसुमवती आगे बोली–बस हम असहाय हो गए। आज की स्थिति भी बडी विकट थी। यदि तुम लोग समय पर नहीं आते, तो शायद मे जिन्दी रह नहीं पाती। तुम लोगो ने आकर बडा उपकार किया है, हमारे ऊपर। लेकिन एक बात समझ मे नहीं आई। वह यह है कि जब मैं देखती हू कि तुम सबका स्वभाव इतना भला है और दूसरी तरफ जब अनुराग पिता के ईलाज के लिए दोस्तो से रुपये उधार लेने के लिए गया तो रुपये उधार देने की बात तो दूर बल्कि उसकी गरीबी की मजाक उडाई गई थी। ये कैसे क्या हुआ ?

पारस भी सब कुछ सुन रहा था। उसके साथ आए 2–3 दोस्तो के पास वह आया था और इसी ने उसे झिडकी देकर निकाल दिया था। लेकिन कमल ने बात समालते हुए कहा कि माता जी ! दोस्त तो कोई ओर होगे। हमारे पास आकर तो उसने ऐसी बात कही नहीं थी। नहीं तो हम उसी वक्त उसके साथ चल पडते। खैर. जो होनी होती है, वह होकर ही रहती है उसे कोई टाल नहीं सकता।

कुसुमवती बोली– ठीक कहते हो बेटा ! तुम लोगो का भला स्वभाव देखकर तो मुझे लगता है। अनुराग को अपने दोस्तो की भी परख नही है कि उसे किसके पास जाना ओर किसके पास नही।

इतने मे जयेश बाजार से सेव, सतरे मोसमी चीकू आदि फल उठा लाया और कुसुमवती के सामने रख दिए।

कुसुमवती बोली– बेटे ये किसलिए ?

जयेश बोला– माता जी ! आप अस्वस्थ हैं। डॉक्टर ने आपको दवाई दी है। पथ्य रूप मे फलो का उपयोग करना जरूरी हे नही तो गर्मी बढ सकती है।

कुसुमवती की आखो मे कृतज्ञता के आसू बह चले। वह बाल पडी जुग–जुग जीओ बेटे, जुग–जुग जीओ।

सभी दोस्तो ने कुछ देर इधर–उधर की बात की फिर आने की बात कहकर उठकर चल दिये। सभी आकर कार मे बेठ गए। पारस ने कार को स्टार्ट किया और गाडी आगे बढा दी। रास्ते मे बोला– यारो ! तुम लोग भी विचित्र आदमी हो। या तो देने के लिए एक रुपया नहीं देते हो और वहा

इतना खर्च कर दिया। इतने मे जयेश बोला– तुम लोग बात को समझोगे भी या नही ? अब घर मे अनुराग नही है। उसकी मा ओर उसकी बेटी विमा दो ही हैं। अपन बेखटके इस घर मे आ जा सकते हैं। कोटा शहर से भी काफी दूर एकान्त मे है। अत न कोई देखने वाला है और न ही कोई सुनने वाला। देखा नही विमा कितनी, सुन्दर और नवयुवती है। यह हमारे को मिल जाय तो फिर क्या कहना। लेकिन इसके लिए धैर्य और समझदारी से काम लेना होगा। प्रथम तो कुसुमवती के दिल मे अपने प्रति विश्वास जमाना होगा। अन्यथा घर मे आना जाना ही दूभर हो जाएगा। कुसुमवती और विमा जब अपने उपकारो से उपकृत होगी तो अपना काम सहज ही सरल हो जाएगा।

जयेश बोला– यारो ! शादी तो पता नहीं घर वाले कब करेंगे हमारी। पर अब इस दुनिया का मजा लेना है। नगर वधू के यहा जाते हैं तो बदनामी होने का तो डर है ही साथ ही आजकल डॉक्टर लोग एड्स (Aids) जैसी गंभीर बीमारी भी बतलाने लगे हैं। अत अब उन खुल्ले अड्डो पर जाने का युग नही रहा है। अपने को तो किसी भी तरह विमा जैसी सुन्दर युवती को अपने मोहक जाल मे फास लेना है। यहा अपने को किसी बात का कोई डर नही है। बेखटके सारा काम हो सकता है। यही सब सोचकर मैंने कुसुमवती का इलाज कराया है।

वाकई कलियुग है जहा हर अच्छाई के पीछे इन्सान का कितना घिनौना स्वार्थ छिपा होता है उसे समझ पाना मुश्किल है। ऐसा परमार्थ, न होकर इन्सानियत को रसातल मे ले जाने वाला है। इधर कुसुमवती, जिसका स्वास्थ्य अच्छा न होते हुए भी घर खर्च चलाने के लिए काम पर जाने लगी। पर विमा से देखा नही जा रहा था। आखिर वह बोली– मम्मी ! जब आप कर सकती हैं तो मैं क्यो नहीं कर सकती हू। छोटे–बडे काम करने में शर्म किस बात की। लेकिन कुसुमवती उसे भेजने के लिए तैयार नहीं थी।

एक दिन विमा को ज्ञात हुआ कि रखियाल से कुछ ही दूरी पर एक प्राइवेट मिडिल (Private Middle) स्कूल प्रारम्भ हुई है। उसने सोचा क्यो इसमें टीचरी कर ली जाय। मैंने बी.एड (B Ed) नहीं करी तो क्या हो [illegible] इंग्लिश मीडियम से चलने वाली इमेन्युअल स्कूल मे हायर हाई सेकेण्डरी तक पढाई की है। इसके साथ ही दो वर्ष तक कॉलेज भी जाइन [illegible] ऐसी स्थिति मे मिडिल तक की सारी पढाई मैं करा सकती हू। यही [illegible] एक दिन वह इन्टरव्यू (Interview) देने पहुच गई स्कूल मे।

स्कूल के प्रबन्धक काशीनाथ अपने रूम मे बैठे हुए थे। इन्टरव्यू का दिन होने से कई महिलाए इन्टरव्यू देने आई हुई थी। उसमे विमा भी एक थी। जब उसका इन्टरव्यू देने का समय हुआ तो उसे आवाज लगाकर रूम मे बुला लिया गया।

विमा ने बडी शालीनता के साथ रूप मे प्रवेश किया और हाथ जोडकर प्रबन्धक काशीनाथ का अभिवादन किया।

विमा से उसकी शैक्षणिक योग्यता के बारे में पूछा गया। अन्य दो चार प्रश्न पूछे गए। उसके बाद प्रबन्धक काशीनाथ ने विमा को 1500 रुपये मासिक पर अध्यापिका के रूप में नियुक्ति दे दी। यद्यपि आधुनिकता की इस दौड मे वेतन बहुत कम था। फिर भी विवशता के कारण विमा ने उसे भी सहर्ष स्वीकार कर लिया। क्योकि कुसुमवती का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। वह विमा को काम पर जाने भी नहीं देना चाहती थी। ऐसी स्थिति मे अध्यापन के क्षेत्र मे नौकरी करना ही उचित था। 2000 रुपये मे मा–बेटी का साधारण तौर पर घर खर्च भी चल सकता था। थैंक्यू (Thankyou) कहती हुई विमा प्रबन्धक के रूप मे उठकर जाने लगी। तब प्रबन्धक ने उसे विचित्र प्रकार के भावों के साथ घूरते हुए अगली 1 तारीख को डयूटी जाईन करने का आदेश दे दिया। विमा कमरे से बाहर हो चुकी थी। प्रबधक काशीनाथ के चेहरे पर एक मादकता की जहरीली मुस्कराहट तैर गई। यद्यपि विमा की अध्यापन योग्यता अन्य सबसे अच्छी थी पर उसकी नियुक्ति इस योग्यता के आधार पर न होकर शारीरिक सौन्दर्य के आधार पर हो गई थी। प्रबन्धक काशीनाथ भी दुराचारी था। वह प्राईवेट स्कूलो मे विवशता मे उलझी लडकियो को नौकरी देकर उनसे कसकर काम भी लेता था और अपनी कामवासना का शिकार भी यदाकदा किसी न किसी को बनाता रहता था। ऊपर से समाज सेवा का चौला और पहन रखा था। विमा काशीनाथ की शेतानी नही समझ सकी थी।

विमा ने घर जाकर अपनी मा कुसुमवती को अपनी अध्यापिका पद पर नियुक्ति के समाचार दिये। यद्यपि कुसुमवती को उसका नोकरी करना पसद तो नहीं था। लेकिन विवशतावश उसे यह स्वीकार करना पडा।



विमा शुक्ला स्कूल मे आठो पीरियडों (Penod) मे मन लगाकर पढाई कराया करती थी। बच्चे तो विमा मैडम से काफी प्रभावित हो गए। विमा के अलावा भी स्कूल मे पाच पुरुष अध्यापक एव दो महिला अध्यापिकाए अन्य भी थी। लेकिन विमा अपने काम से काम मे मतलब रखती थी। फिर भी जब उसे अन्य अध्यापको से भी वार्तालाप करना पडता था। न चाहते हुए भी सपर्क रखना जरूरी था। 3–4 महीने तक तो सब कुछ ठीक ठाक चलता रहा। अब प्रबधक काशीनाथ ने अपना जाल बिछाना प्रारभ किया।

एक दिन विमा शुक्ला से प्रबधक काशीनाथ ने कहा– विमा मैडम ! आपकी स्कूली रिपोर्ट तो बहुत अच्छी आ रही है। बच्चे तो आपकी पढाई से काफी प्रसन्न रहते है।

विमा ने सक्षिप्त सा जबाब देते हुए कहा– जी ! यह सब आपकी मेहरबानी है। आपने जिस विश्वास के साथ मुझे नियुक्ति दी है। मैं उसे पूरी तरह सही प्रमाणित कर देना चाहती हू।

काशीनाथ बोला– बहुत अच्छा ! हमने भी इसी विश्वास के साथ तुम्हारी नियुक्ति की थी। यो कहते हुए काशीनाथ ने एक तीर चला ही दिया– तुम अन्दर से जितनी प्रतिभा से तीव्र हो, वैसे ही बाहर से भी बहुत सुन्दर हो। सुन्दरता और बुद्धिमता का अद्भुत सगम है तुम्हारे मे। ऐसा कम ही देखने को मिलता है। लेकिन यह बताओ कि तुम्हे कॉलेज बीच मे ही क्यो छोडना पडा। तुम तो पोस्ट ग्रेज्युएट (Post Graduate) बनकर उच्च पद पर जा सकती थी।

विमा को एक बार तो पडित काशीनाथ की बात अच्छी नहीं लगी। उसकी प्रशसा जो की गई थी। वह उसे भीतर से कुछ कमजोर कर महिला सुलभ मन अपने तन की प्रशसा सुनकर प्रफुल्लित हो उठती है। परन्तु पीछे के दुराशय को समझ पाना मुश्किल रहता है।

विमा ने कहा– साहब आपका कहना उचित है। लेकिन हमारे घर की परिस्थितिया न होने से मुझे कॉलेज बीच मे ही छोडना पडा।

ऐसी कौनसी विवशता ने तुम्हे घेर लिया। हम भी तो जाने काशीनाथ ने पूछा।

विभा बोली— क्या बताए सर ! एक परिस्थिति हो तो बताए यहा तो विपत्तियो की एक लम्बी श्रृखला खडी है। क्या—क्या बताए।

काशीनाथ ने उसकी दुखती नस को पकड़ते हुए कहा कि ईश्वर भी कितना निर्दयी है जो ऐसी भली लडकी पर दु ख के पहाड पटके। लेकिन समझ में नहीं आया, इतनी क्या परेशानी है। तुम्हारे पिताजी । हा यही तो बात है। उनका एक वर्ष पूर्व एक्सीडेट में स्वर्गवास हो गया। वे एक सरकारी कर्मचारी थे। जिससे मामूली वेतन पाते थे। उससे घर खर्च भी चलाना और हमें भी महगे स्कूल में पढा रहे थे। किसी भी तरह मेहनत मजदूरी के द्वारा हमारा भी जुगाड हो रहा था। पर ईश्वर को यह भी पसद नही आया और एक दिन दुर्देव ने एक भारी झटका मारा और पिताजी चल बसे। हम फिर रोड पा आ गए। कोई भी हमारा सहायक नही था। नजदीक के रिश्तेदार भी दूर हो गए। खाने—पीने के लिए राशन का जुगाड करना भी मुश्किल होने लगा था।

बीच मे ही काशीनाथ बोल पडा— क्या तुम्हारे अलावा तुम्हारे और भाई—बहिन नहीं हैं। काशीनाथ, यह सब बातो ही बातो मे जान लेना चाहता था।

विभा ने कहा— हम दो भाई—बहिन हैं। मुझसे बडा मेरा भैया है—उसका नाम अनुराग शुक्ला है।

तो क्या वह कुछ पढा—लिखा नहीं है ? क्या मेहनत मजदूरी करके पेट नहीं भर सकता है ? काशीनाथ बोला।

नहीं ऐसी बात नहीं है। भाई साहब तो बहुत ही ब्रिलियण्ट (Brilliant) हैं। कॉलेज मे पढ रहे थे। पर पिता जी के स्वर्गवास का इतना गम हुआ कि काफी दिनो तक वे सुध—बुध खो बैठे। बाद मे जब कुछ स्वस्थ हुए तब पारिवारिक जिम्मेदारिया की ओर उनका ध्यान गया और उनके मन मे विचार आया कि मैं यहा रहकर इतना अर्थोपार्जन नहीं कर सकूगा। अत मैं बॉम्बे जाना चाहता हू।

मेरी माता जी ने उन्हे काफी मना किया पर वे न माने और हम मा बेटी को छोडकर एक दिन बॉम्बे के लिए रवाना हो गए। अब घर पर हम मा बेटी दोनो ही रह गए। हमारे पास इतनी जमा पूजी तो थी नही कि हम बैठ—बैठे घर खर्च चला सकें। आखिर मेरी मम्मी ने आस—पास के घरो मे कुछ न कुछ काम करना प्रारभ किया। लेकिन एक दिन उनकी तबियत ज्यादा खराब हो

गई तो उनकी मजदूरी फिर छूट गई। क्योकि वह सेठो के यहा दैनिक मजदूरी पर जाया करती थी। जिस दिन काम पर नही जावो उस दिन की मजदूरी कट जाया करती थी। जबकि खाने–पीने की आवश्यक वस्तुए रोज चाहिये। फिर बीमारी मे तो और भी खर्च बढ जाता है। ऐसी स्थिति मे फिर मैंने नौकरी करने का दृढ निश्चय कर ही लिया, और आपकी स्कूल मे इन्टरव्यू देने आ गई। आपने मुझे रख भी लिया। इसके लिए मैं आभारी हू।

सारी बाते सुनकर मोहान्ध काशीनाथ की आखो मे चमक आ गई। ऊपरी तौर पर सात्वना देते हुए बोला–बेटी ! घबराओ मत हौसला बुलन्द रखो। मैं तुम्हारे साथ हू। जब भी किसी भी चीज की आवश्यकता हो तो बेखटके आ सकती हो।

विमा तो उठकर अपने अध्यापन के कार्य मे लग गई पर प्रबधक काशीनाथ अपनी अधेडबुन मे लग गया। उसके सिर पर काम का भूत जो सवार हो गया था। वह भूखा भेडिया किसी भी तरह अपनी काम वासना शात करना चाहता था। लेकिन ऐसे कामी कुत्ते अपनी खानदानी इज्जत आबरू को मिट्टी मे मिला देते हैं।

काशीनाथ जब तब विमा मैडम से बातचीत करने का प्रयास करता रहता था। शिष्टतावश कभी तो वह बात कर लेती और कभी पढाई का बहाना करके कन्नी काट लेती थी। काशीनाथ भी कहा चूकने वाला था। आखिर एक दिन वह विमा मैडम के घर ही पहुच गया। विमा ने जब काशीनाथ को घर पर आए देखा तो शिष्टतावश उनका सम्मान भी करना पड़ा। उनको एक रूम मे बिठाया। मम्मी कुसुमवती से उनका परिचय करवाया।

कुसुमवती ने काशीनाथ का अपनी बेटी को नौकरी रखने के लिए आभार माना।

काशीनाथ ने कुसुमवती का जबाब देते हुए कहा ऐसी कोई बात नहीं है कुसुमवती जी। इसमे अहसान कुछ नही है आपकी बेटी काम करती है, उसका ही तो वेतन देते है। नही–नही फिर भी आपका बहुत अहसान है, हमारे उपर। आप चाहते तो नौकरी पर दूसरी लडकी को भी रख सकते थे। लेकिन आपने विमा को प्राथमिकता देकर हमे जो सहयोग दिया है, वह आपकी महानता है। और आज आपने हमारी कुटिया को भी पावन कर दिया। यह बहुत बड़ी बात है। हम आपका स्वागत करने लायक तो नहीं हैं

फिर भी चाय तो बना लाती हू।

काशीनाथ बोले– अरे नही। ऐसी तकलीफ करने की जरूरत नहीं है। मैं तो वैसे ही आपका हालचाल पूछने चला आया था और कोई खास बात नही है।

लेकिन कुसुमवती चाय बनाने किचन मे जा चुकी थी। अब कमरे मे काशीनाथ और विमा दो ही रह गए थे। काशीनाथ ने धृष्टता के साथ विमा का हाथ पकडते हुए कुर्सी पर बिठाते हुए बोला– बैठो विमा बैठो। दोनो बेठ गए। इधर–उधर की बाते होने लगी। इसी बीच काशीनाथ के हावभाव उसकी कामुकता को स्पष्ट बतला रहे थे। लेकिन विमा को यह हरकत कतई पसद नहीं थी। पर सहने का और विरोध करने का दोनो का ही साहस उसमे नहीं था। उसकी स्थिति बडी असमजस पूर्ण हो गई थी। क्या करे क्या न करे। एक तरफ बडी मुश्किल से नौकरी मिली है। विरोध करने का मतलब नौकरी से हटाया जा सकता था। दूसरी तरफ वह बूढा काशीनाथ विमा को बिलकुल अच्छा नही लगता। इसी बीच कुसुमवती चाय लेकर आ गई। सारी बाते बद हो गई। सयत होकर काशीनाथ ने चाय पीना प्रारभ किया। बीच बीच मे कुसुमवती से बोलता भी रहता था बहिन ! आपके बेटे अनुराग का कोई पत्र या फोन आता होगा। अभी वह कहा पर है। क्या कर रहा है।

कुसुमवती बोली– नहीं साहब। यही तो भारी मुश्किल हे। उसके जाने के बाद न पत्र हे ओर न कोई फोन आया है। वह कहा है क्या कर रहा है कैसे क्या हाल है ? कुछ भी जानकारी नहीं हे। इससे कई बार दिल मे अशुभ आशका उठती रहती है। पर यह सोचकर सतोष भी कर लेती हू कि उसके पास भी कोई पैसा तो है नहीं। खाली हाथ गया है वहा जाकर नोकरी करेगा। फिर कभी पैसा मिलेगा। वह हमें एक वर्ष मे आने का बोलकर गया है। अत एक वर्ष तो इन्तजार करना है। तब तक कुछ न कुछ समाचार आ जाने चाहिए।

काशीनाथ बोला–बडे अफसोस की बात हे कि इतना पढा लिखा होकर भी अपनी मा को कोई समाचार नही दता हे। आजकल के छोकरे पता नही कैसे सिरफिरे होते हैं जो मा बाप का कुछ समझते नहीं हैं। खैर कुसुमवती जी। आप कुछ विचार न करे। कोई भी आवश्यकता हो तो हम बोल देना। हम आपकी आवश्यकता की पूर्ति कर दग।

यह सब काशीनाथ का मायावी रूप था जिसे कुसुमवती समझ नहीं पाई। लेकिन जब काशीनाथ हर दो–चार दिन से घर पर आने लगा तब

कुसुमवती को भी उसकी कुत्सित भावना का अन्दाज लगने लगा। परिस्थिति बडी विषम थी। क्या करे क्या न करे। कुछ समझ मे नहीं आ रहा था। क्योकि काशीनाथ से सम्बन्ध तोडा भी नहीं जा सकता, नौकरी का जो सवाल था और रखा भी नहीं जा सकता था। क्योकि उसकी वासनात्मक कुदृष्टि विभा पर थी।

इसी बीच अनुराग के नाम मात्र के कहलाने वाले दोस्त पारस, पकज, जयेश कमल आदि का भी जाल कुसुमवती, विभा पर फैलता जा रहा था। वे भी हर 5–7 दिन मे एक बार वहा पहुच जाया करते थे। आते वक्त साथ मे मिठाई का डिब्बा और फ्रूट लाना कभी नहीं भूलते थे। वे भी विभा को आकर्षित करने मे लगे थे। इन गिद्दो की दृष्टि विभा के नाजुक शरीर मे ही उलझी हुई थी। इन हैवानो को यह समझ नही आ रही थी कि खुद के भी कोई मा बहन है। उनके साथ भी कोई ऐसा सलूक करे तो कैसे क्या लगेगा।

एक दिन स्कूल प्रबन्धक काशीनाथ घर पर आए हुए थे, उसी वक्त पारस पकज कमल जयेश आदि भी अपनी गाडी मे वहा पहुचे। ज्यो ही वे अन्दर घुसे और उन्होने जब अन्दर बैठे स्कूल प्रबधक काशीनाथ को देखा तो वे एक बार अचम्भित हो गए। क्योकि उन्हे यह कतई समावना नही थी कि ऐसी जगह पर काशीनाथ सर मिल जाएगे और न ही काशीनाथ को यह सभावना थी कि यहा पर ये कॉलेज स्टूडेण्ट (College Student) पकज आदि मिल जाएगे। काशीनाथ भी उन्हे देखकर एकदम घबरा से गए। मानो दोनो की चोरी पकडी गई हो। वर्षो पहले जब पारस पकज आदि इमेन्यूअल स्कूल मे पढते थे। उस समय काशीनाथ भी स्कूल के वाईस प्रिसिपल (Vice Principal) रह चुके थे। अत वे भी इन बच्चो को जानते थे और बच्चे तो काशीनाथ को जानते ही थे। आखिर कुछ क्षणो की हिचकिचाहट के बाद सभलते हुए पारस ने कहा–काशीनाथ सर आप से बहुत लम्बे समय के बाद मिलना हो रहा है। स्कूल छोडे 4 वर्ष हो गए हैं। कभी आपसे मिलना नही हुआ। गतवर्ष स्कूल के दीक्षान्त समारोह मे भी हम गए थे सर आपको नहीं देखा।

नहीं–नही कुछ घबराते हुए और कुछ सहमते हुए उन्होने कहा– ऐसा तो कुछ नही है पर मैंने रिटायरमेन्ट (Retirment) लेने के बाद खाली बैठना उचित नहीं समझा। इसलिए एक प्राईवेट (Private) स्कूल खोल दिया था। अच्छा चल रहा है। उसके लिए सस्ते और अच्छे अध्यापको की आवश्यकता रहती है। उसी कडी मे विमा बहिन जी भी हमारी स्कूल मे इन्टरव्यू देने आए थे। इनकी शालीनता एव अध्यापन की तीव्र रुचि देखकर उन्हे सेलेक्ट कर लिया है। एक दिन उन्होने घर की माली हालात् का जिक्र किया था तो सोचा घर पर मिलता चलू। इसलिए यहा आ गया था।

पारस ने पकज को ईशारा करते हुए काशीनाथ को कहा – सर ! वाकई आप तो बडे दयालू हैं। तभी तो आपने (काशीनाथ की नकल करते हुए) विमा बहिन जी को नौकरी और ऊपर से इनकी सार समाल भी लेते हैं। आप जैसे इन्सानियत की पूजा करने वाले फरिश्तो से ही यह दुनिया दबी जा रही है। पारस ने एक–एक शब्दो मे व्यग भरी प्रशसा की। जिसे काशीनाथ भी बराबर समझ रहे थे। पर कर भी क्या सकते थे। अपराध बोध उन्हे भी हो रहा था। क्योकि इस प्रकार के फरिश्ते इस दुनिया मे कम ही मिलते हैं। काशीनाथ भी 60 पार कर चुके थे। अत अनुभव से बाल भी पक चुके थे। अपनी परिस्थिति को समालते हुए उन्होने भी एक प्रश्न उछाल दिया–बच्चो तुम यहा कैसे आए हो ? तुम्हारी भी यह कोई रिश्तेदार है क्या ?

इस प्रश्न से एक बार तो सभी दोस्त विचार मग्न हो गए लेकिन झूठ बोलने मे एव अभिनय करने मे मानो मास्टरी कर रखी हो ऐसे पारस ने कहा कि सर ! बात बिलकुल ठीक है। हमारे भी ये कोई पारिवारिक रिश्तेदार तो नहीं लगते, फिर भी इनका हमारे साथ दोस्ती का गहरा रिश्ता है। यह तो आपको भी याद होगा कि अपनी स्कूल इमेन्युअल मे अनुराग शुक्ला नाम का एक निहायत शरीफ लडका पढा करता था जो कि पढने म बहुत तीव्र था। टोप किया करता था।

काशीनाथ बोले–हा हा कुछ याद आ रहा है। बहुत ही अच्छा लडका था वह। तो सुनिये बात को आगे बढाते हुए पारस ने कहा यह विमा बहिन जी उसी अनुराग की बहिन है।

अनुराग शुक्ला से हमारी दोस्ती गहरी रही है। इस समय वह पारिवारिक परिस्थिति के कारण कॉलेज छाडकर बॉम्बे चला गया है। इस कारण हम लोग कभी–कभी कुसुम आटी एव विमा बहिन से मिलने आ जाया करते हैं। कभी कोई काम हो तो कर दिया करते हैं।

अब तक काशीनाथ भी सभल गए थे। वे भी घाघ दिमाग के थे। लडको पर थोडा सा व्यग कसते हुए उन्होने कहा– वाकई । तुम लोग भी बडे परोपकारी हो गए हो। जब तक बिचारा अनुराग स्कूल मे था, तब तक तो उसकी मजाक उडाया करते थे और अब उसके बाम्बे जाने के बाद उसके परिवार का सहयोग करके इन्सानियत की कलियुगी सेवा कर रहे हो।

कलियुगी शब्द सुनते ही पकज जयेश को गुस्सा तो इतना आया कि वहीं पर काशीनाथ की जमकर पिटाई कर दे। पर इससे दोनों पक्ष की बदनामी होने का भी भय था। इसलिए खून का घूट पीकर रह गए। कुसुमवती और विमा इन दोनो की नौंक झौंक को बडी दिलचस्पी से सुन रहे थे। उसे भी काशीनाथ का घर आना कतई पसद नहीं था। बोलने के लिए विवश थी पर आज अनुराग के दोस्तो की मीठी झडपे उसकी एक राह तो, प्रशस्त कर रहे थे। फिर भी विमा का सुरक्षित रह पाना बडा मुश्किल था। क्योकि पारस पकज आदि की भी मजिल विमा ही थी। अत यह तो कुए से निकलकर खाई मे पडने वाली स्थिति थी। पर विमा भी जवानी के जोश मे यह समझ नही पाई थी। उसको भी पारस, पकज आदि का घर पर आना अच्छा लगता था। दिल की गहराईयो में विपरीत लिग का आकर्षण भी काम कर रहा था। जिससे विमा का खिचाव बढा हुआ था। जवानी के जोश मे कई बार व्यक्ति करणीय अकरणीय को भूल जाता है। यही स्थिति विमा की भी बनती जा रही थी। काशीनाथ और पारस, पकज आदि विमा के घर से चले गए। पर अब दोनो ही सावधान हो गए। क्योकि भले ये अन्दर से चरित्र–हीन हो पर समाज मे चारित्रिक प्रतिष्ठा का आवरण चढा रखा था। इसीलिए अब दोनो ही विमा के घर पर जाने से थोडा कतराने लगे। फोन उसके घर पर था नही। काशीनाथ जरूर कभी–कभी स्कूल मे विमा से बात करने की कोशिश मे रहता था पर वहा स्कूल का स्टाफ रहने से ज्यादा कुछ कर नहीं सकता था। इधर पारस पकज, कमल आदि का भी बार–बार विमा के घर पर आने पर [illegible] हो गया। क्योकि काशीनाथ का सम्पर्क उनके डैडी से था। यदि जरा भी बात इधर–उधर होती है तो उनकी पोजिशन (Position) खराब हो सकती हैं। यद्यपि इन लडको को पिता का या इज्जत का [illegible] कोई डर नही था। खाली डर था तो इतना ही कि यदि इज्जत जाती [illegible] घर अच्छे घराने की लडकी मिलना मुश्किल हो सकता है। लडके को [illegible] कोई शादी करने को तैयार नही होगा। इसलिए वे ऊपर से [illegible] (Position) बनाए रखने के लिए चरित्र एव नैतिकता का

आवरण ओढे हुए थे। लेकिन काम का उद्दाम वेग भी उछाले खा रहा था। जब काम का भूत सवार हो जाता है तो व्यक्ति ज्ञान की दृष्टि से अधा हो जाता है। यही हाल पारस, पकज आदि का बना हुआ था। ये जब तब अवसर ढूढा करते थे। आखिर ताक झाक करने वाले को कभी तो मौका मिल ही जाता है। उन्हे भी विमा के पास आने का मौका मिल ही गया। हुआ यो कि कुसुमवती को टाइफाइड (Typhoid) हो गया था और वह भी बिगड गया। जिसके कारण उन्हे हॉस्पिटल भर्ती करवाना पडा। विमा को भी स्कूल से अवकाश लेना पडा। फिर भी वह अकेली क्या कर सकती थी। घर से खाना बनाना हॉस्पिटल जाना आदि बहुत से काम थे। उस वक्त पारस पकज कमल, जयेश उसके सहयोगी के रूप मे साथ रहने लगे। कभी पारस उसे कार मे घर पहुचा रहा है तो कभी कमल उसे हॉस्पिटल तक पहुचा रहा है। तो कभी वे स्वय ही खाना लेकर पहुचा रहे हैं। रास्ते मे बातचीत कर उसे आकर्षित करने का प्रयास किया जाने लगा।

एक दिन बात ही बात मे पारस ने कहा– तुम जब स्कूल मे पढती थी तो तुम्हे डास करना भी बहुत अच्छा आता था। अब क्या हाल है ?

विमा ने कहा – हा पारसजी ! डास करने का मेंने बाद मे भी अभ्यास किया है, बाकायदा प्रशिक्षण भी लिया। एक दो बार प्रतिस्पर्द्धा मे भी भाग लिया हे।

इतने मे बीच मे ही कमल बोल पडा– हा एक बार टाउन हाल मे नृत्य प्रतियोगिता हुई थी, तब तुम प्रथम आई थी। वाकई उस दिन तो तुम्हारा नृत्य बहुत ही जोरदार था। लोगो ने तालियो की गडगडाहट रो हाल गूजा दिया था।

विमा अपनी प्रशसा सुनकर भीतर ही भीतर खिल उठी। चहरे पर प्रशसा सुनकर उभरने वाली मुस्कराहट तेर गई जिसे पारस ने भाप लिया। कई बार किसी–किसी की अधिक प्रशसा करके उससे उचित–अनुचित कुछ भी करवाया जा सकता है। पारस ने उचित अवसर दखकर बात आग बढाते हुए कहा विमा जी ! हमने तो आपका नृत्य कभी दखा ही नही। कमल ने देखा है इसलिए वह बतला रहा हे कि आप बहुत अच्छा डास कर लती है। हम भी चाहते हैं कि कभी आप हमे डास करके दिखलाए।

विमा बोली– पारस जी ! अब तो परिस्थितिया इतनी प्रतिकूल हो चुकी है कि मेरा मन ही बूझ गया है। इधर पिता जी का स्वर्गवास तथा भैया

का बॉम्बे चले जाना और घर की यह माली हालात ने मुझे झिझोड कर रख दिया है। फिर दुबले को दो अषाढ की तरह मम्मी का स्वास्थ्य भी बिगड गया है। मेरे लिए तो एक मात्र वही सहारा है। यो कहते–कहते उसकी आखो मे आसू टपकने लगे।

कमल बोला– विमा जी ! रोती क्यो हो यह भाग्य का चक्कर चलता रहता है। हर सकट का खुशी के साथ सामना करना है। जिस जिन्दगी मे उतार चढाव नहीं आवे उस जिन्दगी मे जीने का रस ही नहीं आ सकता। फिर हम आपके साथ हैं। हर काम को बाटने के लिए तैयार हैं। विमा – यही तो मैं देख रही हू। आप सब से हमे बहुत बडा सबल मिला है। इसलिए कुछ दिल हल्का हो गया। अन्यथा दिमाग पर भारी बोझ सा बना रहता था।

अच्छा–अच्छा विमा जी ! हर गम के पीछे सरगम होता है। हर कडवाहट के पीछे मुस्कराहट होती है। विमा जी ! जिन्दगी को जीने के लिए अनचाहे भी कुछ करना जरूरी है। जिन्दगी को जीने के लिए रोना भी जरूरी है तो हसना भी जरूरी है। जिन्दगी मे अमृत पीना जरूरी है तो जहर भी पीना जरूरी है। जिन्दगी को जीने के लिए हा और ना दोनो ही जरूरी है। जिन्दगी जीना इतना आसान नहीं है। 'जिन्दगी जीने के लिए, जिन्दादिल होना जरूरी है। हर कडवाहट के पीछे मुस्कराहट चाहिये। हर गम के पीछे सरगम चाहिये। जिन्दगी की सरिता बहती है, उभयतटो के बीच उसे बहने के लिए दो तट चाहिये। जिन्दगी वह चकडोलर है जिसे जीने के लिए ऊपर से नीचे घुमाना चाहिये। जिन्दगी को जीने के लिए विमा जी ! नवनीत सा कोमल और इस्पात सा मजबूत दिल चाहिये।

विमा जी बोली– वाह–वाह ! क्या खूब कविताए बोल लेते हैं आप। यह कविता तो बडी जोरदार है। आपके बोलने के अन्दाज ने तो मेरे में भी एक नया जोश का संचार कर दिया है। तो फिर विमा जी ! आपको भी एक दिन तो हमे डास करके दिखाना ही होगा। पारस के कहने पर विमा बोली– चलो आपकी बात मजूर ! इतना सुनते ही सभी दोस्तो ने वाह–वाह कहकर विमा का उत्साह बढा दिया।

लेकिन फिर एक बात अटक गई। वह यह थी कि नृत्य कहा पर किया जाए। क्योकि रखियाल मे उसका घर तो नृत्य के लिए अनुकूल है ही [illegible] हाल आदि मे तो बिना प्रोग्राम के कोई डास (Dance) हो नहीं [illegible] फिर डिम्पी के घर पर डास (Dance) करना विमा को पसद नहीं। [illegible] पार्क आदि तो भी पसद नही। क्योकि घर वाले इसकी मजूरी [illegible]। फिर क्या किया जाय।

कमल बोला– क्यो न किसी होटल मे हो जाय यह कार्यक्रम। जयेश बोला– यह नहीं हो सकता क्योकि होटल मे भी कमरे मे तो नृत्य हो नही सकता और हाल बुक करते हैं तो तब तक के लिए होटल मे आवागमन कैसे रोका जा सकता है, रोका भी जाय तो भी होटल के स्टाफ (Staff) को तो पता चलेगा ही। जो वर्तमान की परिस्थितियो में उचित कम होगा।

इतने मे पारस बोला– यार ! इतना क्या विचार करते हो ! जाने दो इन सबको। मेरे डैडी ने अभी चार महीने पहले ही कोटा जक्शन मे एक नया बगला बना लिया है। हम सभी घर वाले वहा शिफ्ट (Shift) हो गए हैं। गुमानपुरा वाला बगला खाली पडा है। उधर कोई आता जाता नहीं। वहीं पर नृत्य हो जाय तो महफिल अच्छी जमेगी।

सभी को यह बात अच्छी जची। क्योंकि वहा पर किसी प्रकार की झझट होने का अदेशा नहीं था। इस प्रकार 2 दिन बाद रात्रि का कार्यक्रम बना लिया गया। पारस, पकज, जयेश आदि दोस्त मन ही मन अपनी योजना के सफल होने की स्वीकृति मे बहुत खुश हुए। गुमानपुरा बगले के डायनिग हाल को सजा दिया गया। एक तरफ नृत्य के लिए स्टेज भी बना दी गई। सभी साजो समान सजा दिये गए। उन कामान्धो को अपनी योजना की सफलता ही नजर आ रही थी। उन्हे नहीं मालूम कि प्रकृति कुछ ओर ही व्यवस्था कर रही थी। दो दिन बाद रात्रि आठ बजे का समय था। सर्दी का मौसम होने से रास्ते मे आवागमन कम होता जा रहा था। पारस पकज कार लेकर रखियाल बस्ती मे विमा के घर पहुच गये। इधर सर्दी जुकाम के कारण कुसुमवती को अकेली छोडकर भी जाया नही जा सकता था। प्रोग्राम भी बन चुका था। इतने मे कुसुमवती को तेज खासी आई ओर उसमे कफ गिरने लगा। यह देखकर दवा का बहाना दिया गया कि आपके लिए खासी की दवा लेकर आते हैं। विमा बहिन साथ चलेगी उन्हे दे देवगे। तब तक आप यह गोली ले लीजिये यो कहकर उन्ह कम्पोज (Compose) की गोली दे दी गई। जिससे टेन्सन (Tension) भी समाप्त हो जाय और 4–5 घट नींद भी आ जाय। गोली देते ही 15 मिनिट म कुसुमवती को झपकी आना प्रारभ हो गया। कुछ ही देर मे तो वह गहरी बेहोशी म चली गई। अब 5 घट तक तो कोई चिन्ता की बात नहीं रही। दरवाजा बद करके वे लोग विमा को गाडी में बिठाकर ले चले। 10 मिनिट म ही गाडी गुमानपुरा म पारस क बगल पर पहुच चुकी थी। जहा पर सारे दोस्त पहल स ही जमा हो रख थ। यद्यपि विमा अकेली थी। उसे कुछ समय के लिए इस बात का अहसास भी हुआ।

पर बहुत अर्से बाद वह खुली हवा मे आई थी। अत उसने उसका मजा लेना ही उचित समझा। यह वह नाजुक समय था जब विभा की जिन्दगी जब पतन के गहरे कूप मे गिरने जा रही थी। क्योकि इन कामी कुत्तो का क्या भरोसा की कब झपट पडे। वह चारो तरफ से घिर चुकी थी। बगले के डायनिग हाल (Dining Hall) मे पहुचते ही एक मादक खुशबू महक उठी। उसे इस कदर सजाया गया था कि व्यक्ति मे कामोत्तेजना पैदा हो जाय। यह सब हालात देखकर विभा को एक बार फिर नागवार गुजरी। लेकिन अब कर भी क्या सकती थी। एक घटे भर तक तो गपशप और डिनर (Dinner) का दौर चलता रहा। अब ड्रिक का दौर शुरू हुआ वे सब पीने लगे और पकज ने विभा को भी पीने का आग्रह किया। लेकिन उसने साफ इन्कार कर दिया। वह बोली– मैने कभी पिया नही है। अत मेरे से ड्रिक का आग्रह नही किया जाय। तब तक ये सब लोग एक–एक जाम पी चुके थे। उन्हें कुछ नशा भी आने लगा था। विभा के मना करने पर भी पारस ने उसका हाथ पकड लिया और जबर्दस्ती प्रेम भरे आग्रह के साथ आधा प्याला तो पिला ही दिया। जिससे ज्यादा नशा भी न हो और मादकता भी बनी रहे।

विभा की इच्छा तो बिलकुल नहीं थी। पर इतने साथियो के प्रेम पूर्ण आग्रह को टाल नही पाई थी। उसे भी अब कुछ नशा आने लगा था। इतने मे पकज ने ढोलकी बजाना शुरू कर दिया और विभा के पैर थिरकने शुरू हुए। टेप रिकॉडर पर फिल्मी धुन शुरू हो गई और विभा का नृत्य भी तेज होता चला गया। बिजली की तरह नृत्य करती हुई विभा की चमक दमक बढती जा रही थी। महफिल अपनी पूरी जवानी पर थी।

उधर रायबहादुर अपनी गेग के साथ करीम सलीम, रहमान सलमान आदि को लेकर वहा पहुच चुका था। सभी ने अपनी–अपनी पाजीशन ले ली थी। लेकिन इन काम के अधे और शराब मे धुत्त लोगो को क्या पता कि अब [illegible] कुछ क्षणो की ही अवशेष रह गई है। वे तो विभा की और कामुक [illegible] से देख रहे थे और मन मे उभरती काम ज्वाला को भद्दे विचारो मे [illegible] रहे थे। यद्यपि विभा उनसे बचना चाह रही थी लेकिन उस पर [illegible] नशा और कुछ शराब की मादकता छाई हुई थी। फिर इतने [illegible] से अपने आप को बचाना बडा मुश्किल था। लेकिन कहते हैं [illegible] को बचाने वाले के हाथ लम्बे होते हैं। यही कुछ स्थिति यहा भी [illegible]। रायबहादुर उर्फ अनुराग शुक्ला की गेग बॉम्बे से कोटा आकर [illegible] पर [illegible] स्थित पारस के बगले पर पहुच कर पोजिशन ले [illegible] है पाप का घडा एक दिन अवश्य फूटता ही है।

बॉम्बे से रवाना हुई राजधानी एक्सप्रेस रतलाम जक्शन (Junction) को पार करती हुई लगातार दौडती चली जा रही थी। डिब्बे मे बैठे यात्री इन्तजार कर रहे थे कि कोटा जक्शन कब आए ? हालाकि वे सभी बॉम्बे से दिल्ली के लिए टिकट लेकर चढे थे, पर जैसे ही कोटा जक्शन (Junction) आया वे सातो यात्री तुरन्त गाडी से उतर पडे । रात्रि के 11 बजे थे कोटा के प्लेटफार्म (Platform) की चहल पहल राजधानी एक्सप्रेस के आने से कुछ बढ चुकी थी। वे सातो व्यक्ति शीघ्र ही प्लेट फार्म से निकल कर कोटा के मैन बाजार (Main Bazar) मे पहुचे। अभी बाजार बद हुआ ही था। सातो आदमी जो दिखने में सामान्य शक्ल सूरत के थे एक कार एजेन्सी (Agency)पर पहुचे। दुकानदार ने देखा कि ग्राहक आए हैं तो उनकी चाहत जानने की इच्छा से बोला– आइए आइए ! कौन सी कार खरीदना है आपको ? सातो व्यक्तियो मे जो प्रमुख था उसका नाम रायबहादुर था। वह बोला हमे एम्बेसेडर (Ambessdor) खरीदना है, जो कि एकदम रेडी हालत मे हो।

दुकानदार बोला– सर 2½ लाख रुपया। ठीक है। ये लीजिए 2½ लाख रुपया नगद। रायबहादुर ने अपने हाथ की अटैची खोलते हुए कहा। तुरन्त 2½ लाख नगद दुकानदार को दे दिये गए। दुकानदार ने शीघ्र ही रुपये गिने और गाडी दे दी। कार मे सातो आदमी बेठ गए वहा से रवाना हुए ओर कोटा के ही रामपुरा बाजार मे स्थित सेठ करोडीमल की दुकान पर पहुचे। सेठ जी मसनद के सहारे आराम मुद्रा मे बैठे थे जेसे ही नवागन्तुको को गाडी से उतर कर अपनी ओर आते देखा तो सीधे बैठते हुए उनसे पूछा– क्या बात है, आप किस प्रयोजन से यहा आए हें ? रायबहादुर ने कहा सेठ सा हमको अपनी कार बेचनी है। यह एम्बेसेडर गाडी हमारी एकदम न्यू (New) हे पर अभी है नगद केश की सख्त आवश्यकता है। आप अगर खरीद तो ।

अच्छा–अच्छा तो बताओ यह कार कितने रुपये मे बेचोगे ? साहब ! यो तो इसकी कीमत 2½ लाख रुपया है पर हम आपको सवा दो लाख रुपये मे दे देगे। सेठ करोडीमल ने देखा कार तो बिल्कुल नई है और कीमती भी है, बाजार मे खरीदने जाओ तो 2½ लाख से कम नहीं मिलगी। अत इसे खरीदना तो है पर सवा दो लाख मे इनसे क्या खरीदू। अत वे रायबहादुर की ओर मुखातिब हो– बोले 2½ लाख मे तो कार कम्पनी से ही खरीद लूगा

पच्चीस हजार के पीछे तुमसे यह सेकिण्ड हेण्ड (Second Hand) कार क्यो खरीदू।

अच्छा तो आप ही बतादे कितने मे खरीदोगे ? हमको अभी रुपये जल्दी मे चाहिए भला 2½ लाख की कार के हम सवा दो लाख माग रहे हैं। आप कुछ कम मे भी खरीदे तो हम बेच देगे। मैं तो दो लाख मे खरीदूगा, तुम्हारी इच्छा हो तो दो। अच्छा साहब आप दो लाख रुपया ही दे दीजिए, कोई बात नही।

सेठ करोडीमल को प्रत्यक्ष 50 हजार का फायदा दिखाई दिया, वह कार खरीदने को तैयार हो गया। सेठ बोला मैं कार खरीद सकता हू, पर अभी इसी समय रुपया उपलब्ध नहीं है, डेढ दो घटे बाद मे रुपया मगवाकर दे सकता हू। ठीक है। हम 2 घटे के अन्दर आपके पास पुन आएगे, तभी यह कार भी आपको सौप जायेगे पर सौदा तो पक्का है ना ? हा–हा पक्का है। मैं इस मार्केट (Market) का सबसे बडा व्यापारी हू। सौदा करके कभी पलटता नही अगर ऐसे पलटू तो क्या मेरी दुकान चलेगी !

ठीक साहब ! हम जाते हैं दो घटे के अन्दर पुन आयेगे। सातो साथी कार मे बैठे रायबहादुर ने कार स्टार्ट (Start) की कार भागने लगी। कुछ ही मिनटो मे उसकी कार कोटा के ही गुमानपुरा एरिये (Area) मे पहुच गई। वहा जाते ही रायबहादुर ने एक तरफ जहा कुछ सुनसान जगह थी, वहा अपनी कार खडी की सातो व्यक्ति कार से बाहर उतर गये।

रायबहादुर ने अपने हाथ से एक भव्य बगले की ओर ईशारा करते हुए कहा- देखो ! ये सामने हरे रग का जो बगला दिखाई दे रहा है, बडा आलीशान है जब बगला इतना सुन्दर है तो इसमे रहने वाला व्यक्ति भी [illegible] होगा आज हम सबको इसी बगले मे जाकर अपना काम करना है। आजकल तो कितने ही दिन बीत गये कहीं कोई लूटपाट हम लोगो ने की ही नही रायबहादुर की बात को ध्यान से सुन रहे छहो आदमियो ने कहा तो [illegible] आज हम इसी बगले पर [illegible] ।

[illegible] तो है ही पर पूरी सावधानी व तैयारी के साथ, क्योकि आजकल पूरे राजस्थान प्रात मे पुलिस बडी सजग है कहीं जरा सी गडबड [illegible] पकड लायेगे। सभी अपने–अपने हथियार तैयार कर ले। यह बात [illegible] रायबहादुर ही जानता था कि वे जिस बगले मे जा रहे हैं वहा लूटपाट [illegible] जितना नही है उतना उसके दोस्तो को धन के अभिमान मे किए

गए अपराधो की सजा देने का है। जिन दोस्तो से उसे घृणा हो गई थी। जिसके कारण उसे अपमान सहना पडा। पिता मृत्यु को प्राप्त हो गए थे। आज जो वह हैवान बना है, उसको भी वे ही कारण है। आज रायबहादुर अपना बदला लेने के लिए, उसी दोस्त के बगले पर पहुच गया है। छहो साथी रायबहादुर के कथनानुसार तैयार हो गए। रात्रि के अब तक 12 30 हो चुके थे। जनवरी माह सर्दी की ठिठुरती रात। सभी ने ढीले-ढीले छोटे कोट पहन रखे थे, जिनमे उन्होंने अपने पिस्तौल व चाकू छुर्रे को इस तरह से छुपा रखे थे कि देखने वालो को कोई आशका ही पैदा नहीं हो पाती थी। सभी ने अपने चेहरे विशेष नकाब से ढक लिये ताकि कोई उन्हे पहचान न सके।

चलते-चलते सातो आदमी आलीशान कोठी के समीप पहुच गये। रायबहादुर ने आसपास के सारे वातावरण का जायजा लिया चारो तरफ सन्नाटा था। सर्दी का वक्त होने से सभी कोई अपने-अपने बगलो मे रजाईयो के बीच दुबके हुए थे। जब सारी स्थिति अनुकूल दिखाई दी तब वे बगले के और निकट कदम बढाने लगे। देखा कि बगले के बाहर पहरेदार बैठा है, हाथ मे बन्दूक है। बगले के भीतरी हिस्से मे लाईट (Light) जल रही है, जिसका कुछ प्रकाश खिडकी व दरवाजे की दरारो से बाहर आ रहा है अन्दर से कुछ सगीत की ध्वनि भी सुनाई दे रही है।

अपने साथ चल रहे अपने साथियो मे से एक को कहा- तुम बगले के आसपास चारो और चक्कर करो, कोई भी खतरा नजर आए तो हमे सूचित कर देना।

दूसरे साथी को कहा- तुम । बगले के मेन गेट (Main Gate) पर खडे रहोगे। शेष 5 मेरे साथ अन्दर चलेगे। सारी योजना समझाकर वे बगले के एकदम निकट मैनगेट (Main Gate) पर पहुच गये। जाते ही देखा पहरेदार कुर्सी पर बैठा हे, हाथ मे रही बन्दुक को जमीन पर टिका कर उसके सहारे ऊघने लगा है। तुरन्त ही रायबहादुर आगे बढा ओर पहरेदार के पीछे से जाकर उसके मस्तिष्क की कनपटी पर भयकर प्रहार किया। उसके एक मुक्के के प्रहार से ही मुख से चीख निकले बिना ही वह कुर्सी से नीचे गिर पडा। इतने मे एक मुक्का और उसकी गर्दन की नस पर लगा और वह बेहोश हो गया। रायबहादुर के साथिया ने उसकी स्थिति देखी वह मरा तो नहीं है पर बेहोश इस कदर हुआ हे कि आधा पोन घटा वह यहा से उठ नहीं सकेगा।

पहरेदार का खतरा टला और वे पाचो साथी दरवाजा खोल बगले के अन्तरग भाग मे प्रविष्ट हुए। देखा कि अन्दर एक बडे कमरे मे महफिल जमी है। जिसमे चार नौजवान बडी मस्ती के साथ बैठे हैं, उनके पास पडे प्यालो व बोतलो से लगा कि वे सब पीये हुए हैं दो के चेहरे पर नशा गहराया हुआ है व दो सामान्य दिखाई दे रहा है। सामने एक नौजवान सुन्दरी आकर्षक–वस्त्रालकार से सुसज्जित है। नृत्य कर रही है, टेप कैसेट से अश्लील गीत बज रहे हैं, सुन्दरी के नृत्य को देख कर वे नौजवान बेभान हो रहे है उनकी देह लाखो रुपये के हीरे जडित अगूठियो व कीमती वस्त्रो से सुसज्जित है। मुख से अश्लील शब्द निकल रहे हैं और सुन्दरी के साथ गदी हरकते करने को उतारू हैं। वह बीस वर्षीय कन्या नृत्य कर रही है और किसी तरह अपने आपको उन रूप पतगो के स्पर्श से मुक्त रख रही है। रायबहादुर ने चद सैकिडो मे यह सारी स्थिति समझली कि इन युवको को अगर मार डाले तो मेरे साथियो को सपत्ति मिल जाएगी, और मेरे बदले की आग भी शात हो जाएगी। अपने साथियो को अत्यन्त धीमे स्वर व ईशारों के साथ रायबहादुर ने समझाया कि तुम कमरे की चारो दिशाओ मे एकदम पोजीशन (Position) मे खडे हो जाओ, इन लोगो को लूटना है, अगर ये कुछ विरोध करे तो मेरे ईशारे के साथ ही पिस्तौल चलाना है। आवश्यक हो तो लड़की की भी हत्या करनी पडेगी।

सारे ही साथी रायबहादुर के ईशारो को समझने मे माहिर थे। देखते ही देखते सभी कमरे मे प्रविष्ट हो गये। रायबहादुर ने शेरं सी दहाड लगाते हुए कहा–खबरदार ! जो यहाँ से हिलने की कोशिश की। तुम्हारे पास जो भी स्वर्ण हीरे आभूषण रुपये हैं तुरन्त सामने रखो नहीं तो ये देखो हमारी पिस्तौल क्षण मात्र मे ढेर हो जाओगे।

भयकर आवाज को सुनते ही नवयुवती व नौजवान भयभीत हो गए– ये क्या ? डाकुओ से घिर चुके हैं। हाय ! अब कैसे बचे ? ये डाकू धन सपदा माग रहे हैं पर ये सपत्ति इन्हे यू ही लूटा दे क्या ? सपत्ति लूटने के बाद तो [illegible] होगा। बिन दौलत दुनिया मे रहने से फायदा क्या ? फिर हम भी [illegible] है अपनी रक्षा स्वय कर सकते हैं ? हमने भी चाकू, छुरे पिस्तौल [illegible] रखा है। हमारी सम्पत्ति क्या मुफ्त की है जो इन्हे फ्री (Free) में [illegible] दौलत तो हमारी जान है इसी से तो ये सैर सपाटे और रग रेलिया [illegible] रहे है।

धन को मुख्य मानकर उन चार मे से एक व्यक्ति ने अपने खडे गद्दे के नीचे छिपी पिस्तौल तुरन्त निकाली व अपने सामने खडे व्यक्ति पर ज्यो ही चलाने लगा, इससे पहले ही विपरीत दिशा मे खडे व्यक्ति के हाथ मे रही पिस्तौल से चली गोली ने उसे सीट पर ही ढेर कर दिया। इसके साथ ही रायबहादुर के ईशारे पर अवशेष तीनो को भी मौत की नीद सुला दिया गया।

रूप सुन्दरी नवयुवती यह भयानक दृश्य देखकर चीख पडी उसने आखे मूद ली। हाय राम ! क्या होगा ? क्या करू ? कैसे करू ? ये लोग मुझे मारे उसके पहले भाग जाऊ। ज्यो ही उसने कदम उठाया त्योही गेग का एक सदस्य उसे निशाना बनाकर गोली चलाने के लिए ट्रिगर (Tngger) दबाने ही वाला था, इतने मे रायबहादुर की दृष्टि उस लडकी के चेहरे पर पडी। अब तक उसने लडकी को देखा तो था पर गौर से नहीं। इतने समय तक तो वह उन नौजवानो को खत्म करने मे ही लगा था। नौजवानो के खत्म होते ही उसने इधर उस नवयुवती का मुख गौर से देखा और देखते ही चौंक पडा – ये क्या ? गजब हो गया बडा अनर्थ हो जाएगा। इस लडकी की हत्या तो होनी ही नहीं चाहिए। इधर गोली छूट रही है अब उसे रोका भी नहीं जा सकता और लडकी को बचाना भी अनिवार्य है। एक सैंकिड (Second) मात्र का समय है इतने मे तो रायबहादुर ने सब कुछ सोच लिया उसने समझ लिया कि मैंने अपने साथी को गलत सकेत कर दिया है। अब अब लडकी के साइड (Side) मे खडे रायबहादुर ने बिजली सी फूर्ती के साथ अपनी पिस्तोल का बटन अपने साथी के साथ ही दबा डाला। दोनों की गोली करीब–करीब एक साथ छूटी। रायबहादुर की पिस्तोल से छूटी गोली साईड (Side) से आती हुई साथी की पिस्तोल की गोली से टकराई और दोनो गोलिया परस्पर टकराकर जमीन पर गिर पडी नवयुवती सुरक्षित बच गई। रायबहादुर सधा हुआ निशाने बाज था एक क्षण मे वह बिल्कुल सही निशाना साधना जानता था इसी का परिणाम था कि एक ही सैकिड (Second) मे सब कुछ सोचकर उसने गोली से गोली को काटकर कन्या को बचा लिया।

कन्या भागना चाहकर भी भाग नही सकी। वह रो पडी। उसके मुह से कोई स्वर भी नहीं निकल पा रहा था अत्यन्त घबराहट के कारण उसका गला रुध गया शरीर कापने लगा।

रायबहादुर तुरन्त आगे बढा और नवयुवती के मुह पर एक कपडा बडी मजबूती से बाधा उसे कधे पर डाला। साथियो ने मृत नौजवानो के सार

कीमती आभूषण व नगद रुपये इकट्ठे किये व अपने कमाण्डर (Commender) रायबहादुर के पीछे-पीछे रवाना हो गए।

बाहर खडे उनके साथी भी उनके साथ हो गए, देखा आसपास कोई खतरा नही है। पहरेदार बेहोश पडा था और दो चार मुक्के, इस तरह उस पर जमाये कि वह सुबह तक नहीं उठ सके और वे सातो आदमी बडी फूर्ति से कदम बढाते हुए कार के निकट पहुच रहे थे। उनके पैरो मे स्प्रीगदार जूते थे जिनसे दौडने भागने चलने पर भी किंचित् भी आहट नही होती थी। एम्बेसेडर मे युवती को डाला, एक चादर से उसके सारे शरीर को ढक डाला। वह कुछ-कुछ बेहोश की दशा मे पहुच रही थी। रायबहादुर ने मुख पर डाला नकाब हटाया अन्य साथियो ने भी उसका अनुकरण किया। रायबहादुर ने अपने ही साथियो को अन्य टैम्पो से स्टेशन जाने का आदेश देकर स्वय एक साथी के साथ कार मे बैठा। रेल्वे स्टेशन के पास एकान्त स्थान पर अपने साथी के साथ लडकी को छोडते हुए कहा तुम छहो व्यक्ति मिलकर अत्यन्त सजगता के साथ रहना दिल्ली से बॉम्बे जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस अभी कुछ देरी से आएगी तब उसमे बैठ जाना तब तक मैं पुन कोटा सिटी मे जाता हू।

रायबहादुर अत्यन्त तीव्र वेग के साथ सारा कार्य करता चला जा रहा था। अपनी एम्बेसेडर को लेकर वह रामपुरा स्थित सेठ करोडीमल की फर्म पर जा पहुचा। सेठ सा उसके इन्तजार मे ही थे। बोले आ गये तुम। मैं तुम्हारी ही राह देख रहा था। लो ये नगद केस और कार दे दो। रायबहादुर [illegible] कार से उतरा 2 लाख रुपये लिये अपनी अटैची मे रख कर वह चला। वहा से टेम्पो पकडकर दूर दराज कच्ची बस्ती रखियाला मे जाकर एक झोपडी के बाहर पहुचा। झोपडी का दरवाजा अन्दर से बद था। उसने दरवाजा खटखटाया। रात्रि के करीब 12 बजकर 10 मिनट हो रहे थे। झोपडी मे से आवाज आई कौन है ? इस अर्ध रात्रि के समय मे।

[illegible] रा बेटा ! अहो बेटे तुम आ गये। झोपडी मे सोई, विधवा मा, [illegible] दरवाजा खोला। बेटे को देख प्रसन्न हुई। मा ! चलो तुम्हे अभी [illegible] है। वह बोली- क्यो अभी अर्धरात्रि के समय कैसे चलू ? और [illegible] भी घर पर नही है। उसे पहले बुला ला। मा ! तुम अब वह [illegible] तो अभी इसी समय चलना ही है मेरे साथ।

[illegible] ज्यादा सोचने का वक्त नही। झोपडी के लगाओ ताला और [illegible] जरूरी काम है अब मैं 2 मिनिट भी नही रुक सकता।

मा कुछ बोले इससे पूर्व ही रायबहादुर ने मा का हाथ पकडा उसे झोपडी से बाहर खडा किया, झोपडी बद की वह एक ऑटो रिक्शा में अपनी मा के साथ रेल्वे स्टेशन पहुच गया। जाते ही उसने देखा– राजधानी एक्सप्रेस रेल्वे स्टेशन पर पहले ही आ पहुची है। रवाना होने में केवल 5 मिनट बाकी है। वह तुरन्त फस्ट क्लास (First Class) के डिब्बे मे अपनी मा के साथ चढ गया।

गाडी रवाना हो चुकी थी, रायबहादुर अपनी मा के सामने बैठा है। मा ने पूछा बेटा कितने वर्षो से आए हो आज तुम्हारा मुह देखा मन खुश है पर तेरी बहिन । कहते हुए मा ने एक गहरी सास छोडी। उसकी आखे भर आई तो मा बहिन को तुमने इस अधेरी रात्रि के समय मे कहा भेज रखा है। युवा लडकी को इस तरह चाहे जहा भेजना कितना गलत एव अनर्थ भरा कार्य है।

बेटा ! तू तो यहा से हमे यह कहकर छोडकर बम्बई चला गया कि मैं एक वर्ष मे ही धन कमाकर आ रहा हू। कब तक हम लोग इधर–उधर से लेकर काम चलाते। लेकिन तुम्हे गए एक वर्ष नही अपितु तीन वर्ष पूरे हो गए हैं। अब तुम ही सोचो कि हमारा यहा क्या हाल हुआ होगा। सारी बात जब तू सुन लेगा, तो सब कुछ समझ मे आ जाएगा।

अच्छा मा ! मैं तुम्हारी इतने दिनो की आप बीती सुनना चाहता हू। लेकिन ठहर जाओ मैं थोडी देर कही जाकर शीघ्र ही वापिस आता हू। तब तक तुम यहीं बैठना। में आकर सब बात सुनूगा। कहते हुए रायबहादुर अपनी सीट से उठ खडा हुआ। जल्दी–जल्दी कदम उठाकर डिब्बे के भीतर से ही वह पीछे के डिब्बो मे गया। राजधानी एक्सप्रेस के पूरे एयर कडीशन (Air condition) डिब्बो मे वह खोजने लगा अपने छहो साथियो को। क्योकि वे सभी इसी एक्सप्रेस ट्रेन से चढे थे। 5–7 डिब्बो में जाने के बाद उसे अपने साथी दिखाई दे गये। वह उन सबको वहा से उठाकर अपने डिब्बे मे ले आया। राजधानी एक्सप्रेस तीव्र वेग के साथ भागती चली जा रही थी कोटा से रतलाम की ओर। नवयुवती के मुह पर बाधा कपडा ट्रेन में चढने के बाद खोल दिया था, उसके देह पर छाई बेहोशी भी इतने समय मे अब कुछ ठीक हो चुकी थी।

सातो ही युवको ने एक नवयुवती के साथ जैसे ही उस स्पेशल (Special) कोच मे प्रवेश किया माजी ने देखा– रायबहादुर के साथ ये नवयौवनाती मेरी बेटी है। वह मारे हर्ष के एकदम चिल्ला उठी– ओ हा !

विमा तू यहा आ गई। रायबहादुर अपनी बहिन को यहा कैसे ले आया तो यह सब तेरी करामात थी।

बेटी विमा जो अब तक निढाल सी चली आ रही थी, उसके साथ हुई घटना से उसका चित बडा बेहाल तथा नर्वस (Nervous) बना हुआ था, वह उन युवको के साथ आई जरूर थी लेकिन अब तक उसने रायबहादुर का चेहरा ध्यान से देखा ही नहीं था बगले मे तो रायबहादुर आदि सभी नकाब ओढे हुए थे अत उनके असली रूप को देखने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था।

अब विमा ने ज्योही मा की हर्षा वेग से युक्त आवाज सुनी वह मानो सोते से जागी। उसने देखा कि सरदार तो मेरे बडे भाई सा ही हैं, तो वह लपककर उनके सीने से लगी– अरे भैया। तुम । प्रसन्नता के कारण उसके मुह से आगे कोई शब्द ही नहीं फूट पा रहा था। भाई बहिन का यह प्रेम मिलन देखकर जहा माजी के हर्ष का पार नहीं था, वहीं पास खडे छहो दोस्तो के मन मे एक बडा कुतूहल पैदा हो रहा था। अचानक यह नजारा देखकर उनके मस्तिस्क मे भी विविध प्रश्न उठ खडे हुए थे।



ने लोगो मे रायबहादुर का नाम था। यही नही बल्कि अन्य देशो मे भी उसका व्यापारिक प्रभाव था।

जिस प्रकार रायबहादुर व्यापार एव अपराध दोनो तरीके से आगे बढ रहा था। इसी प्रकार अन्य ओर भी कई सगठन सक्रिय थे। वे भी अपनी जोड तोड बिठाकर आगे बढने मे लगे हुए थे। उन्होने जब कम समय मे ही रायबहादुर सगठन को इस प्रकार ऊचाईया छूते हुए देखा तो वे ईर्ष्या से दु खी हो उठे। उनकी आखो मे यह सब किर किरी की तरह खटकने लगा। किसी भी तरह इसे डाउन कैसे किया जाय। आदमी अपने दु ख से परेशान न होकर दूसरो के सुख से ज्यादा परेशान होता है। यही स्थिति बॉम्बे सहदेव गग की थी। उस का व्यापार इतना बढिया नहीं था। उन्होने रायबहादुर गेंग को गिराने के लिए योजना बना डाली। सहदेव के आदमियो ने रायबहादुर के आदमियो की चोकसी करना प्रारभ किया। किस फ्लाइट (Flight) से माल आता ह और कहा रखा जाता है किस प्रकार उसे बेचा जाता है। इन सबकी खोज की जाने लगी। इन सबको करते समय उन्हे यह नहीं मालूम था कि उनकी भी कोई चाकसी कर रहा है। रायबहादुर इतना अधेरे मे नही था। उसे यह अच्छी तरह मालूम था कि वह जिस तीव्रता से आगे बढ रहा है उसी तीव्रता के साथ उसके शत्रु भी बढते जा रहे हैं। यदि उनसे सावधान नही रहा गया तो वे कभी भी कहर ढा सकते हैं। यही कारण था कि रायबहादुर के आदमी भी इस बात की सतर्कता के साथ चौकसी कर रहे थे। यो समझ लीजिये कि यह रायबहादुर का गुप्तचर विभाग था, जो उसे अन्दर के स्टाफ की और बाहरी गतिविधियो की सूचना देता रहता था। इसी स्टाफ के सदस्य नवीन कुमार ने सहदेव गेग के सदस्यो द्वारा की जा रही चोकसी को [illegible] दी।

रायबहादुर ने शारीरिक शक्ति से मजबूत शातिर दिमाग के अपने [illegible] सदस्य शेरसिह मूलसिह जोरावर भवानीसिह आदि को इस काम को निपटाने का सकेत कर दिया। सहदेव बाहरी पोजिशन मे तो एक [illegible] था लेकिन अन्तरग मे एक माना हुआ तस्कर एव कुख्यात गुडा [illegible] ही जानता था।

रायबहादुर ने अपने सगठन का ओर भी अधिक विस्तार किया। कुछ तीव्र प्रतिभा सम्पन्न पोस्ट ग्रेज्युएट युवको को प्रवेश दिया तो कुछ शारीरिक शक्ति सम्पन्न युवाओ को लिया ओर कुछ अपराध वृत्ति वाले दुर्दान्त लडका को। किसी को भी प्रवेश देने के साथ ही सबसे पहली शर्त यह थी कि अपने सगठन के प्रति पूरी तरह समर्पित रहना होगा।

अपने अवैध व्यापार को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ओर भी अधिक फैलाने का प्रयास किया जाने लगा। इसक लिए एक ऑफिस ब्राजील (Brazil) मे खोला गया। दूसरा ऑफिस अमेरिका एव न्यूयार्क मे खोला गया। इसी प्रकार सिगापुर, बैंकाक, पाकिस्तान, श्रीलका, भूटान नेपाल, तिब्बत, चीन आदि इण्डिया से जुडे देशो (Countries) मे भी ऑफिस खोल दी गई। ब्राजील से हीरो पन्नो का कच्चा माल आने लगा। जिसकी मेनुफेक्चरीग (Manufacturing) इण्डिया मे कराई जाती। फिर यहा से कुछ माल सीधा अमेरिका एक्सपोर्ट (Export) कर दिया जाता और कुछ माल आभूषणो मे जुडाकर बेच दिया जाता था। इसी के साथ ही जापान से अन्य इर्म्पोटेड (Imported) वस्तुओ की स्मगलिग (Smugling) की जाती थी। उसे तिब्बत पाकिस्तान बैंकाक, सिगापुर आदि के बाजारो मे ऊचे–ऊचे भावो मे बेच दी जाती थी। इन समीप की सभी कट्रियो के सम्बन्धित कस्टम विभाग के आला अफसरो से रायबहादुर ने साठ–गाठ कर रखी थी। इन सब कामो मे रायबहादुर स्वय कही आगे नही आता था। इसके लिए उसके पास अन्तरग चार युवा साथी थे उन्ही से सारा काम लेता था, जो पोस्ट ग्रेज्युएट (Post Graduate) एव बुद्धिमान लडके थे। जिनके नाम थे केलाश श्याम किशोर युगल ओर मनोज। परीक्षाओ मे खरे उतरने के बाद रायबहादुर इन पर विश्वास करने लगा था। फिर भी वह भीतर मे सावधान था क्योकि नीति का वाक्य हे कि किसी पर विश्वास किये बिना काम नहीं चलता लेकिन इतना विश्वास भी नही किया जाय कि सामने वाले के धोखा देने पर अपनी जिन्दगी खतरे मे पड़ जाय। इन सब चिन्तन के प्रति रायबहादुर पूरी तरह सावधान था।

कुछ तो नसीब समझिये ओर कुछ पुरुषार्थ अर्थात् भाग्य ओर पुरुषार्थ का अनुकूल सयोग रहने से रायबहादुर का व्यापार वडी तेजी के साथ फेलता गया। बबई इण्डिया की मानी हुई माया नगरी मानी जाती हे, उसके गिने

रायबहादुर ने अपने सगठन का ओर भी अधिक विस्तार किया। कुछ तीव्र प्रतिभा सम्पन्न पोस्ट ग्रेज्युएट युवको को प्रवेश दिया तो कुछ शारीरिक शक्ति सम्पन्न युवाओ को लिया ओर कुछ अपराध वृत्ति वाले दुर्दान्त लडको को। किसी को भी प्रवेश देने के साथ ही सबसे पहली शर्त यह थी कि अपने सगठन के प्रति पूरी तरह समर्पित रहना होगा।

अपने अवैध व्यापार को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ओर भी अधिक फैलाने का प्रयास किया जाने लगा। इसके लिए एक ऑफिस ब्राजील (Brazil) मे खोला गया। दूसरा ऑफिस अमेरिका एव न्यूयार्क मे खोला गया। इसी प्रकार सिगापुर, बैंकाक, पाकिस्तान, श्रीलका भूटान, नेपाल तिब्बत चीन आदि इण्डिया से जुडे देशो (Countries) मे भी ऑफिस खोल दी गई। ब्राजील से हीरो पन्नो का कच्चा माल आने लगा। जिसकी मेनुफेक्चरीग (Manufacturing) इण्डिया मे कराई जाती। फिर यहा से कुछ माल सीधा अमेरिका एक्सपोर्ट (Export) कर दिया जाता और कुछ माल आभूषणो मे जुडाकर बेच दिया जाता था। इसी के साथ ही जापान से अन्य इर्म्पोटेड (Imported) वस्तुओ की स्मगलिग (Smugling) की जाती थी। उसे तिब्बत पाकिस्तान बैंकाक, सिगापुर आदि के बाजारो मे ऊचे–ऊचे भावो मे बेच दी जाती थी। इन समीप की सभी कट्रियो के सम्बन्धित कस्टम विभाग के आला अफसरो से रायबहादुर ने साठ–गाठ कर रखी थी। इन सब कामो मे रायबहादुर स्वय कहीं आगे नहीं आता था। इसके लिए उसके पास अन्तरग चार युवा साथी थे उन्हीं से सारा काम लेता था, जो पोस्ट ग्रेज्युएट (Post Graduate) एव बुद्धिमान लडके थे। जिनके नाम थे कैलाश श्याम किशोर युगल ओर मनोज। परीक्षाओ मे खरे उतरने के बाद रायबहादुर इन पर विश्वास करने लगा था। फिर भी वह भीतर मे सावधान था क्योकि नीति का वाक्य हे कि किसी पर विश्वास किये बिना काम नहीं चलता लेकिन इतना विश्वास भी नहीं किया जाय कि सामने वाले के धोखा देने पर अपनी जिन्दगी खतरे मे पड जाय। इन सब चिन्तन के प्रति रायबहादुर पूरी तरह सावधान था।

कुछ तो नसीब समझिये ओर कुछ पुरुषार्थ अर्थात् भाग्य और पुरुषार्थ का अनुकूल सयोग रहने से रायबहादुर का व्यापार बडी तेजी के साथ फेलता गया। बबई इण्डिया की मानी हुई माया नगरी मानी जाती है उसके गिने

चुने लोगो मे रायबहादुर का नाम था। यही नही बल्कि अन्य देशो मे भी उसका व्यापारिक प्रभाव था।

जिस प्रकार रायबहादुर व्यापार एव अपराध दोनो तरीके से आगे बढ रहा था। इसी प्रकार अन्य और भी कई सगठन सक्रिय थे। वे भी अपनी जोड तोड बिठाकर आगे बढने मे लगे हुए थे। उन्होंने जब कम समय में ही रायबहादुर सगठन को इस पकार ऊचाईया छूते हुए देखा तो वे ईर्ष्या से दु खी हो उठे। उनकी आखो मे यह सब किर किरी की तरह खटकने लगा। किसी भी तरह इसे डाउन कैसे किया जाय। आदमी अपने दु ख से परेशान न होकर दूसरो के सुख से ज्यादा परेशान होता है। यही स्थिति बॉम्बे सहदेव गेग की थी। उस का व्यापार इतना बढिया नही था। उन्होने रायबहादुर गेग को गिराने के लिए योजना बना डाली। सहदेव के आदमियो ने रायबहादुर के आदमियो की चौकसी करना प्रारम किया। किस फ्लाइट (Flight) से माल आता है और कहा रखा जाता है किस प्रकार उसे बेचा जाता है। इन सबकी खोज की जाने लगी। इन सबको करते समय उन्हे यह नहीं मालूम था कि उनकी भी कोई चौकसी कर रहा है। रायबहादुर इतना अधेरे मे नहीं था। उसे यह अच्छी तरह मालूम था कि वह जिस तीव्रता से आगे बढ रहा है उसी तीव्रता के साथ उसके शत्रु भी बढते जा रहे हैं। यदि उनसे सावधान नही रहा गया तो वे कभी भी कहर ढा सकते हैं। यही कारण था कि रायबहादुर के आदमी भी इस बात की सतर्कता के साथ चौकसी कर रहे थे। यो समझ लीजिये कि यह रायबहादुर का गुप्तचर विभाग था जो उसे अन्दर के स्टाफ की और बाहरी गतिविधियो की सूचना देता रहता था। इसी स्टाफ के सदस्य नवीन कुमार ने सहदेव गेग के सदस्यो द्वारा की जा रही चौकसी की सूचना दी।

रायबहादुर ने शारीरिक शक्ति से मजबूत शातिर दिमाग के अपने [illegible] सदस्य शेरसिह मूलसिह जोरावर भवानीसिह आदि को इस काम [illegible] निपटाने का सकेत कर दिया। सहदेव बाहरी पोजिशन मे तो एक [illegible] था लेकिन अन्तरग मे एक माना हुआ तस्कर एव कुख्यात गुडा [illegible] कोई-कोई ही जानता था।

[illegible] चौराहे से सहदेव की कार गोरेगाव की ओर आगे बढ रही थी। [illegible] दो मोटर साईकिले चल रही थी। जिन पर सवार लोगों [illegible] पर लगी हुई थी। किन्तु कार बुलेट प्रूफ होने से वह कुछ [illegible] रहे थे। पर उन्होने भी कच्ची गोलिया नहीं खाई थी। वे बराबर

कार का पीछा कर रहे थे। ज्यो ही कार एक बगले के अहाते मे घुसी त्योही मोटर साइकिलो पर सवार चारो व्यक्तियो ने अपनी पोजीशन ले ली। सहदेव के कार से उतरते ही गोली मार दी गई। ड्राईवर को भी और बाहर खडे दोनो वाचमेन चौकीदारो को भी गोली चलाकर ढेर कर दिया। पिस्तोल पर साइलेन्सर (Silencer) लगा होने से गोलियो की तो आवाज ही नहीं आई पर उनके चीखने–चिल्लाने की आवाज आई। जिसे सुनकर बगले से लोग बाहर निकले। पर ज्योही उन्होने मर्डर देखा तो एक बार सहम गए। बाहर जाने का मतलब था स्वय को भी मौत के घाट उतारना। सब को अपनी–अपनी जान प्यारी थी। वे बाहर देख रहे थे पर किसी की बाहर निकलने की हिम्मत नहीं थी। जब उस बगले के लोग भी भय से बाहर नहीं आ पा रहे थे तो अन्य के आने की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। शेरसिह भवानीसिह आदि नकाब पाश मे थे। काम तमाम करने के बाद चारो सदस्यो ने मोटर साईकिले विपरीत दिशाओ मे दोडा दी। ये मोटर साइकिले भी सामान्य मोटर साइकिलो से अलग ढग की बनी हुई थी। जो बाहर से तो सामान्य दिखती थी। पर अत्याधुनिक अस्त्र शस्त्रो से भी लेस थी। जिनके साथ ऐसे यत्र फीट थे कि वहा कि हर सूचना रायबहादुर तक पहुच रही थी।

करीब 30 मिनिट बाद घटना स्थल पर पुलिस पहुची। लाश का पोस्टमार्टम (Postmartom) हुआ। पुलिस ने खोज करने का बडी तीव्रता के साथ काम करने का प्रदर्शन किया। जबकि उन्हे करना धरना कुछ नही था। पुलिस के उच्च अफसर रायबहादुर गेग से मिले हुए थे। अत होना जाना तो कुछ था ही नही। पर अपराधियो की धर पकड जारी थी। हर दिन 2–4 अपराधी पकडे जाते और खोज बीन कर छोड दिये जाते। असली अपराधी तक पहुचना उनके लिए मुश्किल था। एक दो बार तो पेपर मे भी सहदेव के मर्डर के समाचार मुख्य पृष्ठ पर छपे। 5–10 दिन तक सरगर्मी रही। उसके बाद तो लोग मानो उस घटना को भूल गए और उसी ढर्रे पर चल पडे। गुप्तचर विभाग के हाथ मे केश सोंप दिया गया। कब तक खोजबीन होगी। असली अपराधी पकड मे आएगा या नही। यह असभव प्रकिया बनती चली गई। यद्यपि मूल मे गलती तो सहदेव की ही है। उसने दूसरो की झोपडी मे आग लगाने की कोशिश की ही क्यो ? उसे क्या अधिकार था जो रायबहुर की गेग की खोज करके उसे डाउन करे। वह तो हुआ या नही पर सहदेव का काम तमाम जरूर हो गया। हम न तो किसी को गिरा सकते हें और नही उठा सकते हें। सभी अपने कर्मो के कारण उठते

गिरते है बाहरी सहयोग तो निमित्त है, मूल मे तो वह स्वय ही होता है।

रायबहादुर का व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ रहा था। यद्यपि रायबहादुर की उम अभी तक 24 साल की ही थी। 17 वर्ष की उम्र मे वह कोटा छोडकर बॉम्बे आ चुका था। करीब सात–आठ वर्षो की कडी मेहनत के परिणाम स्वरूप वह इतना आगे बढ चुका था। रायबहादुर को एक ही जूनून था पैसा–पैसा–पैसा। अब तो पैसा, ऐश्वर्य उसके पैरो पर बिछा था। उसके नौकर तक करोडपति बन गए थे। छोटी सी उम्र मे दुनिया की दूरी काफी लम्बी तय कर चुका था।

इतना सब कुछ होने के बाद भी उसके भीतर मे शान्ति नहीं थी। सारा बाहरी विलास उस के तन को तो सजा सकता था। पर मन को नही। मन तो अन्दर से बुझा–बुझा सा ही रहता था। भारी तनाव के बीच कई बार उसे नीद नही आने के कारण कम्पोज की गोली तक लेनी पडती थी। ड्रिंक (Drink) करने की आदत पड गई थी। स्मोकिग तो वह बॉम्बे मे जब से आया तब से करने लग गया। ऐसे कई दुर्व्यसन उसके भीतर मे प्रवेश कर गए थे। जो कि उसकी आत्मा को खोखली बना रहे थे।

माता कुसुमवती और बहिन विमा के कोटा से बॉम्बे आ जाने से बगले मे तो एक सात्विक रौनक आ चुकी थी। जहा रायबहादुर के न खाने का पता था न पीने का। लेकिन अब कुसुमवती के जाने से खाने–पीने आदि की तो समुचित व्यवस्था हो चुकी थी। खाने–पीने घूमने–फिरने की कहीं कोई दुविधा नही थी। अब कुसुमवती के भी ठाठ निराले थे। बीसो नौकर काम करने वाले इम्पोर्टेड गाडिया हर वक्त पास मे खडी रहती। इतना सब कुछ ऐश्वर्य होने पर भी अनुराग (रायबहादुर) के दुर्व्यसनो को देखते हुए कुसुमवती का मन हर वक्त अशान्त रहता था। वह कुछ कह भी नही सकती थी क्योकि अनुराग कोई बच्चा तो था नहीं। जिससे उसे कुछ कहा जा सके। लेकिन उसकी ये आदते कुसुमवती को कतई पसन्द नहीं थी। वह रातदिन सोचा करती थी कि किस प्रकार इन आदतो से अनुराग को मुक्ति दिलाई जाय। उसे अनुराग का पूर्व जीवन याद आता था। जब अनुराग पूरे स्कूल मे सबसे ज्यादा सिन्सीयर (Sincere) और शरीफ लडका माना जाता था और आज उसमे है तो रात दिन का फर्क नजर आता है। धन जरूर बेशुमार बढ गया है पर उसके आचरण मे भारी गिरावट आई है।

कुसुमवती के मस्तिष्क मे अचानक विचार आया। यदि अनुराग की शादी हो जाय तो हो सकता है इसकी आदतो मे परिवर्तन आ जाय। इधर

विमा भी 22 साल की हो चुकी हे। इसकी भी शादी करना है। अनुराग तो जेसे बेफिक्र है।

एक दिन मौका देखकर कुसुमवती ने अनुराग उर्फ रायबहादुर के सामने बात छेड दी। बोली बेटा ! तेरे जैसे सुपुत्र को पाकर धन, सपत्ति और सुख-सुविधा की दृष्टि से तो मुझे कोई कमी नहीं है फिर भी दो भारी कमी मुझे हर वक्त परेशान करती रहती है। जब तक वे कमिया पूरी न हो जाय तब तक यह सब ऐश्वर्य बिना नमक का भोजन है।

माता की बात सुनकर रायबहादुर बोला– मम्मी ! ऐसी क्या कमिया तुम्हे खाए जा रही है। बोलो–बोलो। मैं सब पूरी करूगा। पिता की सेवा तो मैं अभागा बेटा नही कर सका। गम है मुझे आज तक उस समय का जब मेरे पापा, चिकित्सा के अभाव मे तडफडते हुए इस दुनिया से चले गए। मैं विवश था, मेरे पास आर्थिक सम्पन्नता नहीं थी। लेकिन अब तो सब कुछ है। बोलो– तुम्हे क्या चाहिये। मैं आपकी हर तरह की इच्छा पूरी करने के लिए तैयार हू।

बेटा ! वह इच्छा धन दौलत से पूरी नहीं की जा सकती। तो फिर कैसे हो सकती है तुम्हारी इच्छा की पूर्ति अनुराग ने कहा। आखिर ऐसी क्या इच्छा है तुम्हारी, बताओ तो सही।

कुसुमवती बोली बेटा ! मेरी इच्छा है कि मेरे घर मे बहू आ जाय ताकि यह घर आबाद हो जाय। पोते–पोतियो के साथ खेलने की मनोकामना भी है। दूसरी इच्छा अब विमा के हाथ पीले भी हो जाने चाहिये। वह अब 22 वर्ष की हो चुकी है। यद्यपि इसकी शादी दो वर्ष पहले ही हो जानी थी। पर उस समय घर की परिस्थिति अच्छी न होने से यह काम नहीं हो सका। लेकिन अब तो जल्दी से जल्दी ये काम भी सम्पन्न हो जाना चाहिये। ये दो इच्छा मेरी है, वह तुम्हे पूरी करना है।

अनुराग ने कहा– मम्मी ! यह तुमने ठीक याद दिलाया। विमा की तो शादी करना अब जरूरी हो गया। पर अभी तक कोई अच्छा खानदानी लडका मिल नहीं रहा है। मैं और खोज करूगा। जल्दी ही इसका काम करने का विचार है। जहा तक मेरी शादी का प्रश्न हे। मेरा शादी करने का विचार नहीं है। यह सुनते ही कुसुमवती को झटका लगा। वह बोली–बेटा अनुराग ! ऐसा मत बोलो। जिन्दगी की ट्रेन को पटरी पर चलने के लिए दोनो तरफ लोहे के गाडर होना आवश्यक होता है। शादी बन्धन नहीं अपितु जिन्दगी की धारा

को उन्मुक्त रूप न देकर व्यवस्थित मर्यादा मे प्रवाहित करना है। फिर मेरे कोई दो चार बेटे नही जिससे दूसरे बेटे तुम्हारे पिता की वश परम्परा चला सके। मैं तो काफी लम्बे समय से यह साध, मनोकामना लिए बैठी हू कि तुम्हारी शादी हो। घर का आगन वधू के आगमन पर चमक उठे। यही नही मैं तो पोते–पोतियो का मुख देखने के लिए तरस रही हू और तुम यह कैसी बेहूदी बात करते हो।

बेटा जरा सोचो इतनी अरबो रुपये की सपति का क्या करोगे। जब कोई परिवार ही न हो। इतना सब कुछ करना धरना किस काम का। फिर मेरी भी उम्र पक गई है घर कभी नौकरो से नहीं चला करता है। उसे तो पुत्र वधू ही चला सकती है। नौकर काम कर सकते हैं पर उनमे दिलीय लगाव नही होता। घर की शोभा तो कुलीन ललना से ही होती है। अत तुम्हे शादी तो करनी ही है।

अनुराग की इच्छा तो कम थी पर आग्रह बडा जबर्दस्त था। जिसे टालना भी उचित कम लग रहा था। अनुराग ने सोचा शादी आज की आज तो करना है नही मम्मी को उचित जबाब देकर सतुष्ट कर देना चाहिये। उसने कहा– मम्मी ! आपका कहना उचित है। कुलीन लडकी मिलने पर शादी कर लूगा। कुसुमवती को यह सुनकर तसल्ली हुई। बात वहीं पर समाप्त हो गई।



प्रात काल का समय सूर्य की लाल अरुणिमा जल की सुषमा को और भी अधिक तरगित कर रही थी। कुसुमवती एव विमा, अपने बगले की खिडकी से समुद्र की सुषमा देख रहे थे। इसी बीच प्रकृति की सुषमा के मध्य निहायत एक प्राकृतिक आलौकिक व्यक्तित्व के दर्शन हुए।

श्वेत परिधान मे वेष्टित सिर और पैर नगे, फिर भी अनूठा तेज, दिव्यभाल, प्रलम्बबाहु आइने मे से निहारते समता से आप्लावित नेत्र युगल मुख श्वेत वस्त्र से आबद्ध (मुख वस्त्रिका पहने हुए) साधना का चुम्बकीय आकर्षण, गजगति से, दिव्य भव्य नव्य व्यक्तित्व के दर्शन कर दोनो मत्र मुग्ध हो गई।

क्या अनूठा व्यक्तित्व है, क्या दिव्य तेज है। भौतिक विलास के चरमोत्कर्ष के बीच अध्यात्म साधना का चरमोत्कर्ष। विर्निमेष दृष्टि के साथ ऐसे पावन दर्शन करने के बाद कुसुमवती ने विमा की तरफ मुखातिब होकर कहा– विमा ! कभी देखा है ऐसा अद्‌भुत व्यक्तित्व।

विमा बोली– मम्मी ! इन्हे तो मैं प्रथम बार ही देख रही हू। पर इन जैसे वस्त्रधारी साधु को तो कोटा मे मैंने कई बार रामपुरा बाजार मे देखा है। पर इनमे जो आकर्षण तरगित हो रहा है वह उनमे नहीं था।

कुसुमवती बोली बेटी ! मैंने आज से कोई 20 वर्ष पूर्व कोटा मे ऐसे ही एक अद्‌भुत व्यक्तित्व के दर्शन किये थे। पर उसके बाद आज तक ऐसा व्यक्तित्व नजर नहीं आया। इतने लम्बे अन्तराल के बाद ऐसे साधनाशील व्यक्तित्व के दर्शन हो रहे हैं। यद्यपि ये जेन साधु हैं तथापि ये प्राणी वर्ग से जुडे हुए हैं। कुसुमवती की बात सुनकर विमा बोली– फिर तो मम्मी इनके पास चलकर दर्शन करना चाहिये।

कुसुमवती बोली– जरूर–जरूर। चलो–चलो। वे दूर निकल गए। अभी दृष्टि मे आ रहे हैं। फिर कही चले गए तो हमे पता भी नही चलेगा। अत यह मौका नहीं चुकना चाहिये। तुरन्त दोनो बगले से नीचे उतरी। गाडी के पास ड्राइवर खडा था। उसने तुरन्त कार का गेट खोला। दोनो न गाडी मे बैठते ही उन महायोगी के पास ले जाने का सकेत किया। ईशारा पाते ही पलक झपकते ही महायोगी के पास गाडी जा खडी हुई। बडे अदब से ड्राइवर ने फाटक खोला। दोनो बाहर आई और महायोगी के सामने जाकर

घुटने टेक सिर झुकाते हुए ह्रदय की असीम आस्था के साथ प्रणाम किया। महायोगी ने दो भद्र महिलाओ को प्रणाम करते हुए देखकर रक्षा रूप दया पालने के आशीर्वचन के साथ सम्बोधित किया। दोनो महिलाए, महायोगी के मुखमण्डल से टपक रहे ब्रह्म तेज का पान करती हुई मुख से प्रस्फुटित वचन मुक्ताओ को सुनकर कृतार्थ हो उठी।

विश्व बन्धुत्व की भावना से ओतप्रोत योगी प्रवर ने आगे कहा–आप कौन हैं और कहा से आ रही हैं ?

कुसुमवती बोली– महायोगी मेरा नाम कुसुमवती है और यह मेरी बेटी विभा है। मेरे पुत्र का नाम अनुराग शुक्ला है। हमारा बगला इस जुहू के किनारे ही 12 नम्बर का है। जब आपका इधर से पदार्पण हो रहा था तो आपके पावन दर्शन कर हम अभिभूत हो उठे और आपके समीप दर्शन करने की भावना से अनुप्रेरित हो आपकी सेवामे उपस्थित हुए हैं।

आपकी धर्मनिष्ठा सतभक्ति प्रशसनीय हे। इस प्रकार कहते हुए जब महायोगी आगे बढने लगे तो कुसुमवती ने पूर्ण विनम्रता के साथ कहा– योगी प्रवर ! इस समय आप कहा विराज रहे हैं। आपके सत्सग का समय क्या है। हमारी आपके दर्शन एव सत्सग का लाभ लेने की भावना है।

महायोगी किचित खडे होकर बोले– आपकी भावना उत्तम है।

ठीक 8 बजे सत्सग का कार्य प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम एक लघुवय के मुनि पधारते हैं वे विशाल हॉल के भव्य पाट पर आकर बडे शान्तभाव से विराज जाते हैं। तदनन्तर प्रभु प्रार्थना करने के बाद उद्‌बोधन फरमाते हैं। उन्होने बतलाया– ससार मे मुख्य रूप से दो ही तत्त्व हैं– एक जड और दूसरा चैतन्य। इन तत्त्वो के सयोग से ही नवतत्त्व बने हैं। यह सारी दुनिया का विस्तार मूल रूप से उन दो तत्त्वों के सयोग का ही परिणाम है। जड चैतन्य दोनो परस्पर एकदम विपरीत होते हुए भी चैतन के अनादिकालीन वासनात्मक सस्कारो के कारण मिल गए हैं। जिसके कारण जड देह मे अधिष्ठित आत्मा अपने मूल चैतन्य स्वरूप को भूलकर बाहरी जड तत्त्वो मे उलझकर परेशान हो रहा है। जब तक यह स्थिति बनी रहेगी, वह कभी आत्मा के मूल स्वभावगत सुख को प्राप्त नहीं कर सकती। उसे पाने के लिए अपने आप मे आना होगा। शरीर एव उनसे जुडे सभी तत्त्वो से मोह छोडना होगा।

लघुवयी साधु जी का उपदेश भी बडा मार्मिक हो रहा था। इसी बीच महायोगी का शिष्य मण्डली के साथ पदार्पण हो गया, सभी श्रोताओ ने खडे होकर स्वागत किया। महायोगी, एक सीधे सादे धवल पाट पर सत विशेष द्वारा लाए गए श्वेत आसन विशेष पर विराज गए।

कुसुमवती को श्वेत परिधान मे वेष्टित निष्काम देह श्री के पावन दर्शन से मानो ऐसा लग रहा था जैसे अर्धनिशा मे चन्द्रमा की छिटकती चादनी को पाकर कुमुदिनि खिल रही है। जिनका पावन दर्शन ही भव्यजनो को आकर्षित कर रहा था। तब उनके उपदेश की तो बात ही ओर थी। कुछ ही समयानतर मे महायोगी के मुख से पतितपाविनी, जन सतापहारिणी पीयूषवर्षिणी दिव्य वाणी प्रवाहित होने लगी।

कुसुमवती को लगने लगा कि गगोत्री से बहती हुई निर्मल धारा के बीच वह बैठी है जो उसके वर्षो से सतप्त मन को प्रक्षालित कर स्वस्थ बना रही है।

महायोगी ने फरमाया–जीव अपने कृतकर्मो से ही सुख–दु ख की अनुभूति करता है। परमात्मा किसी भी कार्य मे हस्तक्षेप नही करता। ईश्वर के हिलाए बिना ससार का कोई पत्ता भी नहीं हिल सकता। यह धारणा उचित नहीं क्योकि ईश्वर कृतकृत्य हे, वह ऐसे कार्यो मे भाग नहीं लेता। यदि ईश्वर ही ससार को बनाता है यह मान लिया जाय तो ईश्वर पर कई विपत्तिया आएगी। प्रथम तो ईश्वर ने इस दुनिया को क्यो बनाया उसे क्या आवश्यकता पड़ गई। यदि यह कहे वह ऊब गया था तो यह ईश्वर का बचकानापन ही माना जाएगा दूसरी बात यदि दुनिया बनाई भी तो एक को

सुखी, दूसरे को दु खी एक को मूर्ख, दूसरे को विद्वान क्यो बनाया। यदि यह कहे कि उसने अपने कर्मानुसार बनाया है तो कर्म कहा से आए। जब सबसे पहले जीव बनाया तो जब जीव पहले थे ही नहीं तो कर्म कहा से कर लिए। यदि कर भी लिए तो सर्वशक्ति मान ईश्वर क्या जीवों के पापो को नहीं बदल सकता ? यदि नहीं तो फिर सर्वशक्ति मान कैसा। इस प्रकार ईश्वर को सृष्टि का कर्त्ता मानने पर अनेक भ्रान्तिया पैदा होती है। जिनका निराकरण नहीं हो सकता।

अत सत्य है, स्वय जीव ही अपने सुख–दु ख का कर्त्ता है। अत इन्सान को चाहिये कि वह अपने सत्पुरुषार्थ से अपने भाग्य को सवारने का प्रयास करे। महायोगी द्वारा ईश्वर के स्वरूप और स्वय के पुरुषार्थ का महात्म्य समझकर कुसुमवती और विभा बहुत प्रभावित हुई। अब उनका प्रतिदिन सत्सग मे आने का क्रम बन गया। एक दिन कुसुमवती ने महायोगी की सेवा मे निवेदन किया– भगवन् ! क्या आप श्री हम जैसी पामर आत्माओ की जिज्ञासा का समाधान देने के लिए समय प्रदान कर सकेगे ?

महायोगी बोले– अवश्य–अवश्य ! आपके मन मे जिस किसी भी प्रकार की जिज्ञासा हो, नि सकोच भाव से रखकर समाधान ले सकते हो। हा, समय मध्याह्न 3 बजे का उपयुक्त रह सकता है। क्योकि हमारे यहा महिलाए सूर्यास्त के बाद नही आ सकती। दूसरी बात दिन मे भी किसी न किसी पुरुष को भी साक्षी मे बैठना आवश्यक है तो मध्याह्न मे पुरुष–महिलाए रहती है। अत आप आना चाहे तो स्वतन्त्र है।

योगी श्रेष्ठ ! आप से शका समाधान करते समय एक पुरुष की आवश्यकता क्यो ? कुसुमवती ने कहा।

के सानिध्य मे पहुच गई। उन्हे समय के साथ आया देखकर महायोगी ने फरमाया—लगता है आप दोनो की सत्सग के प्रति गहरी रुचि है। तभी आप ठीक समय पर पुन पहुच गई हो।

महायोगी जी । ऐसा कुछ नहीं है यह तो आपकी साधना से अनुच्यूत व्यक्तित्त्व ही हमे खीच लाता है। धर्म की भावना जितनी हमारे मे नहीं उतना आपके निर्विकार व्यक्तित्त्व का आकर्षण अधिक है।

चलो आपका कैसे भी सही, अध्यात्म पथ पर अवतरण निज पर के लिए कल्याणकारी है। यो कहते हुए महायोगी ने उन्हे अपनी जिज्ञासा रखने के लिए कहा। हा आपका प्रथम प्रश्न तो यही है कि बहिनो से धर्मचर्चा करते वक्त भाई की आवश्यकता क्यो ? कुसुमवती जी । (यह सबोधन ही मानो कुसुमवती के कानो मे अमृत घोल रहा था) साधु भी साधना के पथ पर आगे बढ रहा है। ऐसी स्थिति मे उसकी मर्यादा सुरक्षित रहे इसलिए बहिन से धर्मचर्चा करते वक्त भी भाई की अनिवार्यता है। इसी बीच विभा बोल पडी—लेकिन भगवन् । सामान्य साधक के लिए यह उचित हो सकता है पर आप तो महायोगी है। आप के लिए इन नियमो की क्या आवश्यकता है ?

महायोगी जी बोले— विभा जी । आपका कहना किसी दृष्टि से उचित हो सकता है, पर नियम तो बडो के पालन करने पर ही सामान्य साधको मे साकार हो सकता है। छोटे साधको के लिए बडे साधक आदर्श होते हैं अत उन्हे तो पहले पालना अनिवार्य है। फिर मैं तो अपने आप मे छोटा— अल्पज्ञ साधक ही हू। अत वैसे भी मेरे लिए तो नियमो की पालना अनिवार्य है।

धन्य है महायोगी श्रेष्ठ । हमने आपकी प्रभुता का राज पा लिया है। लघुता के भाव कितने गहरे हैं। हम तो आपका पावन सानिध्य पाकर धन्य हो गए।

महायोगी श्रेष्ठ । आप मुख पर वस्त्र क्यो धारण करते हैं ? विभा के प्रश्न पूछने पर महायोगी बोले— विभा बहिन । आपका प्रश्न बहुत अच्छा है यह सबके समझने जेसा है। जैन दृष्टि से हवा मे असख्य जीव बतलाए गए हैं। खुले मुह बोलने पर गर्म हवा के बाहर निकलने पर उन सूक्ष्म जीवो की हिसा होती है, अत मुख पर कपडा लगाना आवश्यक हे। मारवाड म देखा जाता है, जब व्यक्ति शादी करने के लिए जाता है तो घोडी पर बैठा पूरे रास्ते भर मुख पर कपडा लगाए रहता है। जबकि शादी करने जा रहा हे। शादी करने वाले को वर कहा है। 'वर' याने श्रेष्ठ । श्रेष्ठ व्यक्ति का श्रेष्ठ लक्षण

है मुख पर कपडा लगाना। ऐसे अनेक कारणो से मुख पर वस्त्र धारण करना आवश्यक है। विमा– बहुत ही सटीक एव हृदयगम्य समाधान दिया है आपने। मै तो समझी थी यह केवल जैनियो की रूढ परम्परा है या चिह्न है। लेकिन यह तो हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। भगवन् ! लेकिन जैन साधु तो कपडा मुख पर लगाते हैं नाक पर नही ऐसा क्यो ?

विमा के प्रश्न करने पर महायोगी बोले– आपका कहना उचित है। प्रथम तो नाक से निकलने वाली हवा छनकर बाहर आने से जीव नहीं मरते दूसरी बात नाक द्वारा ज्यादातर ऑक्सीजन (Oxygen) ही खींचता है, जबकि खुला मुह सभी तरह की गैस खींच लेता है, अत मुख पर वस्त्र लगाने की अनिवार्यता बतलाई है। योगीप्रवर ! मेरा अच्छा समाधान हुआ। क्या मैं ओर भी कुछ पूछ सकती हू ?

महायोगी बोले– अवश्य–अवश्य ! जितने भी आपके मन मे प्रश्न हो, सब बिन सकोच पूछ लीजिये। जितना आज समय होगा, आज समाधान देने का प्रसग बन रहा है। अन्यथा कल परसो यथावसर समाधान दिये जा सकते हैं।

अच्छा योगीप्रवर ! यह फरमावे कि जैनी जन्म से ही बन जाता है, या हर कोई जैनी बन सकता है ?

विमा जी ! आपकी जिज्ञासा समयोचित है। जैन धर्म मे जन्मना जाति का कोई महत्त्व नही है। जैनकुल मे पैदा होकर भी जो जैन नियमो को पालन नही करता वह जैन नही है। जैनी बनने के लिए सात कुव्यसन, जुआ, मास शराब चोरी शिकार परस्त्रीगमन, वेश्यागमन का सदा के लिए त्याग करना जरूरी है। इसके बाद देव अरिहत, गुरु–निर्ग्रन्थ धर्म अहिसामय पर सच्चा श्रद्धावान होना चाहिये।

सिर चलते हैं। पैसा टका अपने पास नहीं रखते। सूर्यास्त के बाद खाना–पीना नही करते। दाढी मूछ एव सिर के बाल भी आने हाथ से उखाडते हैं। जिन्दगी भर तक जो गृहस्थ के घर से सहज स्वामाविक आहार मिलता है वही लेते हैं। महिला का स्पर्श भी नहीं करते हें। आदि। ऐसे साध्वाचार के नियमो का पालन करने वाला हर साधक गुरु की केटेगिरी मे आ जाता है।

जो धर्म अहिसा को सपूर्ण प्रतिष्ठा देता है वह हर धर्म हमारा है। इन तीनों मौलिक तत्त्वो पर जो विश्वास रखता है, वह जैनी है।

विमा बोली– बहुत अद्भुत व्याख्या की है आपने। आपका जैन धर्म तो ऐसा लगता है कि सभी धर्मो का हार्ट है। इसका अपना कुछ नहीं है जो भी सत्य है, वह उसका है। यो कहा जाय तो सारे धर्मो के सत्याशों का सपूर्ण रूप हे जैन धर्म।

महायोगी– विमा बहिन ! आपके पास तो बहुत कम समय मे सत्य को समझने की तीव्र मेघा है।

भगवन ! यह बतलाए कि क्या खास कम्युनिटी के अलावा अन्य कास्ट के लोग भी जैनी हैं ?

हा–हा, अवश्य विमा बहिन ! अभी क्यो भगवन् महावीर स्वय काश्यपगौत्रीय क्षत्रिय थे। उनका प्रथम शिष्य इन्द्रभूति गौतम गोत्रीय ब्राह्मण थे। अर्जुन अणगार माली थे। शालिभद्र ओर धन्ना वैश्य थे तो हरिकेशी अनगार हरिजन थे। याने उन्होने जैनी ही नहीं पर उनके भी पूजनीय जीवन मे चार वर्णो के लोगो को प्रवेश दिया है। जैन कोई भी व्यक्ति बन सकता है। जैन, जन्मना नहीं, कर्मणा होता है।

योगी श्रेष्ठ (विमा बहिन ने कहा) क्या हम भी जैन बनने लायक हें ?

हैं या नहीं पर हमारे लिए तो आज से आराध्य पूजनीय वन्दनीय सब कुछ आप ही हें ओर रहेगे। हमने आपको समझा है आपकी निर्विकार छवि हमारे दिल की गहराईयो मे उतर चुकी है। इस भोतिकता की भारी चकाचोंध मे विलासिता नग्न ताण्डव कर रही हे उसके बीच आप जैसा अद्भुत व्यक्तित्व का होना सचमुच कीचड में कमल खिलना है पत्थरो मे हीरा मिलना है।

आराध्य देव ! कभी आप हमारी कुटिया भी पावन कर यद्यपि आप नगे पैर चलते हें। ऐसी स्थिति मे हमारे लिए चला गया हर कदम हमारे लिए कष्टदायी है। हर परिस्थिति में जीवन भर पाद विहार का सोचना भी हमारे लिए तो मुश्किल है। भगवन् ! हमारी यह दिलीय तमन्ना हे कि एक बार हमारे

यहा अवश्य पधारे। वैसे आपका शौच निवारणार्थ उधर पधारना होता ही है। अत अतिरिक्त श्रम तो शायद नहीं पडेगा। यदि आपका पदार्पण हो जाय तो हम धन्य हो जायेगे।

महायोगी बोले– विभा जी ! हम साधु लोग जिस मकान मे महिलाए रहती है वहा विशेष परिस्थिति के अलावा एक दो दिन से ज्यादा नहीं ठहरते। आपके बगले मे रहने से हमारी मर्यादा का प्रसग कैसे बन सकता है ?

इसी बीच कुसुमवती बोली– आराध्य प्रवर ! आपका फरमाना उचित है। परन्तु हमारा बगला आपकी शुभ कृपा से दो कोठी जितना विशाल है। आरपार है। आगे भी रास्ता है, पीछे भी। उसमे रहने वाले हम तीन प्राणी ही है। हम तो ज्यादातर आगे वाले भाग मे ही रहते हैं, पीछे वाला भाग खाली ही रहता है। उसका रास्ता भी पीछे ही है। बीच का रास्ता बद कर देगे। फिर तो वह पूरी तरह स्वतन्त्र मकान हो जाएगा। तब मैं समझती हू आपकी मर्यादा मे कोई बाधा नही आएगी।

महायोगी– कुसुमवती जी ! आपने तो सारी व्यवस्था ही मानो जमा दी है। लेकिन हा एक बात और पूछना है कि आपने अभी बतलाया कि आप घर मे तीन प्राणी हैं जबकि आपको जब भी देखता हू तब आप दो मा बेटी ही दिखलाई देती हैं तीसरा प्राणी कौन है ?

कुसुमवती–ओ हो गुरुदेव ! तीसरा प्राणी मेरा बेटा अनुराग शुक्ला है।

महायोगी– लेकिन कुसुमवती जी ! वह तो कभी यहा आया हो ऐसा हमारे उपयोग ध्यान मे नही है।

महायोगी–हो सकता है, आपका कहना सही हो जाय। लेकिन हम आपके यहा आने की सोचे उसके पहले उनकी स्वीकृति भी आवश्यक है। उनके यहा आने की आवश्यकता नहीं। बस यह जानकारी मिल जाना चाहिये कि उन्हे कोई आपत्ति नहीं है।

कुसुमवती–ठीक है गुरुदेव ! वैसे तो मैं उसकी मा हू फिर भी मैं उसकी अनुमति लेकर ही आपके चरणो मे प्रार्थना करूगी।

कुसुमवती– विभा ने श्रद्धा की असीम आस्था के साथ गुरु चरणो की वन्दना की। भाव–विभोर होकर वे वहा से घर की ओर जाने के लिए कार मे आकर बैठ गई। आज उनका तन–मन सब कुछ प्रफुल्लित था क्योकि अब तक जो पाया था, वह तन–मन को ही छू पाया था। लेकिन जो इन महायोगी से पाया वह तो आत्मा को छू गया। रोम–रोम मे समा गया।

आज रात्रि डिनर (Dinner) के समय एक ही टेबुल पर अलग–अलग कुर्सियों पर कुसुमवती, अनुराग एव विभा बैठे थे। वे भोजन कर रहे थे। इसी बीच कुसुमवती ने बात चलाई–अनुराग बेटे ! इस समय इस बॉम्बे महानगर मे एक चलते–फिरते भगवान पधारे हैं। वे अद्‌भुत साधक हैं। मैं दिन मे भी उनके दर्शनार्थ गई थी, दर्शन क्या किये मानो मेरा रोम–रोम खिल उठा।

अनुराग बीच मे ही बोल पडा– मम्मी ! क्या बहकी–बहकी बाते करती हो। क्या अभी तक भी तुम्हारी अध श्रद्धा नही गई। तुमने पिता जी की जिन्दगी एव हमारे अध्ययन के लिए कितने देवी देवताओ को पूजा होगा ? कुछ हुआ है अब तक। बुखार आया ताबीज बाधती, क्या मिला उससे। यह साधु–सन्यासी तन्त्र–मत्र करके पेट भरने के चक्कर मे बहुरुपिये की तरह विविध वेश बनाकर आते रहते हैं और अपना पेट पालते हैं। इनके चक्कर मे नहीं पडना चाहिये।

ठीक कहते हो बेटे अनुराग (कुसुमवती ने कहा) आजकल की दुनिया मे ऐसे लोगो की कमी नहीं है, पर सब ऐसे ही हो, यह कोई आवश्यक नही है। कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं जो अद्‌भुत होते हैं। क्या पत्थरो मे हीरे नही निकलते हैं ? क्या कीचड में कमल नहीं खिलते हे ? यदि हा तो दुनिया बहुत बडी है। ढोंगियो के बीच अच्छे साधु, महायोगी भी होते हैं।

अनुराग– मा मैंने तो जितने भी साधु देखे हैं, वे ढोगी ही मिले हैं। गाजा, भग, दारु पीने वाले भी साधु हैं, शादी तो नहीं करते पर रखेल रखने वाले भी साधु हैं, कारो और मोटरो में बिना कमाई के गुलछर्रे उडाने वाले भी

सन्यासी हैं। लच्छेदार भाषण देकर हजारो लाखों भोले-भाले लोगो को एकत्रित कर ठगने वाले सन्यासी किस काम के। आए दिन पत्र-पत्रिकाओ मे उनके चरित्र को प्रश्नाकित करने वाले समाचार छपते रहते हैं। ऐसे साधु तो देश के लिए एक कलक है। उनसे तो दूर ही रहना चाहिये।

कुसुमवती ने बडे धैर्य से सुना फिर बोली- बेटा ! तुम्हारा अनुभव भी सही है। पर मैंने भी बाल ऐसे ही पक्के नहीं किये हैं। एक उम्र पार कर प्रौढता की देहली पर हू। मेरी अनुभूति प्रज्ञा ने भी सब कुछ समझा है। जिन महायोगी के लिए कह रही हू। निश्चय ही वे ऐसे नहीं हैं।

अनुराग ने सोचा- क्यो मम्मी का दिल दुखाया जाय। उसने कहा- अच्छा मम्मी ! ठीक है हो सकता है वे योगी अच्छे हो।

कुसुमपती-ऐसा नहीं बेटे ! मैं तुम्हे जबर्दस्ती नही मनवा रही हू। यह तो दर्शन करके अनुभूति करने का विषय है। तुम एक बार भी उन्हे देखलोगे तो तुम्हे लगेगा वाकई कोई अद्‌भुत योगी है।

अनुराग- पर मम्मी ! न तो मेरे पास समय है, और न ही मेरी कोई रुचि है। तुम चाहती हो तो मैं मना नहीं करता।

इतनी देर चुप बैठी विभा बीच मे ही बोल पडी- भैया बात तो आप सच कहते है। मेरी भी इन साधुओ मे कोई रुचि नहीं थी लेकिन मम्मी के साथ मै भी गई थी। उनके दर्शन करने। यह योगी तो बहुत ही निराले हैं। लगता है उनका दर्शन ही पाप सताप हरने वाला है। जिस प्रकार भयकर गर्मी मे परेशान व्यक्ति जब एसी (A C) रूम मे आकर शान्ति का अनुभव करता है वैसे ही तन-मन से अशान्त व्यक्ति ऐसे योगी के चरणो में जाकर अनुपम शान्ति की अनुभूति करता है। मै मम्मी के साथ गत तीन-चार दिन से जा रही हू। मैने जो भी उनके सानिध्य मे पाया वह बयान नही कर सकती।

अद्भुत योगी के पास ही मिलेगी।

अनुराग – मम्मी ! आपका कहना, उचित हे, परन्तु मेरे पास समय नहीं हे।

कुसुमवती–मेरे प्यारे बेटे ! यदि में बीमार हो जाऊ तो क्या फिर तुम्हारे पास मेरा इलाज करवाने के लिए समय नहीं होगा ? जब हिल स्टेशनो पर तू मुझे स्वास्थ्य के लिए घुमाने ले जाता है, क्या उस समय तेरे काम मे अडचन नही आती ? मैं मानती हू कि जिसमे इन्सान की रुचि नहीं हो, उसके लिए उसको समय नहीं मिलता है। पर कई बार रुचि बनानी भी पडती है।

अनुराग समझ गया कि आज मम्मी छोडने वाली नहीं है। उसके लिए दुनिया मे जो कोई सारभूत पूजनीय वस्तु थी तो वह उसकी माता ही। पिता तो इस दुनिया मे उसके लिए कष्ट उठाते हुए चल बसे थे। अब केवल मा ही बची थी। वह सब कुछ अपनी मा को ही मानता था। इसलिए कई बार न चाहते हुए भी मा का मन रखने के लिए वह बहुत सारे काम कर दिया करता था। आज भी जब कुसुमवती का इतना आग्रह देखा तो वह बोल पडा अच्छा मम्मी ! बोलो क्या करना है मुझे। आदेश फरमाए।

कुसुमवती बोली– बेटा ! आदेश वाली तो कोई बात नही है। उन महायोगी को मैंने कुछ दिन अपने बगले पर विराजने की प्रार्थना की तो प्रथम तो वे बोले– उनकी मर्यादा स्वतन्त्र बगले मे ठहरने की है तो मैंने अपने बगले के पिछले भाग मे पधारने का निवेदन किया तब वे बोले कि आपकी तो विनती है पर आपका सुपुत्र अनुराग जी शुक्ला की क्या इच्छा है ?

मैंने कहा ऐसी कोई बात नही है। यद्यपि उसकी धर्म मे रुचि तो हे नहीं पर वह मेरी बात नही टालेगा। लेकिन उनका यह सकेत था कि अनुराग शुक्ला की स्वीकृति लेने पर ही हम आपके बगले पर आने का सोच सकते हैं। इसलिए तुम्हारी अनुमति की आवश्यकता है।

मम्मी जरा सोचे आप। किस योगी को ला रही हो। वे कैसे क्या आएगे ? उनकी क्या व्यवस्था करनी होगी ? बीच मे ही कुसुमवती बोल पडी– बेटा ! मैंने पहले ही कहा था ना कि वे ऐसे वैसे सन्यासी नही हैं। वे पाद विहारी है। फिर कुसुमवती ने जन साधु का परिचय दिया। और उसमे भी महायोगी की विशेषता का दिग्दर्शन करवाया। उनके लिए कोई व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है। वे भोजन भी एक घर से नही लेते हैं। थोडा–थोडा सभी शाकाहारी घरो स लाते हैं। वे तो देते ही देते हैं लेते तो कुछ हैं ही नहीं। जब तुम उनके पास बैठोगे तो तुम्हे ही पता चल जाएगा। वे सवरे 8 बजे से

9½ बजे तक सत्सग करते हैं। उनमे 8½ बजे से 9½ बजे तक महायोगी जी स्वय उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हैं। हमे तो केवल इतना ही करना है कि अधिक से अधिक लोगो को सत्सग के लिए एक बार प्रेरित करना है फिर तो उनमे इतनी जबर्दस्त शक्ति है कि लोग स्वत ही खींचे चले आएगे।

यद्यपि अनुराग शुक्ला की कोई खास रुचि नहीं थी। फिर भी कुसुमवती का दिल रखने के लिए उसने हा भर दी। अच्छा मम्मी यदि वे यहा आएगे, तो तुम्हारे आदेशानुसार जो भी बन सकेगा वह करूगा।

बहुत प्रसन्न होते हुए कुसुमवती ने कहा– बेटा ! तुमसे मुझे यही आशा थी। तुम मेरी बात नही टालोगे। अब कल हम उनकी सेवामे अपने यहा पधारने हेतु प्रार्थना करेगे। वे कब पधारते हैं इसकी जानकारी लेगे। डिनर (Dinner) भी हो गया और बात भी हो गई।

नये सूर्य की नई प्रभात/यद्यपि हर दिन सूर्य वही दिन और वही प्रभात लेकर आता है, जो कल था और आने वाले दिन भी होगा। तथापि वह अपूर्व-अपूर्व सगठनो सरचनाओ मे रूपान्तरित होने से अपूर्वता पाता चला जाता है। कुसुमवती और विमा प्रात कालीन कार्यो से निवृत्त होकर महायोगी के सानिध्य मे पहुची। लघुवय बालयोगी का सत्सग चल रहा था। वे साधनाशील होने के साथ ही बडे मार्मिक उपदेष्टा थे। कुछ समय के बाद महायोगी का पदार्पण हो गया। उनके पट्टासीन होने के बाद शातभाव से जनमानस उनका सत्सग सुनकर भाव विभोर हो उठा। सत्सग के समापन होने पर मा-बेटी ने महायोगी के नजदीक पहुचकर निवेदन किया– भगवन् ! कब आप हमारी कुटिया को पावन करेगे ? वैसे आप श्री के सकेतानुसार हमने अनुराग से पूछ लिया है और उसने भी अपनी ओर से आप श्री के पधारने की प्रार्थना की है।

महायोगी बोले–कुसुमवती जी ! आपकी भावना प्रबल है, परन्तु मुझे [illegible] जाने से विशेष लाभ क्या होगा ?

स्थान पर आने की भावना रखते हैं और हो सका तो रविवार को सत्सग वहा किया जा सकता है।

महायोगी के मुख से इतना सुनते ही मा–बेटी हर्षोत्फुल्ल हो उठी। तथा चरणो मे वन्दन, नमस्कार करते हुए आभार व्यक्त किया। बगले पर जाकर अनुराग शुक्ला को सारी स्थिति से अवगत कराया। उसे लगा कि अब तो महायोगी कैसे भी क्यो न हो जब बगले पर आ ही रहे हैं तो उनका स्वागत अपने स्टेण्डर्ड (Standard) के अनुसार होना चाहिये। अत स्थान–स्थान पर स्वागत गेट सजा दिये गए। फूल बिछाने की तैयारी होने लगी। इतने मे कुसुमवती को लगा कहीं, फूल बिछाना गलत तो नही हो जाएगे क्योकि वे महायोगी तो सूक्ष्म जीव की रक्षा के लिए भी नगे पैर रहते हैं। वे फूल पर कैसे चलेगे। फिर जब उसने इसकी जानकारी ली तो लगा कि हकीकत मे महायोगी फूल पर पैर रखना तो दूर उसका स्पर्श भी नहीं करते हैं। जब महायोगी का पदार्पण होने लगा तो अनुराग शुक्ला को यह देखकर गजब का आश्चर्य हुआ कि जितना विराट व्यक्तित्व उतना ही सिम्पल (Simple) वेश। नगे पैर स्वय के उपकरण स्वय उठाए चले आ रहे हैं एक अवधूत योगी। जब उन्हे लगा कि ये गेट उनके स्वागत मे लगे हैं, तो वे एक भी गेट मे प्रवेश न कर उसके किनारे बाहर से आगे बढते चले गए। अनुराग शुक्ला भी कम्पनी के स्टाफ मेम्बरो (Staffmembers) एव अपने परिचित दोस्तो के साथ स्वागत करने के लिए सामने आया था और वह भी महायोगी के पीछे–पीछे चलने लगा। प्रथम बार दर्शन मे ही उस पर महायोगी के सीधे और सरल व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पडा। महायोगी ने बगले के परिसर मे पहुचकर ठहरने की आज्ञा ली। स्वतन्त्र उपखण्ड मे अपने छोटे–बडे सभी योगियो के साथ जाकर विराज गए। जब अनुराग शुक्ला ने देखा ये तो डनलप के गद्दो पर भी नहीं बैठते, कालीन पर भी पैर नही रखते और भोजन भी एक घर से नहीं लेकर आसपास के सभी घरो से स्वय लेने जाते हैं। उसने नजदीक से योगियो की क्रियाओ को देख ली वह कुछ प्रभावित हुआ। अब उसने कल के सत्सग के लिए आसपास के लोगो को ही नही अपितु बॉम्बे के टॉप धनवानो को भी आमत्रित किया। बगले के बाहर खुले परिसर मे सत्सग करवाया गया। भारी सख्या मे लोग उपस्थित थे।

महायोगी की वाणी, निर्मल मदाकिनी की तरह प्रवाहित होने लगी। जो भी इन्सान, दुनिया मे आया है उसे एक न एक दिन जाना ही हे। जन्म के साथ मृत्यु जुडी है। इस अपरिहार्य स्थिति को कोई भी नहीं टाल सकता।

बल्कि जाने का समय भी फिक्स नहीं है। ऐसी अनिश्चित जिन्दगी मे स्थाई सुख की चाहना करना व्यर्थ है। जिन भौतिक ऐश्वर्य को इन्सान एकत्रित करने मे लगा है। वह स्वय स्थाई नहीं है तो उस विनाशी ऐश्वर्य से अविनाशी सुख को पा नही सकता सुख देने से सुख मिलेगा। यदि गले मे किसी से माला पहनना है तो पहले पहनाने वाले के सामने झुकना होगा। सामने वाले का सम्मान करेगे तो आपका भी सम्मान होगा। यदि हम किसी की रक्षा करेगे तो हमारी भी एक न एक दिन रक्षा होगी।

आदमी अपने नसीब के अनुसार फल पाता है। लेकिन नसीब को बनाने वाला भी आदमी के स्वय का पुरुषार्थ ही है। अत निज पुरुषार्थ को समझकर जगाने की आवश्यकता है।

अच्छा पुरुषार्थ करते हुए भी परिणाम गलत आता है, तो वह भी अच्छे के लिए समझना चाहिये। अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा फल एक दिन अवश्य मिलता है। यदि अच्छा करते हुए भी परिणाम गलत दिखता है तो वह परिणाम अच्छे कार्य का न होकर कोई अन्य किसी पाप के उदय का परिणाम है। जिस प्रकार नीबू का बीज बोया और आम का अकुरण होता है तो यह स्पष्ट है कि आम का बीज जमीन के भीतर पहले से विद्यमान है तभी आम का अकुरण हुआ है। लेकिन आम का अकुरण नींबू के बीज से नहीं हो रहा है। यही स्थिति पुण्य पाप के उदय के विषय मे भी समझनी चाहिये।

अन्याय अनीति से कमाए धन का स्वय के उपभोग मे ही खर्च करने वाले इन्सान को उसका रिएक्शन (Reaction) हुए बिना नहीं रहता जो रिएक्शन उसके तन–मन दोनो के लिए खतरनाक होता है और बिना उपभोग के केवल सम्पत्ति एकत्रित करने वाला इन्सान तो और भी अधिक अज्ञानी है। क्योकि पाप भी किया पाया भी कुछ नहीं। दूसरी बात बच्चो के लिए सम्पत्ति छोडने की आवश्यकता नही। एक कहावत है–

पूत सपूत तो क्यो धन सचय।

पूत कपूत तो क्यो धन सचय।।

यदि आपका बेटा सपूत है तो वह स्वय पैसा कमा लेगा और यदि कपूत है तो आपका कमाया हुआ भी उडा देगा। अत सचय करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। धन की सबसे उत्तम गति दान ही है। जो कि इस लोक मे सम्मान और परलोक मे महान् समृद्धि देने वाली बनती है। धन होना कोई महत्त्वपूर्ण नही है। धन तो एक नगर वधू के पास भी खूब मिल जायेगा। पर उससे कोई इज्जत नही। धन का उपयोग दान मे करने पर ही सम्मान की स्थिति बन सकती है।

इन्सान विश्व के 84 लाख प्राणियो मे सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उस पर सारे विश्व के प्राणियो का प्रतिनिधित्व है। उन सबकी रक्षा करने की उस पर जिम्मेवारी हे। उसमे भी इन्सान को इन्सान का ध्यान तो रखना ही चाहिये। जो इन्सान, इन्सान से प्यार नहीं कर सकता, वह कही पर भी चला जाय कितना भी धर्म कर ले पूजा पाठ कर ले, फिर भी वह परमात्मा से प्यार नही कर सकता।

कोई हमारे लिए कुछ कर रहा है या नही कर रहा है हमे यह नही देखते हुए दूसरो का हित करना चाहिये।

यद्यपि हजारो धर्म प्रचलित हो गए हैं। कोनसा धर्म अपनाना यह भी इन्सान के सामने समस्या का विषय बना हुआ है। लेकिन (अहिसा) धर्म के नाम पर विश्व के सारे धर्म एक मत हे। सभी जीव रक्षा मे धर्म मानते हैं। अत दया धर्म को अपनाने मे कहीं कोई विवाद नही हे। आज इन्सानियत तडफ रही है। महिलाओ की अस्मिता खुल्ले आम बाजारो मे बिक रही हे। अनाथ बच्चे दाने–दाने के लिए मुहताज हो रहे हैं। श्रीमन्तो को इन्सानियत की कराहट सुनने की आवश्यकता है। उनकी दुआए आपको खुशहाल बना देगी और उनकी बद्दुआए फटेहाल बनाते भी देरी नही करगी। बिचारा गरीब

आज पैसे–पैसे के लिए तरस रहा है। बहुत बार पैसे के अभाव मे सही उपचार नही होने से उनकी जिन्दगी, मौत के मुह मे जा रही है। अभय दान देने का प्रसग है। सभी दानो मे सर्वश्रेष्ठ अभयदान है। अपने जमीर को जगाए और इन्सानियत की सेवा करना सीखे। इन्सानियत की सेवा, अपनी सेवा है।

महायोगी का धारा प्रवाह उपदेश चल रहा था। सभी लोग मन्त्र मुग्ध होकर सुन रहे थे। अनुराग शुक्ला धर्म का ऐसा विशुद्ध रूप पहली बार ही सुन रहा था। उसके मन मे भी यही धारणा थी कि धर्म मे भी "अपनी–अपनी ढपली और अपना–अपना राग" सब अपनी–अपनी बात करते हैं। अपने–अपने पूजा पाठ को ही महत्त्वपूर्ण बतलाते हैं, दूसरे की पूजा को गल्त बतलाते हैं। पर यहा तो महायोगी ने सभी धर्मो के राज स्वरूप अहिसा का स्वरूप समझाया है। वाकई मे दया धर्म मे किसी का कोई विरोध नही है।

यह बात भी निश्चित है कि दुनिया से कभी भी जाना पड सकता है तो इतनी भाग दौड किसलिए। किराये के मकान के लिए इतनी दौड करने वाला मूर्ख ही माना जाता है। बिना धर्म के धन तो मैंने कमा लिया, पर महायोगी के कथनानुसार मै हर समय परेशान रहता हू, कोई न कोई टेन्शन मुझे घेरे रहता है जबकि इस समय मेरी उम्र भी कुछ नही है। हकीकत मे [illegible] पर धर्म का कट्रोल (Control) आवश्यक है।

एव व्यवहार यह परिचय दे रहा है कि गहरे अध्यात्मनिष्ठ साधक हैं। ऐसे महासाधक तो ढूढने पर भी नहीं मिल पाते हैं। लगता है मेरे सद्‌भाग्य का उदय हुआ है । यह सोच अनुराग शुक्ला के दबे हुए विशुद्ध विचारो को उभारने लगी। महायोगी का सत्सग सम्पन्न हुआ। सभी लोग एक–एक कर आशीर्वाद प्राप्त करते हुए बढते चले गए। महायोगी अपने प्रकोष्ठ में पधार गए। अनुराग शुक्ला साथ में ही था। उसने कहा– महायोगी श्री ! यदि आपको अनुचित न लगे तो मेरे मन मे कुछ शकाए हैं, उनका समाधान चाहता हू।

इतनी देर तक सत्सग करने के बावजूद भी वही खिलता मुस्कराता चेहरा महायोगी बोले– अनुराग कुमार जी ! यहा उचित अनुचित वाली कोई बात नहीं है। आप निसकोच भाव से पूछे। फिर हम तो यह भी कहते हैं कि हम कहे वह न माने। जब तक 5 + 5 =10 सर्वमान्य है, उस अनुसार हृदयगम्य उत्तर न मिले तो पुन पूछ सकते हैं। हमें आपके पूछने पर खुशी ही होगी।

महायोगी श्री ! आपके पावन दर्शन निश्चय ही मेरे मन को पावन कर रहे हैं ओर मेरी सुषुप्त चेतना पर दस्तक लगा रहे हैं। आपके उपदेश से मेरी अनेक समस्याओं का वैसे ही समाधान हो गया है। लगता हे आप निगूढ ध्यान योगी हैं। दूसरो के दिल के पारखी हैं। मैं धन्य हुआ, आपको अपने यहा पाकर।

महायोगी बोले– अनुराग कुमार जी ! ऐसी कोई विशेष बात नहीं है। हम तो अभी सामान्य साधक हैं। हमे अभी बहुत मजिले पार करनी है।

अनुराग– महायोगी जी ! मुझे आपकी निस्पृहता ने खूब प्रभावित किया है। अब आप फरमावे कि मैं कब आपकी सेवामे हाजिर होऊ।

महायोगी – आप अभी भी पूछ सकते हैं। इस समय भी मेरे पास कुछ समय है उसका उपयोग आपके लिए कर लेते हैं। लेकिन योगी प्रवर ! इस समय तो आप इतना उपदेश देकर पधारे हैं। कुछ आराम कर ले। फिर देखा जाएगा। अनुराग के निवेदन करने पर वे बोले– ऐसी कोई खास बात नही है। यह तो हमारा प्रतिदिन का अभ्यास हे। यदि आपको कोई खास काम नही हो तो जिज्ञासा का समाधान ले सकते हैं।

महायोगी जी ! मेरे ऐसा कोई काम नही हे। जब आप अपना अमूल्य समय दे रहे हें तो में आपकी सेवामे उपस्थित हू। अनुराग महायोगी के सानिध्य मे बैठ गया। महायोगी जी पाट पर विराज गए।

कुसुमवती व विमा अनुराग मे आ रहे परिवर्तन को दूर से देख रही थी। उन्हे तो पहले ही पक्का भरोसा था कि ऐसे महायोगी के सानिध्य मे आने के बाद अनुराग मे निश्चित परिवर्तन आएगा, क्योकि स्वभाव से तो वह सदाचारी ईमानदार एव नैतिक रहा है। किन्तु परिस्थितियो ने उसे अनैतिक एव व्यसन ग्रस्त बना दिया है। ज्योही दबी पर्ते उठनी शुरू होगी त्योही भीतर का सहज स्वभाव जागृत हो जाएगा। जो कि कुसुमवती व विमा को नजर आने लगा। जिससे वे अन्दर ही अन्दर अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति करने लगी।

महायोगी प्रवर ! प्रथम तो मै आपसे इस बात के लिए माफी माग लेत हू कि आपके सामने किस तरह की भाषा मे बोला जाता है, इसका मुझे ज्ञा नही है। लेकिन अब मेरी श्रद्धा भावना पूरी है आदर भाव है।

बीच मे ही महायोगी बोले। अरे अनुराज कुमार जी ! आप इस बा का कतई विचार न करे कि आप किस भाषा मे बोल रहे हैं। निदा–प्रशसा समभाव रखना ही हमारी साधना है। दूसरी बात आप तो वैसे भी बडे आदर शिष्ट भाव से बोल रहे हैं और हम भाषा नहीं, भावों को अधिक महत्त्व देते है

गे मेरे ऑफिस खुले हुए हैं। सेकडो हुशियार और बुद्धिजीवी लोग मेरे अधिनरथ कार्यरत हैं। क्या आज के युग को देखते हुए मैंने कोई अनुचित किया है ? मुझे तो कोई अनुचित नहीं लगता। पर आज आपके उपदेश ने गुझे सोचने के लिए नई दिशा दी हे। इसलिए में आपके पास यह प्रश्न रख रहा हू।

महायोगी जी योग की गहराईयो मे उतरे होने से विशिष्ट प्रतिमा के धनी थे। उनमे हर जिज्ञासु को समझाने की विशिष्ट क्षमता थी। वे अनुराग शुक्ला को सम्बोधित करते हुए बोले– अनुराग कुमार जी ! आपकी समस्या आज की ज्वलन्त समस्या है। विलासिता के साथ ही अन्याय अत्याचार के नग्न ताण्डव के बीच ऐसी सोच परिस्थिति के मारे सहज ही हर किसी युवक की बन सकती है। अभी–अभी आपने कहा कि मेरा मुकद्दर कहिये कि में सफल होता चला गया। यह मुकद्दर क्या हैं। भाग्य ही तो है। जरा सोचिये यह भाग्य किसने बनाया। कोई विधाता तो नहीं जो भाग्य का निर्माण करे। यदि विधाता भाग्य बनाए तो एक का अच्छा व दूसरे का बुरा क्यो बनावे। सब का ही अच्छा क्यो न बना दे। अत स्पष्ट है कि भाग्य का निर्माण आदमी के स्वय के कर्म, पुरुषार्थ के बल पर ही होता है और यदि पुरुषार्थ गलत हो तो अच्छे भाग्य का निर्माण कैसे हो सकता है। आप प्रकृति का नियम भी देख सकते हैं कि जैसा बीज बोया जाएगा फल भी वैसा ही मिलेगा। तब यह आपके सोचने का विषय है कि अनीति पूर्ण कार्यों से अच्छा फल कैसे मिल सकता है ?

अच्छा तो महायोगी जी ! यह बतलाईये कि मुझे अनीति पूर्ण कार्यो से अच्छा फल कैसे मिल रहा हे। मुझे ही नहीं दुनिया मे कई लोग गलत तरीके से पैसा कमा रहे हैं। जबकि नीतिवान ईमानदार तो भूखो मर रहे हें।

अनुराग के पूछने पर महायोगी जी बोले– इसका कारण बेईमानी नही है अपितु कुछ सुकृत्य ऐसे भी इस भव या पूर्वभव के किये हुए होते हें जो कि आज हमारी नजरो के सामने नहीं हे, उनका फल हे कि आज बेईमान भी सम्पन्न बन जाता है। आटे की चक्की म ऊपर से गेहू डाला जा रहा है और नीचे से मक्की का आटा निकल रहा है तो यह समझते देर नही लगती कि इससे पहले मक्की डाली हुई है। यही हाल कर्म क फल परिणाम का भी हे।

महायोगी जी ! मैंने तो अपनी जिन्दगी मे काफी अन्याय अत्याचार किये हैं। ऐसी स्थिति में आपके उपदेशानुसार तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होगा ?

महायोगी बोले– मेरे उपदेशानुसार नही, आप स्वय सोचिये न्याय की तुला पर किस आचरण का क्या परिणाम आएगा ? न्याय किसी व्यक्ति का तो है नही सब एक समान है। यदि गलत करते हुए भी अच्छा परिणाम आ रहा है तो वह गलत कार्य का परिणाम नहीं है, अपितु पूर्व मे कुछ अच्छा कर रखा है उसका परिणाम आ रहा है। अपने कृत्यो का परिणाम तो किसी भी जीव को नही छोडता है। चाहे वह तीर्थंकर भी क्यो न बन जाए।

फिर तो महायोगी जी ! मैंने तो इस छोटी सी जिन्दगी मे बहुत कुछ नैतिकता मानवता और धर्म विरोधी कार्य किए हैं। पहले तो मैं गलत कर रहा हू, यह सवेदन ही खत्म हो चुका था। लेकिन आपके सदुपदेश से फिर एक जुगनू सा प्रकाश भीतर पैदा हुआ। जिससे कि गलत को गलत स्वीकार करने की बात बन पाई है। लेकिन एक बात बतलाइये, महायोगी जी ! आज तो भारत जैसी पवित्र सस्कृति मे भी भारी विकृतिया आ रही हैं। कई साधु तो ड्रिंक (Drink), स्मोकिग (Smoking) करने लगे हैं तो कई सार्वजनिक सस्थाओ के नाम से लाखो–करोडो रुपये एकत्रित करके मठाधीश बन बैठे है तो कई साधुओ ने चरित्र को लाछित करके धर्म के नाम पर पूरी तरह कालिख पोत दी है। आज तो हाल यह है कि लोगो को साधु और धर्म के नाम से ही नफरत होने लगी है। जब साधुओ का यह हाल है तो फिर हमारे जैसे परिस्थितियो के मारे नवयुवक ऐसा कर बैठे तो क्या आश्चर्य है ?

वाले साधु भी मिल सकते हैं। ऐसे समय मे तो आपको धर्म से विमुख न होकर अधिक जुडने की आवश्यकता है। आप जैसे कर्मठ व्यक्तित्व ओर तेजस्वी नवयुवक यदि विकृतियो के निवारण के साथ ही सस्कृति को ऊपर उठाने मे लगे तो बहुत कुछ काम हो सकता है।

साधुओ मे आई हुई विकृतियो को देखकर धर्म से दूर हटने मे स्वय की हानि अधिक है। अन्न यदि खराब है तो व्यक्ति भोजन करना नहीं छोड देता। बल्कि तत्परता के साथ अच्छे अन्न की खोज करके, उसे लाकर भोजन करता है। जिस प्रकार पेट की भूख मिटाना जरूरी है उसी प्रकार आध्यात्मिक भूख मिटाने के लिए अच्छे साधुओ की खोज करना भी जरूरी है। आप उनसे सपर्क करेगे तो आपको लाभ ही होगा।

महायोगी जी ! मुझे तो इस घोर कलयुग मे आप ही अच्छे साधु नजर आ रहे हैं। मैंने तो आप जैसे साधु कही देखे नहीं आप महान् हैं। आपका चरित्र और त्याग बहुत ऊचा है। आपने तो मेरी सोच ही बदल दी है।

महायोगी बोले– ऐसा कुछ नहीं मैं भी साधना के पथ पर बढने वाला अल्पज्ञ साधक हू। प्रयास कर रहा हू कि साधना की गहराईयों मे पहुचा जाय।

यही महानता है, महायोगी जी ! आपकी। जिसे अपना अज्ञान दिखता हो वही सबसे बडा ज्ञानी है। लेकिन योगी श्रेष्ठ ! पता नही आपने मुझ मे ऐसा क्या बीज देखा है, जिससे आपने फरमाया कि आप जेसे कर्मठ व्यक्तित्व तेजस्वी नवयुवक विकृतियो के । बहुत कुछ कम हो सकता है।' जबकि मेरे मे स्वय मे बहुत सी विकृतिया भरी हुई है। तब दूसरो की विकृतिया कैसे दूर कर सकता हू ?

अनुराग कुमार जी ! इन्सान ही एक ऐसा प्राणी है जो बुरी आदत डाल भी सकता है और छोड भी सकता है। आप अपना सकल्प जगाए ओर जिस प्रकार आर्थिक क्षेत्र मे आगे बढे हैं उसी प्रकार अब नेतिक जागरण के क्षेत्र मे आगे बढ जाए।

लेकिन योगी प्रवर ! मेंने जो जिन्दगी मे अपराध किये हैं वे तो मुझे निरन्तर कचोटते रहेगे। वे मुझे आगे नही बढने देगे। अनुराग के कहने पर महायोगी बोले–

अनुराग कुमार जी ! गलती बडे से बडे इन्सान से हो सकती है। लेकिन गलती को गलती मान लेना और उसका प्रायश्चित करके भविष्य के लिए न करने हेतु कृत सकल्प बन जाना अपने आप को विशुद्ध ओर हल्का

करना है।

योगीप्रवर ! फिर मैं आपके सामने ही अपने जीवन का सारा कच्चा चिट्ठा खोल देना चाहता हू।

बहुत अच्छा अनुराग कुमार जी ! लेकिन   यो कहते हुए महायोगी ने पास मे बैठे अन्य लोगो एव बालयोगियो पर दृष्टि घुमाई। दृष्टि सकेत पाते ही सब कोई उठ–उठकर चले गए। कक्ष मे केवल महायोगी और अनुराग शुक्ला रह गए। तब महायोगी जी बोले– अनुराग जी ! अपनो से अपने को कहने मे कैसा सकोच। आप मुझे पूरी तरह से अपना समझ करके सब कुछ कह डालिये। मेरे मे कोई अलगाव छिपाव न हो। आपका मन हल्का हो जाएगा। तनाव हल्का हो जाएगा। आत्मा शुद्ध हो जाएगी।

महायोगी का दुलार स्नेह पाकर कठोर एव पापी बन गई अनुराग की आत्मा भी पिघल गई। मस्तिष्क का जमाव पिघलने लगा। पापो की पर्त गर्द बनकर वाष्प के रूप मे बनती चली गई, ज्यो–ज्यो अनुराग एक के बाद एक अपराध महायोगी के समक्ष रखते चले गए त्यो–त्यो महायोगी की तेजस्वी कृपा से वे पाप जलने लगे और पावन आशीर्वाद रूप बरस रही निर्मल धारा से अनुराग जी की आत्मा स्नात पावन हो उठी।

सब कुछ कह डालने के तुरन्त पश्चात् ही अनुराग को अपने आप मे एक अद्भुत सुख की अनुभूति हुई। बहुत बडा सकून मिला जिसके लिए वह ओर भटका करता था। वह कभी नही मिला जो आज मिला है। अब परमा ये योगी प्रवर ! मुझे क्या प्रायश्चित करना होगा ?

अनुराग शुक्ला ने महायोगी के चरणो मे साष्टाग प्रणाम कर आशीर्वाद ग्रहण किया। बगले पर आकर कुसुमवती को कहा– मम्मी ! तुम्हारी परख भी गजब की है। पत्थरो मे कोहिनूर ढूढा है तुमने। उनके कुछ समय के सानिध्य ने तो मेरा सब कुछ बदलकर रख दिया है। अब मम्मी ! मैं तुम्हे वो करके दिखाऊगा कि तुम्हे अपनी सतान पर कुछ तो नाज हो सके।

बस बस बेटा ! बस। अनुराग को प्यार से दुलारते हुए कुसुमवती ने कहा– अब मैं अपना असली अनुराग पा गई हू। आज रायबहादुर का नकाबपोश हट गया। मुझे इसकी हार्दिक खुशी है। सब कुछ मिल गया है मुझे। यो कहते–कहते खुशी की अति मे शब्द निशब्द हो गए अन्तरग आनन्द ने मन को आप्लावित कर दिया।



अर्द्धरात्रि का समय वातावरण मे पूरी तरह शान्ति पसरती जा रही थी। लोग अपने–अपने शयन कक्षो मे नींद के आगोश मे समाते जा रहे थे। समुद्र मे जब तब आ रही तरगे निस्तब्धता को भग कर रही थी। उस समय अनुराग शुक्ला अपने कक्ष मे बैठकर अपने निजी कप्यूटर को चलाकर चल रहे व्यापार की गहन समीक्षा कर रहे थे। जैसी की उनकी प्रतिदिन की आदत थी। दिन भर मे व्यापारिक घटने वाली कोई भी घटना हो उसे कप्यूटर मे फीड कर दिया जाता था। उसके बाद रात्रि मे कप्यूटर पर हर बिन्दु पर गहन छानबीन के साथ आगे के निर्णय लिये जाते थे। अनुराग शुक्ला की इस जागरूकता की ही वजह थी कि इतना जोखिम भरा कार्य होने के बावजूद भी वह व्यापारिक क्षेत्र मे एक के बाद एक सफलता पाता जा रहा था। अब उनके व्यापार को तस्करी लाईन से हटाकर सही रूप मे करने के लिए विदेशो से हीरो और पन्नो की माईन्स मे से सीधा माल मगाना प्रारम कर दिया था। ब्राजील से कच्चा माल आ रहा था। जिसकी मेनीफेक्चरिंग (Manufacturing) यहा होनी थी। इन सारे दस्तावेजो का अनुराग अध्ययन कर रहे थे।

ठीक उसी वक्त समुद्र मे एक छपाक सी आवाज हुई। जिसने अनुराग को चोका दिया क्योकि बगला समुद्र के एकदम किनारे ही था। उन्हे लगा कि समुद्र मे कोई वस्तु या व्यक्ति गिरा है। अनुराग ने तुरन्त कक्ष की खिडकी से समुद्र की तरफ झाका तो लाईट का प्रकाश समुद्र की तरफ तेज होने से उसमे एक मानव आकृति गिरकर उछलती हुई नजर आई। देखते ही अनुराग को लगा कि लगता है कोई व्यक्ति समुद्र में गिर गया है उसे बचाना चाहिये। उसने अपना कर्त्तव्य निश्चित किया और तुरन्त नीचे उतरा। अपने साथी 4 व्यक्तियो को भी सावधान करते हुए समुद्र किनारे जहा मानवाकृति डूबती [illegible]ी नजर आ रही थी वहा कूद पडे। वे तैरने के अच्छे अभ्यासी थे समुद्र [illegible] गोता भी लगा सकते थे। फिर भी अर्धरात्रि मे कूदना एक ढग से [illegible] जान के साथ खेलना था। उसके सधे हुए चारो बाडी गार्ड (Body [illegible]) मालिक की रक्षा मे अलर्ट (Alert) हो गए। एक ने तेज प्रकाश करने [illegible] (Highpower) की लाइटो का मुख समुद्र की तरफ कर दिया। [illegible] ताकि उस मानवाकृति को खोजने मे सुविधा रह सके और वे भी [illegible] सुरक्षा कर सके। अवशेष बोडीगार्ड उसी वक्त मालिक के साथ

अनुराग शुक्ला ने महायोगी के चरणो मे साष्टाग प्रणाम कर आशीर्वाद ग्रहण किया। बगले पर आकर कुसुमवती को कहा– मम्मी ! तुम्हारी परख भी गजब की है। पत्थरो मे कोहिनूर ढूढा है तुमने। उनके कुछ समय के सानिध्य ने तो मेरा सब कुछ बदलकर रख दिया हे। अब मम्मी ! मैं तुम्हे वो करके दिखाऊगा कि तुम्हे अपनी सतान पर कुछ तो नाज हो सके।

बस बस बेटा ! बस। अनुराग को प्यार से दुलारते हुए कुसुमवती ने कहा– अब मैं अपना असली अनुराग पा गई हू। आज रायबहादुर का नकाबपोश हट गया। मुझे इसकी हार्दिक खुशी है। सब कुछ मिल गया है मुझे। यो कहते–कहते खुशी की अति मे शब्द निशब्द हो गए अन्तरग आनन्द ने मन को आप्लावित कर दिया।



अर्द्धरात्रि का समय वातावरण मे पूरी तरह शान्ति पसरती जा रही थी। लोग अपने–अपने शयन कक्षो मे नींद के आगोश मे समाते जा रहे थे। समुद्र मे जब तब आ रही तरगे निस्तब्धता को भग कर रही थी। उस समय अनुराग शुक्ला अपने कक्ष मे बैठकर अपने निजी कप्यूटर को चलाकर चल रहे व्यापार की गहन समीक्षा कर रहे थे। जैसी की उनकी प्रतिदिन की आदत थी। दिन भर मे व्यापारिक घटने वाली कोई भी घटना हो उसे कप्यूटर मे फीड कर दिया जाता था। उसके बाद रात्रि मे कप्यूटर पर हर बिन्दु पर गहन छानबीन के साथ आगे के निर्णय लिये जाते थे। अनुराग शुक्ला की इस जागरूकता की ही वजह थी कि इतना जोखिम भरा कार्य होने के बावजूद भी वह व्यापारिक क्षेत्र मे एक के बाद एक सफलता पाता जा रहा था। अब उनके व्यापार को तस्करी लाईन से हटाकर सही रूप मे करने के लिए विदेशो से हीरो और पन्नो की माईन्स मे से सीधा माल मगाना प्रारभ कर दिया था। ब्राजील से कच्चा माल आ रहा था। जिसकी मेनीफेक्चरिंग (Manufacturing) यहा होती थी। इन सारे दस्तावेजो का अनुराग अध्ययन कर रहे थे।

ठीक उसी वक्त समुद्र मे एक छपाक सी आवाज हुई। जिसने अनुराग को चौका दिया क्योकि बगला समुद्र के एकदम किनारे ही था। उन्हे लगा कि समुद्र मे कोई वस्तु या व्यक्ति गिरा है। अनुराग ने तुरन्त कक्ष की खिडकी से समुद्र की तरफ झाका तो लाईट का प्रकाश समुद्र की तरफ तेज होने से उसमे एक मानव आकृति गिरकर उछलती हुई नजर आई। देखते ही अनुराग

ही कूद पडे क्योकि उन्हे मालिक की रक्षा जो करनी थी। वे इतने वफादार अगरक्षक थे कि अपने प्राण देकर भी मालिक की रक्षा करने में तत्पर रहते थे। एक बोडीगार्ड ने पास ही पडी मालिक की घूमने के लिए काम ली जाने वाली नौका खोली और वह भी मालिक की तरफ नोका चलाने लगा। ताकि हर सुविधा प्राप्त हो सके। मुश्किल से 10 मिनिट के अन्दर–अन्दर ही अनुराग ने डूबती उस मानवाकृति के बाल हाथ मे पकड लिए और उसे पानी से बाहर निकाला और अपने सुरक्षा गार्डो की सहायता से उसे नौका में सुलाया। मालिक अनुराग शुक्ला और उसके दोनो अगरक्षक भी नौका मे आ गए। नौका सुरक्षित रूप से किनारे लग गई। लाईट के प्रकाश मे जब देखा तो वह मानवाकृति के रूप में सुन्दर नवयुवती थी। जिसे देखकर अनुराग शुक्ला के दिमाग मे अनेक प्रश्न खडे हो गए। यह पास वाले बगले से गिराई गई या गिरी। इसके गिरने के बाद खिडकी क्यो बन्द हुई। बगले वाले ने बचाने की कोशिश क्यो नहीं की। आदि कई प्रश्न एक साथ झनझना उठे। लेकिन फिलहाल उस सोच को स्थगित कर नवयुवती की प्राण सुरक्षा आवश्यक थी। इस समय श्वास जरूर चल रही थी, पर वह भी बेहोश। बगले पर प्राथमिक उपचार के तुरन्त बाद उसे प्राईवेट (Pnvate) हास्पिटल मे ले जाया गया। अनुराग शुक्ला ने परिचारिकाए तो साथ रखी ही थी पर विभा शुक्ला को भी जगाकर उसकी सुरक्षा हेतु साथ कर दिया। पास ही डॉक्टर रोहिताश्व और उसकी पत्नी मीना गौड का मीना क्लिनिक था। वहा ले जाया गया। अनुराग शुक्ला के निर्देशानुसार गहन चिकित्सा कक्ष मे रखते हुए उस युवती को होश में लाने का डॉक्टर रोहिताश्व और डॉक्टर मीना ने भरपूर प्रयास किया। 2 घटे के श्रम के बाद वह युवती होश मे आ गई। शरीर मे प्रवेश सारा पानी बाहर निकाल दिया गया। कुछ स्वस्थता आने के बाद जब उसने आख खोली तो उसके सामने खडा हर चेहरा अजनबी था। उसे लगने लगा कि वह कहा है ? बार–बार आख खोलकर बद करने लगी। उसकी घबराहट को देखकर विभा शुक्ला ने कहा–बहिन ! तुम निश्चित हो जाओ। यहा पर तुम पूर्ण सुरक्षित हो। मैरे भैया अनुराग शुक्ला के सरक्षण मे हो। तुम्हे घबराने की कोई आवश्यकता नही।

विभा के इन आश्वासन भरे वचनो को सुनकर उस युवती को कुछ सन्तोष मिला। परिणाम स्वरूप धीरे–धीरे वह सहज होने लगी। उसने चारा ओर नजर घुमाई तो एक डॉक्टर के अलावा उपचार करने वाली सभी महिलाए ही थी। इसलिए उसे और अधिक शकून मिला। सवेरे तक पूरी

चेतना आने के बाद विमा शुक्ला उस युवती को पुन गाडी मे बिठाकर अपने बगले पर ले आई। विमा का मधुर स्नेह पाकर वह धीरे-धीरे सहज होने लगी। विमा ने यह भी बतला दिया था कि उसके भैया, अनुराग शुक्ला ने उसे समुद्र से डूबते हुए बचाया है। वे नैतिक और चरित्र की दृष्टि से बहुत महान् है। उनके सामने अपनी समस्या रखने पर तुम्हे निश्चित ही उचित समाधान मिलेगा।

विमा शुक्ला के बहुत कुछ समझाने के बाद वह युवती अनुराग शुक्ला से मिलने को तत्पर हो गई। विमा शुक्ला उस युवती को लेकर अनुराग शुक्ला के कक्ष मे गई। अनुराग शुक्ला पहले ही एक कुर्सी पर बैठा था और वह दोनो सामने लगे सोफा सेट पर बैठ गए।

अनुराग शुक्ला ने ही बात चलाई। आप कौन हो ? कहा रहती हो, आपका नाम क्या है ? यह तो मै नही जानता पर आप भी एक इन्सान हैं और मै भी एक इन्सान हू। इस नाते आपका हर सभव सहयोग करना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हू। अब भी आप अपना परिचय दे तो मैं आपकी इच्छानुसार जहा आप चाहे वहा पहुचाने की व्यवस्था कर सकता हू।

नवयुवती ने कहा- आप तो मेरे लिए बहुत महान् हैं। जिन्होने अपने प्राणो को भी जोखिम मे डालकर मुझे बचाने का प्रयास किया। बचाया ही नही पूरी तरह स्वस्थ करने के लिए अपना अमूल्य समय लगाया। मैं आपके इस अहसान को कभी नही भूल सकती। पर मैं अब जिन्दगी से उब चुकी हू। इसलिए । यह सुनते ही अनुराग शुक्ला ने कहा आप ऐसा क्यो सोचती है। हर जिन्दगी मे उतार-चढाव आते ही रहते हैं। सघर्षो का दृढता के साथ सामना करने से ही जिन्दगी रसदार बनती है। आप यदि जिन्दगी से ऊबने का कारण बतलाए तो उसका भी समाधान करने का प्रयास किया जा सकता है। अभी तक तो हमे आपका नाम भी ज्ञात नहीं है ?

साथ गायन एव नृत्य मे भी रुचि रही है। हाई स्कूल और कालेज मे मैंने कई प्रोग्राम दिये हैं। जिन्हे देखकर लोगो ने काफी सहराया। इसके बाद जिलास्तरीय कई कार्यक्रमो मे भी भाग लिया हे। सभी जगह वरीयता प्राप्त की। जिससे मेरे प्रशसक यह कहने लगे कि यह फिल्म अभिनेत्री बन सकती हे क्योकि नृत्य मे अभिनय करना भी अच्छा आता है। गला भी सुरीला है और दिखने में भी सुन्दर है। लोगो के द्वारा हो रही बार–बार की प्रशसा को सुनकर मेरे मन मे भी यही विचार उठा कि लगता हे मैं अच्छी फिल्म अभिनेत्री बन सकती हू। लेकिन फिल्म इण्डस्ट्री (Film industry) मे प्रवेश पाना सहज सभव नहीं था। मेरा दूर–दूर तक भी कोई रिश्तेदार ऐसा नही था। जिसका बाम्बे की फिल्म इण्डस्ट्री से सम्बन्ध हो। इसलिए मैं चाहकर भी फिल्म इण्डस्ट्री मे नहीं आ पा रही थी। कई कॉलेज के नवयुवको ने भी मुझे बहुत उकसाया। उन्होने वादे किये कि हम तुम्हे बाम्बे मे फिल्म निर्माताओ से मिला देगे। हमारा परिचय है। हमारे साथ चल पडे लेकिन उनके बोलने के तरीके एव कामी दृष्टि ने मुझे सावधान कर दिया मैं नहीं चाहती थी कि हीरोईन बनने के लिए मेरा चरित्र का पतन हो और मुझे उन लडको की आखो मे वासना के सस्कार स्पष्ट रूप से नजर आ रहे थे। इसलिए मैं उनके साथ जाने को तैयार नही हुई। लेकिन फिल्म अभिनेत्री बनने की भावना भी मेरी बलवती होती जा रही थी। आखिर एक दिन अपनी बुआ के लडके मनोज कुमार से बात हुई। उसने कहा– बहिन ! मैं तुम्हे सहयोग करने के लिए तैयार हू। हमे किसी के परिचय की कहा आवश्यकता है तुम्हारे पास बहुत बडी योग्यता ही उसका परिचय है। फिल्म इण्डस्ट्री वाले तुम्हारी योग्यता को देखकर स्वत ही तुम्हे रखने के लिए तैयार हो जाऐगे ओर यदि कोई भी खतरा हो तो हम वापस चले आएगे।

मुझे मनोज कुमार की बात जच गई लेकिन इसके लिए भी हमे कम से कम 30–40 हजार रुपये की आवश्यकता थी। इराके लिए मैंने अपने पास दो सोने के कगन थे, उन्हे बेच दिये जिसमे 15 हजार रुपये आए बाकी 20 हजार की व्यवस्था मनोज कुमार ने कर ली ओर एक दिन हम दाना पिता श्री हुक्मचद जी की अनुमति लेकर बाम्बे के लिए रवाना हा गय। हम यहा आए हुए करीब 6 दिन हो गए थे। होटल म ठहरे थे। मैं अपने भेया के साथ फिल्म इण्डस्ट्री के कई फिल्म निर्माताआ से मिल चुकी थी। प्रथम तो वे मिलने का समय ही नही देते हैं। बहुत कुछ मेहनत के बाद समय देत भी हैं तो उनके सामने स्कूल, कॉलेज एव सार्वजनिक कार्यक्रमा क दिये गए प्रोग्राम

से प्राप्त प्रमाण पत्र रखते हैं। फिर भी वे इसे मानने के लिए तैयार नही होते। हमने उनके सामने अपने प्रोग्राम रखने की पेशकश भी की तो उनका कहना होता है कि आप रात को 11 बजे घर पर मिलिये। वही आप से सारी बातचीत करेगे। मिस्टर मनोज कुमार तो होटल पर ही रहे। आप चले आइये। आपके प्रोग्राम सुनने के बाद आपको सलेक्ट किया जा सकता है। लेकिन मुझे यह पसद नही था कि मेरा भाई होटल पर रहे और मैं अकेली एक अजनबी व्यक्ति के पास जाऊ। यदि कोई अनहोनी घटना घट जाय और मेरी अस्मिता लुट जाय तो फिर क्या होगा ? मैं हीरोईन बनने से अच्छा अपने चरित्र की सुरक्षा समझती रही हू। लेकिन हीरोईन बनने का लोम भी सवरण नहीं कर पा रही थी।

इसी बीच मेरा फिल्म निर्माता श्री रतन कपूर से सम्पर्क हुआ। उनकी फिल्म विदेशो मे बनने जा रही थी। फिल्म में गीत सगायिका की आवश्यकता थी। उन्होने मुझे कहा तुम्हारी नियुक्ति की जा सकती है। पर पहले हम तुम्हारे 3–4 गीत सुनेगे। गले का सुरीलापन परखेगे। फिर तुम्हे नियुक्त किया जा सकता है।

मुझे उनकी बात मे आश्वासन और काम होने की झलक मिली तो मैं 3–4 गीत सुनाने के लिए तैयार हो गई। लेकिन यहा पर भी वहीं बात कि आप रात को 11 बजे घर पर जाइये। वही सुनेगे। मिस्टर मनोज कुमार होटल पर ही रहे। आप चली आइये। गीत सुनने के बाद नियुक्ति दे देगे। मैंने सोचा यहा तो सब जगह एक ही बात है। फिर भी सेठ रतन कपूर की आयु 60 वर्ष से ऊपर थी। बूढे हो चुके थे। इसलिए मुझे चरित्र पतन का इतना भय नहीं था। अत मैंने घर पर आने की हा भर दी।

तो उनकी आखो मे चमक आ गई। उन्होने कहा– अच्छा राजेश्वरी ! तुम आ गई हो। अब तक वाचमेन जा चुका था। कक्ष बाहर से बद हो चुका था। पूरे कक्ष मे सेठ रतन कपूर ओर राजेश्वरी दो ही रह गए। यह देखकर एक बार तो मैं घबरा गई। पर कर भी कुछ नहीं सकती थी। अत फिल्म निर्माता सेठ रतनकपूर ने भद्दी मजाक करते हुए कहा– डार्लिंग ! गाना और नृत्य शुरु हो जाए। हम देखेगे पहले तुम कैसे नाचती हो और गाती हो।

मैंने साहस किया और नृत्य के साथ एक गाना भी सुनाया गया। नशे मे पागल होकर सेठ रतनकपूर बार–बार वाह–वाह कर रहे थे। 15 मिनिट मे ही गायन पूरा हो गया। सेठ रतनकपूर खडे हो गए और मेरे पास आने लगे तो मैं एकदम घबरा गई। हे भगवान ! क्या होगा अब। तब वे बोले– घबराओ मत, हम भी तुम्हारे साथ नाचेगे, लेकिन मुझे यह कतई पसद नही था ओर न ही आज तक मे किसी पुरुष के साथ नाची थी। जितने भी मेरे प्रोग्राम हुए में अकेली देती रही थी।

मैंने कहा– कपूर साहब ! मेरा पुरुष के साथ नाचने का अभ्यास नही है। में अकेली ही अभिनय करती हू। तो वे बोले कोई बात नही अब अभ्यास हो जाएगा। यो कहते हुए उन्होने मेरा हाथ पकड लिया और नाचने लगे। मुझे उनके साथ नाचना आता नहीं था। पर उनका मन रखने के लिए मैंने नृत्य शुरु किया पर नृत्य के बहाने वे मेरे साथ अश्लील हरकत करने लगे। वह मुझे नागवार गुजरी ओर मैं एक झटके के साथ उनसे दूर हट गई ओर मैंने कहा– सेठ रतन कपूर यह नही होगा। में यहा अभिनय करने आई हू न कि अपनी अस्मिता लुटाने। सेठ रतन कपूर बोले– राजेश्वरी ! इस दुनिया म तो सब कुछ चलता हे। जब तक तुम निर्भय नही बनोगी तो कोई भी एक्शन (Action) जानदार नहीं कर सकोगी। अत छोडो इन सब दकियानूसी चारित्रिक बातो को। जब तुम बाम्बे के इस आधुनिक बाजार मे आ ही गई हो तो अब इन आदिवासी बातो को छोडो।

मुझे उनका यह बहसीपन कतई नही भाया। में दूर हटकर रूम के दरवाजे पर पहुची तो गेट बाहर से बद था। में समझ गई कि इनके नोकर भी मालिक जैसे ही लगते हें। अब पिजरे म फसे पछी की तरह में कमरे म फडफडा रही थी आर सेठ रतन कपूर मेरी अस्मिता लूटने पर उतारु था। मुझे हर हाल मे अपने चरित्र की सुरक्षा करना अभीष्ट था। जब भागकर खिडकी के पास पहुची तो देखा कि खिडकी एकदम समुद्र के किनारे हे। उसके नीचे समुद्र ही था। मैंने तुरन्त निर्णय ले लिया। चरित्र भ्रष्ट करने की अपेक्षा मर

जाना अच्छा है। चरित्रहीन नारी का सौन्दर्य मुर्दे का श्रृगार है। मैंने फिल्म निर्माता मिस्टर रतन कपूर से बचने का भरपूर प्रयास किया पर मुझे लगा कि इससे बचना मुश्किल है तो फिर मैंने साहस किया और अचानक खिडकी से कूदकर समुद्र में छलाग लगा दी। जिसकी कपूर साहब को कतई सभावना नही थी। छलाग लगाने के बाद मै अनन्त जल राशि में समाती जा रही थी। इसी बीच पता नही कैसे मेरी जिन्दगी को तारने वाले अवतार के रूप मे आप प्रकट हुए और मुझे डूबते हुए बचा लिया। आपने मुझे नई जिन्दगी दी। मैं आपके अहसानो को नहीं भूल सकती। पर दुनिया की इस विद्रूपन को देखकर मेरा मन ऊब चुका था। पर आप जैसे चरित्र और नैतिकता के मसीहा भी इस दुनिया मे होगे ऐसा मैंने सोचा भी नहीं था। सच है दुनिया मे मारने वाले से भी तारने वाले के हाथ लम्बे हैं। अथाह जल राशि मे डूबने के बाद जो कुछ स्थिति बनी वह सब आपके सामने हैं।

अनुराग शुक्ला बडे ध्यान से राजेश्वरी की जीवन घटना सुन रहे थे। उन्हे भी इस बात का सुखद आश्चर्य हुआ कि इस कलियुग मे भी कोई लडकी ऐसी हो सकती है, जो कि अपने चरित्र की सुरक्षा के लिए अपने प्राण भी दे दे। सती सावित्री अजना आदि सतयुग की घटनाए तो बहुत मिल जाएगी। पर इस घोर कलियुग मे राजेश्वरी का चरित्र निश्चय ही प्रशसनीय है। इसने तो अपनी तरफ से चरित्र सुरक्षा के लिए प्राण दे ही दिये थे। यह बात अलग है कि इसके पुण्य के अतिशय ने इस बचा लिया। अनुराग शुक्ला बोले– राजेश्वरी ! इस घोर कलियुग में भी आप जैसी चरित्रवान नवयुवती के दर्शन कर मैं भी पावन हो उठा। लगता है घोर पाप होने के बावजूद भी ऐसी चरित्र सम्पन्न नारियो के कारण इस देश की रक्षा हो रही है।

अनुराग– जरुर–जरुर। वे पैदल यात्रा करते रहते हैं। अभी तो यहा से 200 कि.मी. दूर पूना मे है। आप चलना चाहोगी तो हम जरूर ले जाऐंगे। ऐसे महापुरुष दुनिया मे विरल ही मिलते हैं। मे समझता हू ऐसे महायोगी की साधना से ही धरती टिकी हुई है। अन्यथा कभी भी समुद्र ले डूबे।

अच्छा तो अब ये बताइये कि आप क्या चाहती हैं, अगर घर जाना चाहती हैं तो मैं वैसी व्यवस्था करा देता हू। अगर यहा रहकर कोई काम करना चाहती है तो मैं वैसी भी व्यवस्था करा सकता हू।

राजेश्वरी ने सोचा ऐसा महान् व्यक्ति कहा मिलेगा। क्यो न यहीं नौकरी कर ली जाय। यहा कोई डर वाली बात तो है नहीं। उसने तुरन्त स्वीकृति दे दी। वह बोली– मेरे योग्य आपके पास काम हो तो मैं यहा रहने को तैयार हू। अपने भैया मनोज कुमार को सारी बात समझा दूगी।

अनुराग शुक्ला उसे किसी अच्छी पोस्ट (Post) पर रखने को तैयार हो गए। इतने मे ही उसके मन मे एक विचार कौंधा मम्मी बार–बार शादी करने के लिए कहती रहती है और मैं हमेशा टालता रहता हू। पर ऐसी महिला रत्न से शादी हो जाय तो गृहस्थ जीवन आराम से चल सकता है। मेरा भी काम बन जायेगा और मम्मी की बात भी रह जाएगी। शादी करने की बात सोचते ही अनुराग को कुछ सुकून सा महसूस होने लगा। मन मे हल्कापन आने लगा। तब उसे लगा कि हकीकत मे राजेश्वरी के साथ शादी करना सार्थक सिद्ध होगा। तुरन्त ही मन मे निर्णय करके अनुराग ने बात को नया मोड देना शुरू किया। वह बोला– राजेश्वरी जी ! अगर आप कुछ अन्यथा न ले तो मैं आपसे एक बात कहना चाहता हू। राजेश्वरी बोली– अवश्य बोलिये। आपकी बात को अन्यथा लेने का तो कोई प्रश्न ही नही उठता। आप तो मेरे को नई जिन्दगी देने वाले हैं। अनुराग बोला– मेरी मम्मी जी मुझे शादी करने के लिए पचासो बार कह चुकी हैं। परन्तु मैं उनकी बात को टालता रहा हू क्योकि मुझे शादी करना भी बधन लगता रहा हे। लेकिन जब से में आपके सम्पर्क मे आया हू तब से ऐसा लगने लगा है कि अगर मेरी शादी आपके साथ हो जाय तो मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझूगा। अनुराग ने बिना आवरण के सीधी–सीधी बात कह दी।

किन्तु राजेश्वरी तो यह बात सोच भी नही सकती थी। क्योकि अनुराग की शान शौकत के आगे उसका परिवार तो कुछ भी नहीं था। उसके नौकर के बराबर भी नहीं। इसलिए राजेश्वरी का तो इस रिश्ते के बारे सोचने का प्रश्न ही नहीं था। ज्योही उसने अनुराग के मुख से इस प्रकार का आफर

अनुराग– राजेश्वरी जी ! वेसे तो एक महायोगी जी यहा पधारे थे। वे हमारे बगले पर भी विराजे हैं। मेरे जीवन मे उनके उपदेशो से ही अद्‌भुत परिवर्तन आया है। उन्होने मुझे जेन सस्कारो से ओतप्रोत किया है। आज मेरे मे जो भी कुछ है उनकी कृपा का ही फल है।

राजेश्वरी – अरे ऐसे महायोगी का पदार्पण आपके यहा हो गया। आप तो धन्य हो गए। बडे–बडे लोग उन्हें अपने यहा लाने को तरस जाते हैं, फिर भी उनका आना नहीं हो पाता है। वे प्रसिद्धि से बहुत दूर सच्चे साधनाशील महायोगी हैं। जब उनकी कृपा आप पर बरस गई है तो आप तो सही माने मे जैनी बन गए हैं।

अनुराग– राजेश्वरी जी ! आपको किस बात का सकोच है। जिससे आपको मेरा प्रस्ताव पसद नही आ रहा है ?

राजेश्वरी–क्या बतलाऊ। एक तरफ तो मन मे हीन भावना की ग्रन्थि है कि आपकी मेरे साथ दूर–दूर तक भी कोई समानता नहीं है। दूसरी बात आपके प्रस्ताव से मुझे अपने आपके भाग्य पर भी भरोसा नही हो रहा है कि मैं इस देव को भविष्य मे समाल पाऊगी भी या नहीं ?

अनुराग– राजेश्वरी जी ! समानता–असमानता की बात तो दिल से एकदम निकाल दीजिये। आज से आठ वर्ष पहले तो आपके परिवार से भी हमारी स्थिति अधिक खराब थी। जहा तक दूसरी बात हे मैं अपनी ओर से यह विश्वास दिला सकता हू कि आपको मेरी ओर से कोई शिकायत नही आएगी। जैसे एक ओरत के लिए पतिव्रत धर्म होता हे। वेसे ही एक आदमी के लिए पत्नीव्रत धर्म होता है। मैं पत्नीव्रता धर्म निभाऊगा।

अनुराग जी से इतना सब कुछ सुनने के वाद राजेश्वरी का मन भी पूरी तरह पिघल गया था। अलगाव की वडी चट्टाने भी पिघलकर पानी ही नहीं भाप बनकर एकमेक होने लगी। राजेश्वरी की आखों म अपने सद्‌भाग्योदय की अति से हर्ष के आसू छलछला उठे और उसने अनुराग के सामने पूरा समर्पण कर दिया। वह बोली– आप मुझे पूरी तरह पसद हें। में अपने किसी विशिष्ट पुण्य का उदय मानती हू कि आप मुझे पति के रूप म मिलग। पर इसके पहले मैं आपसे यह स्पष्ट कर देती हू, इसक लिए मरे परिवार सा भी अनुमति लेनी पडेगी।

खुशी से उछलते हुए अनुराग ने कहा– बिल्कुल ठीक। हम आपके परिवार से अनुमति के लिए बिना शादी नही करगे। उसी वक्त उनके साथ

आए उसके भुआ के लडके मनोज कुमार को भी होटल अप्सरा से बुला लिया गया। राजेश्वरी को इस रूप मे पाकर वह भी अचम्मे मे पड गया। लेकिन रात्रि मे बीती सारी घटना राजेश्वरी ने उसके सामने रख दी। जिसे सुनकर अनुराग शुक्ला के प्रति उसके मन मे गहरे आदर के भाव बन गए और उसने उसी वक्त उनका बार-बार आभार माना।

अगली बात रखी, अनुराग ने मनोज कुमार के सामने। जब राजेश्वरी के शादी करने की अनुराग की चाह सामने आई और स्थिति को समझा तो वह बोला- हमारी बहिन का तो यह बडा भाग्य का उदय है कि आप जैसा पति मिलेगा। मैं घर जाकर पूरी कोशिश करूगा कि आपकी चाहत के अनुरूप ही हो जाय। दोपहर का लच लेने के बाद अनुराग शुक्ला ने उनके लिए इन्डयन एअर लाइन्स से अमृतसर के लिए दो टिकट मगवा दिये और उनके सामने रख दिये।

राजेश्वरी बोली- आपने क्यो कष्ट किया। हम वैसे ही ट्रेन से चले जाते।

ओ हो ! इसमे कोई कष्ट नही यह तो मेरा कर्त्तव्य है क्योकि आप मेरे यहा है। फिर मुस्कुराते हुए कहा कि अब तो आपको मैं अपना ही समझता हू। यह सुनकर मनोज राजेश्वरी सभी हस पडे। 4 घन्टे की उडान के बाद ही हवाई जहाज बाम्बे से दिल्ली और दिल्ली से अमृतसर पहुच गया। अमृतसर एयरपोर्ट पर उतरते ही हवाई अडडे से बाहर आते ही उन्हे एक नौजवान मिला। जिसके पास इम्पोर्टेड गाडी खडी थी। वह बोला- क्या आपका ही नाम मनोज कुमार राजेश्वरी है।

दोनों गाडी मे बैठ गए। गाडी फर्राटेदार चलाते हुए राजेश कुमार ने कहा– हमारे मालिक की पहुच भारत मे ही नहीं विश्व के अन्य देशो मे भी है। दिमाग तो कम्प्यूटर से भी तेज चलता है।

दो घटे की सफर के बाद उन्हे गगानगर पहुचा दिया गया। जब ये दोनो, हुक्मचन्द जैन एव प्रेम प्रकाश के पास पहुचे तो प्रेम प्रकाश ने पूछा क्यो भाई ! राजेश्वरी बन गई हीरोइन ! क्योकि उसे पहले से ही ऐसी आशा नही थी। मनोज ने सारी बात विस्तार से सुनाई। फिर अपने को दिये सहयोग का भी जिक्र किया। साथ ही यह भी कहा कि अनुराग शुक्ला के साथ किसी भी तरह राजेश्वरी की शादी कर देना चाहिये। ऐसा गोल्डन चास (Golden Chance) नहीं चूकना चाहिये। ऐसा लडका नही मिलने वाला। जब मनोज से सारी बात सुन ली तो हुक्मचन्द जैन शादी करने के लिए राजी हो गए। मोबाइल फोन (Mobile Phone) पर अनुराग शुक्ला ने हुक्मीचन्द जी से बात की तो उन्होने अनुराग एव राजेश्वरी की भावना का आदर करते हुए शादी की स्वीकृति दे दी। जिसे सुनकर अनुराग को ही नही कुसुमवती एव विभा को भी बहुत खुशी हुई। 2 मास बाद ही एक सादे समारोह मे अनुराग व राजेश्वरी का विवाह सम्पन्न हो गया। दोनो की जिन्दगी मे सासारिक खुशियो की बहार आ गई। दोनों बडे आराम से रहने लगे। माता कुसुमवती को भी अपार खुशी हुई। उसे एक पढी लिखी ज्ञानवान दयावान चरित्रवान गुणवाली नारी बहुरूप मे जो मिल चुकी हे। कुसुमवती का एक भार तो हल्का हो गया। अब दूसरा विभा का रहा है। उसके लिए भी योग्य वर की खोज की जाने लगी।



रहमान और सलमान जो अनुराग शुक्ला के पी ए थे वे अपनी गाडी मे बैठकर बाम्बे सेन्ट्रल जा रहे थे। रास्तें मे ही गाडी के कुछ खराब हो जाने से उन्हे टैक्सी मे बैठना पडा। टैक्सी मे ड्राइवर के पास ही एक नौजवान पहले से ही बैठा हुआ था। जो दिखने मे स्मार्ट, ग्रेज्युएट ओर फुर्तीला था। पर रहमान और सलमान की पारखी नजरें यह भाप गई कि यह लडका आवारा भी है। बाम्बे सेन्ट्रल पर ज्योही वे टैक्सी से उतरे उनके साथ एक ब्रीफकेस था जिसमे कम्पनी के 10 लाख रुपये पडे थे। वह उठाया तो उन्हे उस पर कुछ निशान नजर आए उन्हे समझते देर नहीं लगी कि इसमे से नोट निकल चुके हैं। लेकिन आश्चर्य तो इस बात का था कि वजन मे वह उतनी ही है। फिर नोट कैसे निकले होगे। यह हो सकता है कि अटैची पर चीरा लगाया हो और रुपया निकाल नहीं पाया हो या फिर और कुछ गडबड है। लेकिन इस स्थिति को वे टैक्सी के बाहर खडे होकर देख नहीं सकते थे। क्योकि तब तक टैक्सी जा सकती थी, या अन्य खतरा बढ सकता था। इसलिए उन्होने अटैची को एक हाथ मे पकडे रखा। दूसरे हाथ से सलमान ने जेब से पिस्तौल निकाल ली और इधर रहमान ने भी पिस्तौल निकाल ली दोनो ने ड्राइवर और उसके साथ बैठे लडके पर पिस्तौल अडाते हुए कहा [illegible] सावधान जैसा हम कहे ऐसा करते रहो। अन्यथा गोली मार दी जायेगी। दोनो की कनपटी पर पिस्तौल लगा रखी थी। मरता क्या नहीं करता। टैक्सी को सकेत पाकर स्टैण्ड पर खडी की गई। फिर दोनों को गाडी से बाहर निकाला और आगे–आगे चलने का सकेत दिया गया। इसी बीच [illegible] वे 5 तगडे नौजवान जो हर अपराध करने में कुशल थे। वे आ गए। [illegible] [illegible] था उन दोनो को घेर लिया गया।

समझ रहे थे कि जेब कतरो की दुनिया या तस्करी के क्षेत्र मे हम ही हुशियार थे। पर ये तो हम से भी दो कदम आगे हैं। यद्यपि ड्राइवर व उस नोजवान का सलमान ही निपटारा कर देता पर यह एक हुशियारी की महत्त्वपूर्ण बात थी जो कि मालिक अनुराग को भी बतलाना आवश्यक लगा। उन्होने अपने बास अनुराग शुक्ला की ऑफिस मे जाकर कहा कि बास ! आज तो हमारे से भी ऊपर एक तीस मारखा मिला है।

सलमान रहमान मे से एक हो तब भी कोई तुम्हारा सामना नहीं कर सकता तो फिर जहा दो हो तो तीस नहीं साठ मारखा भी आ जाय तो उसकी नहीं चल सकती। ठहाके के साथ अनुराग शुक्ला ने कहा।

बॉस ! यह तो आपकी ही देन है। जिसके कारण हम आज इस स्टैज को प्राप्त हो गए हैं। आप की हुशियारी को एक बार तो बृहस्पति भी नहीं नाप सकता। रहमान बोला।

तुम बातो मे ही उलझाओगे या उस तीस मारखा के कारनामे भी बतलाओगे। अनुराग के पूछने पर सलमान बोला– बॉस ! हम बोरीवली से बाम्बे आ रहे थे। रास्ते मे गाडी खराब हो जाने से हमने टैक्सी पकडी। मुश्किल से 20 मिनिट की सफर के बाद सेन्ट्रल पहुच गए। ज्योही हम टैक्सी से बाहर आए तो देखा हमारी ब्रीफकेश के चीरा लगा है। हमे समझते देर नही लगी कि रुपये निकले हैं। हमने उसी वक्त टेक्सी ड्राइवर एव उसके साथ ही बैठे नौजवान को पिस्तौल की नोक पर कवर कर लिया। मोबाइल स सूचना देने पर अपनी कम्पनी के पाचो बाडीगार्ड पहुच गए। हम उन्हे लेकर आफिस मे आ गए हैं। ब्रीफकेस मे से 10 लाख रुपये निकल चुके हैं उसकी जगह अखबार के कागज भरे हुए थे। यद्यपि उन दोनो स हम ही बात कर लेते। पर यह अनहोनी घटना आपको बतलाना उचित समझकर यहा आए हैं। यह लडका मुश्किल से 20 वर्ष का है, पर दिखता पढा लिखा और स्मार्ट हे। अब आप मिलना चाहें तो उसे यहा लाए अन्यथा हम ही उसका इलाज कर द।

ऐसे हुशियार लोगो की आखों मे भी धूल झोंकने वाला पर रायबहादुर उर्फ अनुराग शुक्ला को आश्चर्य हुआ। उसने कहा मैं स्वय उससे मिलना चाहूगा। देखता हू, उसको कौन है वह ! ले आओ दोनो को। अनुराग शुक्ला अपनी रिवाल्विग चेयर पर बैठा था। उसका कक्ष किस–किस प्रकार के आधुनिक साधनो से सजा था कि उसकी सारी जानकारी तो केवल उस ही थी और किसी को नहीं। उस कक्ष म आने वाले हर व्यक्ति की जाच तक वह

कक्ष मे रहे ? रील ले ली जाती थी। उसकी आवाज टेप हो जाती थी। यही नही उसे मारना भी होता तो भी ऑटोमेटिक मशीनगन (Machine Gun) की व्यवस्था भी। ऐसी बहुत सी आधुनिक तकनीकी से वह लेस था। जब वह ड्राइवर और नौजवान अन्दर आए तो अनुराग शुक्ला ने देखा ड्राइवर जरूर 30 साल का होगा। पर वह साथ वाला तो निहायत 20 साल का ही होगा। उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योकि अपराध की दुनिया मे वह भी 18 साल की उम्र मे आ गया था। अत यह नौजवान भी कुछ कर बैठे तो क्या बडी बात है। अनुराग ने उस नौजवान की और उन्मुख होकर कहा– दोस्तो ! मान गए तुमको। बहुत सफाई से काम करने लगे हो। अब एक बात और ध्यान से सुन लो। एक बार पुलिस के शिकजे से बाहर निकल सकते हो पर हमारे यहा से अब हमारी इच्छा के बिना नहीं जा सकोगे। अत हम जो भी पूछते हैं वह सही–सही बतलाओगे हो सकता है सही बोलने पर तुम छूट भी सकते हो।

हा तो यह बतलाओ कि तुम्हारा नाम क्या है और कहा के हो ?

वह नौजवान भी काफी हुशियार था। वह भी समझ गया कि अनुराग शुक्ला की उम्र भी कोई 25 साल से ज्यादा नहीं है, इतनी छोटी उम्र मे जो अरबो का मालिक बन बैठा है तो बिना अपराध के नहीं बन सकता और जिसका शिकजा पुलिस से भी ज्यादा कसा हुआ है तो अपराधी तो निश्चित होगा ही। अत सच कहना ही ज्यादा उचित होगा।

वह बोला साहब आप से कुछ भी नहीं छुपाएगे। मेरा नाम भुवनेश कुमार है। मै राजस्थान के शहर कोटा के पास बारा गाव का रहने वाला हू। मेरे पिता का नाम अमरनाथ एव माता का नाम वैजयन्ती था।

तब अनुराग शुक्ला बीच मे ही बोला– क्या मतलब।

मतलब यह की अब वे दोनो इस दुनिया में नहीं रहे। यह कैसे हुआ ?

यह सब पारिवारिक कलह का कारण रहा है। मेरे पिता के दो भाई हैं। एक का नाम पहाड सिह एव दूसरे का जगत सिह है। तीनो का [illegible] हो चुका था। तीनो मे जमीन जायदाद चल–अचल सम्पत्ति बट चुकी [illegible] पिता जी के एक किराने की दुकान थी। कुछ भाग्य अच्छे थे जो [illegible] दुकान बहुत अच्छी चला करती थी। दिन रात ग्राहक आते ही रहते [illegible] पर भी कुआ खुदवा लेने से खेती बाडी भी अच्छी होती थी। [illegible] होने से मेरे पिता से मेरे दोनों काका ईर्ष्या करते थे। लेकिन [illegible] पा रहे थे वे इस मौके की तलाश मे जरूर रहते थे कि कोई

चास हाथ लगे। मैं उस वक्त कोटा कॉलेज में पढ रहा था। पिता जी व मेरी माता जी बारा मे रहते थे। उन्होंने एक सेकेण्ड हेण्ड कार भी खरीद ली थी। एक दिन वे मुझसे मिलने कोटा आए थे और जब पुन लोटकर बारा जा रहे थे तो रात्रि हो गई थी। रात की 10 बजे अधेरा हो चुका था। गाव से 10 कि मी दूर रोड पर बडे–बडे पत्थर होने से गाडी रोकना पडा। ज्योही पिता जी पत्थर हटाने के लिए बाहर निकले और पत्थरो को हटाए उससे पूर्व ही इधर–उधर पीछे से 5–7 व्यक्ति आए उन्होंने पत्थर, भाले लकडिया से पिता जी एव मा को बुरी तरह मारा और मारकर गाडी पर पैट्रोल छिटककर दोनो की लाशे उसी मे जला दी।

दूसरे दिन यह घटना जगल की आग की तरह सब जगह फैल गई। पेपरो में समाचार भी आए पुलिस ने ऊपरी तोर पर खोजबीन भी करी। पर कोई सुराग नहीं मिला। मिलता भी केसे क्योकि पुलिस पेसा जो खा चुकी थी। मैं कोटा से कॉलेज छोडकर घर गया तो आश्चर्य हुआ कि घर के भी ताले टूटे हुए हैं अन्दर तिजोरी के भी ताले टूटे हुए हैं। सारा माल पहले से ही निकाला जा चुका था। यह सारी स्थिति देखकर गाव वालो का यह अन्दाज था कि इस घटना मे पहाड सिह एव जगतसिह का हाथ हो सकता है। कुछ हालात भी ऐसे ही दिख रहे थे। जिससे अनुमान की पुष्टि मिल रही थी।

माता पिता के इस दुनिया से चले जाने के बाद मेरा इस दुनिया मे कोई नहीं रहा। सोना और रुपया भी जा चुका था। केवल मकान ओर जमीन ही सम्पत्ति के रूप मे रह चुके थे। मन पर भारी बोझ सा हो गया। 10–15 दिन तो ऐसे ही बीत गए, अन्त मे मेरे मन मे आक्रोश भडक उठा। दोनो काकाओ के प्रति मेरे मन ने सकल्प लिया कि मैं इसका बदला लेकर रहूगा। लेकिन इसके लिए सम्पत्ति एव अन्य साधनों की भी आवश्यकता थी। यही सोचकर मैंने पढना–लिखना छोडा। यही नहीं गाव भी छोडकर बाम्बे चला आया। क्योकि वहा पर मेरी जान को खतरा था और मुझे बदला भी लेना था। इसलिए बाम्बे आकर मैंने किसी भी तरह पैसा एकत्रित करना प्रारम्भ किया। एक बार यह जो टैक्सी ड्राइवर आप देख रहे हैं। इसकी टेक्सी म जा रहा था और इसी का पाकेट मार लिया था। उसी बीच पकडा गया था। फिर दोनो मे विवाद होने के बाद सुलह हो गई। अब मैं इसी की टैक्सी म घूमता हू। जिस किसी की पॉकेट लूटते हैं दोनो आधा–आधा कर लेते हैं। इसी कडी मे आज इन दो व्यक्तियों के ब्रीफकेश पर भी हाथ सफाई की थी पर यह

हमारा दुर्भाग्य था कि हम पकडे गए और आपके सामने हाजिर हैं।

इतना सुनने के बाद अनुराग शुक्ला बोले–दुर्भाग्य नहीं सद्भाग्य है जो यहा तक पहुच गए हो।

यह कैसे बॉस। उस भुवनेशकुमार के मुख से भी अचानक यह बास शब्द निकल गया।

अनुराग शुक्ला ने कहा– हमने तुम्हारी सारी बाते सुन ली है। अब बताओ तुम क्या चाहते हो। क्या तुम्हे चोरी के अपराध मे जेल भिजवा दिया जाय या हम ही तुम्हारा काम तमाम कर दे या फिर तुम कुछ काम करके आगे बढ़ना चाहोगे।

वैसे तो बॉस। अब तो हम आपके हाथो मे है जैसा चाहो वैसा करो। हम हाजिर हैं।

अनुराग शुक्ला की नजरे पारखी थी। वह एक नजर मे ही भुवनेश्वर की उपयोगिता भाप गया था। उसने सोचा कि यह लडका हिम्मती, साहसी एव हुशियार होने के साथ ही परिस्थिति का मारा है। मेरी तरह ही यह भी अपराध की दुनिया मे प्रवेश कर रहा है। लेकिन कोई जरूरी नहीं कि यह उसमे सफल हो ही। बल्कि अपनी कपनी में लगने पर अपना कार्य और इसका कार्य भी बन सकता है। यह सब सोचकर अनुराग शुक्ला ने कहा– दोस्त। यह वफादारी तुम्हे रखनी ही होगी कि जिस कम्पनी में काम करोगे। उसके प्रति पूरी तरह वफादार रहोगे। अपनी कुर्बानी करके भी उसकी रक्षा करना तुम्हारा मुख्य लक्ष्य होगा। यदि इसमे विश्वासघात पाया गया तो उसी वक्त तुम्हे उडा दिया जाएगा। हमारे हाथ काफी लम्बे हैं।

भुवनेश–यह तो मै देख ही रहा हू। लेकिन ऐसा मौका में अपन जीवन [illegible] नहीं आने दूगा। तो फिर यह भी पक्का हे कि तुम्हारी हर सुविधा का [illegible] कम्पनी रखेगी। आज से तुम्हारी 15 हजार रुपये प्रतिमाह की नौकरी [illegible] फ्लैट की सुविधा व गाडी भी कम्पनी की तरफ से दी जाएगी। यह जो [illegible] साथी ड्राइवर हे इसे हम कम्पनी के बाडी गार्ड मे नियुक्त करते हैं। [illegible] पर क्या करना है यह ट्रेनिग मिल जाएगी। हा मिस्टर भुवनेश्वर [illegible]। आपको कम्पनी मे अपनी उपयोगिता जाहिर करना है। योग्यता के [illegible] पर आपका वेतनमान अन्य सुविधाए बढती रहेगी।

अच्छा बोस। मुझे काम करने का मौका दीजिये। भुवनेश के कहने पर [illegible] शुक्ला का ईशारा पाकर उसके चारो तरफ खडी सगीन चौकसी हटा

दी गई। भुवनेश ने भी मन लगाकर काम करना शुरू किया। 6 माह मे ही वह अनुराग शुक्ला की कम्पनी का छोटा–बडा सब काम करना जान गया। भुवनेश को इग्लिश की अच्छी जानकारी होने से उसे एक्सपोर्ट डिपार्टमेन्ट (Export Department) मे रखा गया। ताकि वह अच्छा चल सके। वर्ष भर बाद तो उसने अपनी पेनी बुद्धि से काम को इतनी गति दी की काम दुगुना बढ गया। कम्पनी को भरपूर कमाई हुई। बिना कहे अनुराग ने उसकी नौकरी फैसीलीटी मे आश्चर्यजनक वृद्धि कर दी। इम्पोर्टेड वातानुकूलित गाडी ड्राइवर। घर पर दो नौकर, पूरे फ्लेट मे ए सी आदि कई सुविधाए दे दी गई। भुवनेश भी पूरी वफादारी के साथ काम कर रहा था। अब उसे रहते हुए 2–3 वर्ष का समय हो चुका था।

इसी बीच अनुराग शुक्ला के महायोगी का सानिध्य प्राप्त हाने स उनके जीवन मे अपूर्व मोड आया था। जिसका प्रभाव पूरी कम्पनी पर पडा। कपनी मे भी अनैतिक व्यापार को रोककर व्यापार को नई दिशा दी गई। इसमे भी भुवनेश कुमार का बहुत बडा हाथ रहा। आज कम्पनी के कम से कम विश्व के दस देशो मे स्वतत्र आफिस चल रहे थे। बाम्बे के डायमण्ड बाजार मे तो नाम हे ही, इण्डस्ट्री (Industry) के क्षेत्र मे भी काफी बडी इण्डस्ट्रिया चल रही हे। अनुराग का सम्पर्क पाकर भुवनेश ने भी व्यापारिक क्षेत्र मे कमाल दिया। इसी बीच जहा कोटा मे अनुराग ने अपने दोस्तो रा बदला लिया था। वैसी ही कुछ स्थिति भुवनेश की थी। पर अनुराग शुकला के विचार तो बदल ही चुके थे। उसी ने भुवनेश को भी समझाया कि किरी के बदला लेने से बदला लिया नही जाता। बल्कि उससे वेर परम्परा और बढती है। फिर जिसने जो कर्म किये हें वह निश्चित रूप रो उसे आज नही तो कल भोगने पडेगे। बस फिर हम क्यो बीच म पडे। हम अगर मारग तो इसका फिर हमे बदला चुकाना पडेगा। महायोगी ने मुझे यह बात रागझाई थी कि जिस प्रकार तुम्हे कोई मारता है तो तुम उसे वापरा गत मारो उराकी शिकायत सरकार मे करो। दण्ड सरकार देगी। यदि मारने वाले को साग़ वाला मरता है तो सरकार दोनो को दण्ड देती हे। क्याकि दण्ड दन का अधिकार आप को नहीं है दण्ड तो सरकार देगी। वेसे ही हम क्या किरी का बदला लेकर अपने आपको दण्डित करे। यह तो उसक कर्म अपन आप उसको दण्डित करेगे।

अनुराग ने कहा–मैं मानता हू कि तुम्हारे साथ बहुत ही गलत काम हुआ। तुम्हारे में प्रतिशोध की भावना धधक रही हे। पर भुवनेश जी ! सोचिय

उसे शान्त करने का यह तरीका नही है। दोनो काका को मारने से तो प्रतिशोध भडकेगा ही।

इस प्रकार अनुराग शुक्ला के समझाने से भुवनेश मे भी अद्भुत परिवर्तन आया। उसने दोनो काका को मारने की बात दिमाग से निकाल दी। लेकिन दिल मे उनके प्रति प्यार भी नही जग पाया। खैर उसकी अब वैसे भी दारा जाने की इच्छा नहीं थी। वह बोला– बॉस। आप ठीक कहते हैं। मैं यद्यपि बदला तो नहीं लूगा। पर मेरा प्यार भी उन पर नहीं है। अब तो इस दुनिया मे अगर मेरा कोई होता तो आज तक मैं अपराध की दुनिया मे कितना आगे बढ गया होता कुछ नही मालूम। अब आपको ही सोचना है कि मुझे भविष्य मे क्या करना है ?

अनुराग ने भुवनेश को अपने गले लगा लिया और कहा– दोस्त ! तुमसे मुझे यही आशा थी। तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो, तुम्हारी चिन्ता मेरी चिन्ता होगी। तुम मेरे अभिन्न साथी हो।

बॉस का यह आश्वासन पाकर भुवनेश खिल उठा। क्योकि कोई तो उसे सहारा मिला। हर आदमी कितना ही क्रूर, अपराधी या कैसा भी हो, वह किसी का सहारा पाकर अन्दर मे भर जाता है, वही हाल भुवनेश का था। भुवनेश अनुराग शुक्ला का दाया हाथ था। यह सारी कम्पनी जानती थी। इसलिए कम्पनी मे उसका भी उतना ही प्रभाव था।

अनुराग शुक्ला को भुवनेश के भविष्य की चिन्ता भी बनी रहती थी। क्योकि अभी तक उसकी भी शादी नही हुई थी। उसने देखा मेरी शादी तो [illegible] हो गई अब भुवनेश की भी करनी थी। इधर उसे बहिन विभा की शादी का भी विचार आया। दोनो विचारो मे तालमेल हुआ। वह सोचने लगा– वाह ! एक तीर दो शिकार। क्यो न भुवनेश के साथ ही विभा की शादी कर दी जाय। जोडी जोरदार जमेगी। भुवनेश बहुत ही स्मार्ट प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी है। इधर विभा भी किसी भी दृष्टि से उससे कम नही है। [illegible] दोनो समस्याओ का समाधान हो जाएगा। अनुराग ने इस विषय मे [illegible] उसे यह निर्णय उतना ही उचित लगा।

अनुराग--अरे यार ! हीरा भी क्या अपना मोल बतलाता है। यह तो पारखी नजरे ही उसकी परख कर सकती है। हम जानते हैं। बोलो विमा तुम्हे पसन्द है या नही ?

आप कैसी बात करते हैं। यह पूछिये, विमा को मैं पसद हू या नहीं। बहुत कम समावना है कि वह हा भरे।

अनुराग बोला– भुवनेश ! इतना मेरे पास रहकर भी तुमने मुझे अभी पूरा नहीं पहचाना मेंने तुमसे बात करने से पहले ही विमा से बात कर ली है। उसे तुम पूरी तरह पसद हो। वह तुम्हे पाने की स्थिति मे खुश रहेगी। अब बोलो तुम क्या चाहते हो।

भुवनेश – वैसे तो बॉस मैं साधारण व्यक्ति हू आपके सामने। फिर भी मेरे लिए आप सब कुछ हैं। अत आप जो भी निर्णय लेगे वह मेरे हित मे होगा और वह मुझे मजूर होगा। जहा तक पसद की बात है विमा जी मुझे पूरी तरह पसद है। ऐसी युवती तो आज की दुनिया मे मिलना ही मुश्किल है। उसे पाकर तो मेरे पतझड मे निश्चित ही बसत आ जाएगी।

भुवनेश द्वारा सहर्ष स्वीकृति मिलने के बाद अनुराग अपनी मम्मी कुसुमवती के पास आकर बोला– मम्मी ! मैंने तुम्हारी आधी चिन्ता तो समाप्त कर दी हे। अब एक चिन्ता जो तुम्हे बडी सता रही हे वह विमा की शादी की।

इतने मे कुसुमवती बोल पडी–हा बेटा ! बस यही बात मुझे दिन रात रह रहकर परेशान करती रहती हे। क्योकि आज के कलियुग मे चरित्रवान समन्वयशील लडके मिलना दुर्लभ हो गया है। फिर इस माया नगरी बाम्बे के लिए तो कहना ही क्या ? यदि हम कोटा राजस्थान म हाते ता वहा ता फिर कोई अच्छा सा लडका ढूढा जा सकता था। पर यहा पर न तो इतना लम्बा कोई हमारा परिचय है जिससे कि अच्छा लडका ढूढा जा सके। तब अनुराग बोला– मम्मी ! मेरे रहते तुम्हे किसी भी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नही हे। बाम्बे हो चाहे गाव। हर जगह अच्छे–बुरे दोनो प्रकार के लडके मिलते हें। ढूढने वाला चाहिये। मै तुम्हे दूर कहा बतलाऊ अपनी ही कम्पनी मे काम कर रहे भुवनेश कुमार को तो तुम जानती हो ?

कुसुमवती– हा–हा ! वह तो कई बार अपने बगल पर भी आता रहा हे। दिखने मे स्मार्ट, भला वह ईमानदार नजर आता है।

अनुराग– मम्मी ! वह मेरे पास गत 3–4 वर्ष से काम कर रहा है। मैंने उसे नजदीक से देखा परखा है। ऐसा लडका लाखो मे नही मिलता हे। यही नही मेरे पूरी कम्पनी मे मेरे बाद अगर कोई दक्षता के साथ काम कर रहा है तो वह भुवनेश है। मैं चाहता हू कि इसके साथ विभा की शादी हो जाय।

कुसुमवती– बेटा ! तुम जो भी सोचते हो वह उचित ही है परन्तु ।

अनुराग बोला–मम्मी यह परन्तु वाली क्या बात रह गई। क्या उसमे कोई कमी देखी है तुमने ?

कुसुमवती–नहीं बेटा ! कमी वाली तो कोई बात नहीं है। पर वह कितना ही हुशियार हो पर उस घर मे तो नौकर की ही हेसियत से रह रहा है। उससे मालिक की बहिन की शादी कितनी क्या लोगो मे जमेगी ?

अनुराग–मम्मी ! आप आप भी इतनी समझदार होकर भी कैसी बाते करती हो ? दुनिया क्या कहती है। हमे इसे नहीं देखना है। दुनिया तो न हसने दे और न ही रोने दे। हमे तो जो उचित लगे, वह करना है। भुवनेश कुमार अगर नौकरी की हैसियत से यहा रह रहा है तो क्या हो गया। क्या पत्थरो मे हीरे नही मिलते हैं क्या कीचड मे कमल नहीं खिलते हैं ? मम्मी जरा सोचो। पहले अपनी क्या दशा थी। फिर पैसा तो कब आ जाय, कब चला जाय। यह कोई निश्चित नही होता। पर व्यक्ति का व्यक्तित्व महत्त्वपूर्ण होता है। जिसकी भुवनेश मे कही कोई कमी नहीं है। दौलत की दृष्टि से भी वह आज भी करोडपति है। यह तो उसकी वफादारी है, जो मेरी कम्पनी मे काम कर रहा है। अन्यथा अपना स्वतन्त्र कारोबार करके करोडो रुपये कमा सकता है। लेकिन क्या मम्मी ! आपने महायोगी के मुख से नहीं सुना कि श्रीमन्तो को इन्सानियत की कराहट सुनने की आवश्यकता है। महायोगी ने यह भी कहा था– किसी का दौलत से नहीं गुणों से मूल्याकन करना चाहिए। तो मम्मी ! तुम तो उस महायोगी के प्रति अगाध श्रद्धालु हो। फिर ऐसी मानसिकता कैसे बना रही हो।

सभी तरह से मजूरी होने के बाद अब विवाह की तेयारिया की जाने लगी। अनुराग शुक्ला ने अपनी शादी जरूर सादे समारोह मे कर ली थी, पर अपनी बहिन विभा एव भुवनेश की शादी बडे महोत्सव के साथ सम्पन्न करने की तैयारी मे जुट गए। इसका मुख्य कारण भुवनेश था। क्योकि उसके माता–पिता अब इस दुनिया मे नहीं रहे थे। इसलिए उसके मन मे किसी भी प्रकार की हीन भावना या मानसिकता न आ पावे। साथ ही कुसुमवती को यह नही लगे की विभा की शादी उत्साह के साथ नही की।

फाइव स्टार होटल मे फक्शन (Function) रखा गया। फिर भी खाना पूरी तरह से वेजिटेरियन (Vegetarian) रखा गया। आधुनिकता के साथ पोराणिकता का समन्वय था। न मास और नही किसी भी प्रकार का विकृत भोजन का ड्रिक। 100 प्रकार के खाने के आइटम जरूर रखे गए। जो फिजूल खर्ची भी थी। पर शान शौकत का प्रदर्शन भी आवश्यक था। महानगर की जानी मानी हस्तिया भी उपस्थित थी। जहा राजनेता अभिनेता और कई रईस लोग भी मौजूद थे। वहा पर सदाचार एव नैतिकता की जिन्दगी जीने वाले आदर्श पुरुष भी उपस्थित थे। यही नही गरीबी के स्तर पर जीने वाले सामान्य व्यक्ति भी इस समारोह मे आमत्रित थे। यह समारोह अपने ढग का विलक्षण था। यद्यपि अनुराग शुक्ला ने जहा भौतिकता का खुल्ला प्रदर्शन किया था तो वहा सयम भी बनाए रखा। जहा आर्केस्ट्रा (Orchestra) फिल्मी धुने बज रही थी फिर भी किसी नवयोवनाओ को नचाकर अग प्रदर्शन करने का अवसर नही दिया गया था। कुल मिलाकर पैसा पानी की तरह बहाया गया था। साथ ही परमार्थ का भी काम किया गया। हॉस्पिटल मे जितने भी अभावग्रस्त मरीज थे उनके लिए लाखो रुपय का अनुदान किया गया। बाम्बे के कोई पचास हजार गरीब लोगो को अच्छा खाना भी खिलाया गया। ठड से ठिठुरते हजारो लोगा को वस्त्र एव कबल भी वितरित किये गए। सैकडो अनाथ बच्चो के पढने की व्यवस्था भी की गई। विधवाओ की आजीविका की व्यवस्था भी की गई। यह स्वार्थ ओर परमार्थ का मिलाजुला रूप था। आडम्बर ओर सदाचार का मिश्रण था। पोराणिकता और आधुनिकता का सगम था। इस समारोह से सभी वर्ग के लोग खुश थे। गरीबो ने भी अपनी दुआए दी–एसी जोडी युग–युग जीओ। धनवानो ने भी टिप्पणी की कि हमने शादिया तो बहुत देखी पर एसा फक्शन (Function) पहली बार देखा है। जो अत्याधुनिक होकर भी अश्लील नहीं था। जहा ऐश्वर्य का खुल्ला प्रदर्शन था तो वहा दीना असहाया के सहयोग

हेतु भी धन के द्वार पूरी तरह से खुले थे।

इस शादी की चर्चा काफी दिनो तक होती रही। भुवनेश और विभा परिणय सूत्र मे बध गए। परिणय सूत्र का धागा उद्दाम कामवासना को उच्छृखलता से हटकर सतुलित करता है। गृहस्थ जीवन मे जीने के लिए परस्पर एक दूसरे के प्रति समर्पित रहकर आगे बढने की प्रेरणा देता है।

अनुराग शुक्ला ने भरपूर दहेज दिया था। कोलाबा क्षेत्र मे एक दस करोड रुपये की कोठी खरीदकर अपनी बहन बहनोई के लिए दे दी गई। करोडो रुपये के आभूषण एव एम्पोर्टेड गाडी भी दी गई। कुल मिलाकर इतना सब कुछ दिया कि भुवनेश कुमार को भी जानी मानी हस्तियो के समान बना दिया। यही नही अब तक व्यापार मे भुवनेश का 10 प्रतिशत हिस्सा था जिसे बढाकर 25 प्रतिशत कर दिया गया। एक सामान्य सा व्यक्ति जो चोरी करते पकडा गया था। उसे अनुराग शुक्ला ने ऊपर उठाकर अपने बराबर की श्रेणी मे बिठा दिया। गृहस्थ जीवन की यही सफलता है कि बिना किसी स्वार्थ के अपने जीवन मे कम से कम एक व्यक्ति को तो अपने जैसा बनाया जाय।

अनुराग शुक्ला और राजेश्वरी का जीवन सुखमय बना हुआ था ही। अब विभा और भुवनेश की जिन्दगी मे भी गृहस्थ जीवन की बहार आ गई। यद्यपि भुवनेश धर्म कर्म मे इतना नहीं समझता था। परन्तु विभा जिसने महायोगी का सानिध्य पाया था उसने समय–समय पर भुवनेश को समझाकर [illegible] के साथ ही धर्म के मार्ग पर भी आगे बढा दिया।

कुसुमवती का भार पूरी तरह हल्का हो चुका था। अब उस पर किसी की जिम्मेवारी नही रह गई थी। वह अपने आपको पूर्ण हल्का [illegible] कर रही थी। इन शान्ति के क्षणो मे उसे महायोगी का बार–बार [illegible] रहा था कि उनके पुण्यप्रताप से ही मेरे आगन मे शान्ति की बयार

आज अनुराग शुक्ला मिण्डी बाजार मे जा पहुचा जो बाम्बे मे रूप का बाजार माना जाता है। जहा रग–बिरगी तितलिया इधर–उधर मण्डराती रहती है। ऐसे कामोत्तेजक विलासिता पूर्ण बाजार मे पहुचकर अनुराग शुक्ला एक नवयुवती के आमत्रण पर उसके आवास पर जा पहुचा।

नवयुवती रूप को बेचकर अर्थ कमाना चाहती थी। लेकिन अनुराग ने पूछा– तुम्हारा नाम क्या हे ?

उस वीरागना को आश्चर्य हुआ कि यह व्यक्ति नाम क्यो पूछ रहा है ? साश्चर्य उसने बतलाया मेरा नाम यामिनी है।

तब अनुराग शुक्ला ने दूसरा प्रश्न पूछा– तुम कहॉ की हो ? तुम्हारे माता–पिता का नाम क्या है ? इस समय तुम्हारे परिवार मे कोन–कोन है ?

यामिनी को यह सब पूछना बडा अटपटा लगा। उसने सीधा और सपाट जबाब दिया– आप आम खाने से मतलब रखिये, गुठली गिनकर अपना समय बर्बाद मत करिये। निश्चित समय के बाद आपको यहा से निकाल दिया जाएगा। आपके पैसे बेकार चले जाना है।

तुम इसकी फ्रिक छोडा पहले तुम यह बताओ कि तुम हो कहा की ? अनुराग ने कहा।

तब यामिनी बोली– लेकिन आपको इससे क्या मतलब कि में कहा की हू। क्या आप कोई जासूस हैं ? जो हमारी छानबीन करन के लिए आए हैं ? हम जैसी नारियो की जातपात नही पूछी जाती हे केवल काम से मतलब रखा जाता है।

अनुराग शुक्ला बोला– देखो बहिन ! न तो में कोई जासूस हू और नही कोई तुम्हारा अनर्थ करने वाला हू। मैं भी एक मानव हू ओर तुम भी एक मानवी हो। इस नाते तुम मेरी बहिन हो। क्या भाई को बहिन का हाल पूछने का अधिकार नहीं होता ?

यामिनी ने आज पहली बार बहुत अर्सो क बाद अपन लिए परम पवित्र शब्द का सबोधन सुना था। क्योकि इस बाजार म आने क बाद तो उसक पास ऐसे ही विलासी कीडे आते थे जो चद रुपया के पीछे उसका देह निचोडकर चले जाते थे। पहले पहल तो उसने काफी कुछ विरोध किया।

उसका जी भी मचलाया। आत्मा कराहती रही। उन्मुक्त आकाश मे जाने के लिए बहुत कुछ हाथ पैर पटके। लेकिन जब वह सफल नही हो पाई तो जिन्दगी को इसी प्रकार जीने की अपनी नियति मानकर के वही बस गई। धीरे-धीरे अब उसे इसी काम मे रस आने लग गया। लेकिन जब पहली बार एक नवयुवक मे मुख से अपने लिए बहिन शब्द सुना तो उसके भीतर मे गहरी हलचल मच गई। अतीत का जीवन मन मस्तिष्क पर तरगित होने लगा।

वह उत्तरप्रदेश मे मुगलसराय की रहने वाली थी। उसके पिता का नाम जुजारसिह था। चार बहिने और एक भाई मे सबसे पहली लडकी वही थी। यानी की अपने भाई-बहिनों मे सबसे बडी थी। परिवार की आर्थिक स्थिति बडी कमजोर थी। घर का खाने-पीने का खर्च चलाना भी बडा मुश्किल हो रहा था। जुजारसिह एक कम्पनी मे मामूली सी नौकरी करते थे। उससे मिलने वाले पैसो से घर खर्च चलना असमव था। ऐसी स्थिति मे कॉलेज मे पढकर स्नातक बनने की इच्छा होते हुए भी वह नहीं बन पाई। घर पर ही रहना पडा। इतने से भी पर्याप्त नहीं था कुछ नौकरी करने का प्रयास किया गया। मुगलसराय मे ही एक अफसर के यहा टाईपिस्ट (Typist) की नोकरी मिल गई। जिसका नाम मानसिह था। टाईप करना उसने सिख लिया था। वह नौकरी पर जाने लगी। लेकिन मानसिह का ध्यान जितना उसके काम पर नही था उससे ज्यादा उसके जवान जिस्म पर था। वह बार-बार उसे अपनी तरफ आकर्षित करने का प्रयास करने लगा। लेकिन वह अपने काम से ही मतलब रखती थी। किन्तु कामी मानसिह ऐसे ही छोडने वाला नही था। उसने पूछा तुम कितने भाई-बहन हो। यामिनी ने सक्षिप्त मे जवाब दिया। फिर पृछा तुमने दसवीं तक ही पढाई करके स्कूल क्यो छोड [illegible]। यामिनी ने घर की आर्थिक स्थिति की कमजोरी का कारण बताया। [illegible] मानसिह बोला-चलो तुम मेरे यहा काम करती हो, मैं तुम्हें छात्रवृत्ति देकर [illegible] रखता हू। मै तुम्हारा सहयोग करूगा।

[illegible] पढने की तमन्ना तीव्र थी अत उसने सहयोग लेना [illegible] उसका पहले ही एक साल खराब हो चुका था। अत [illegible] के लिए प्रायवेट फार्म भर दिया गया। प्राइवेट [illegible] ही पढता है। कई विषय स्वय को समझ में [illegible] होता हैं। ऐसी कडीशन उसकी नहीं। ऐसी [illegible] पढने लगी। बार-बार के इस एकान्त [illegible] विकृत कर दिया था और एक दिन ऐसा

आज अनुराग शुक्ला भिण्डी बाजार मे जा पहुचा जो बाम्बे मे रूप का बाजार माना जाता है। जहा रग–बिरगी तितलिया इधर–उधर मण्डराती रहती है। ऐसे कामोत्तेजक विलासिता पूर्ण बाजार मे पहुचकर अनुराग शुक्ला एक नवयुवती के आमत्रण पर उसके आवास पर जा पहुचा।

नवयुवती रूप को बेचकर अर्थ कमाना चाहती थी। लेकिन अनुराग ने पूछा– तुम्हारा नाम क्या है ?

उस वीरागना को आश्चर्य हुआ कि यह व्यक्ति नाम क्यो पूछ रहा है ? साश्चर्य उसने बतलाया मेरा नाम यामिनी है।

तब अनुराग शुक्ला ने दूसरा प्रश्न पूछा– तुम कहॉ की हो ? तुम्हारे माता–पिता का नाम क्या है ? इस समय तुम्हारे परिवार मे कौन–कौन है ?

यामिनी को यह सब पूछना बडा अटपटा लगा। उसने सीधा और सपाट जबाब दिया– आप आम खाने से मतलब रखिये, गुठली गिनकर अपना समय बर्बाद मत करिये। निश्चित समय के बाद आपको यहा से निकाल दिया जाएगा। आपके पैसे बेकार चले जाना है।

तुम इसकी फ्रिक छोडा पहले तुम यह बताओ कि तुम हो कहा की ? अनुराग ने कहा।

तब यामिनी बोली– लेकिन आपको इससे क्या मतलब कि मै कहा की हू। क्या आप कोई जासूस हैं ? जो हमारी छानबीन करन के लिए आए हैं ? हम जैसी नारियो की जातपात नहीं पूछी जाती हे केवल काम से मतलब रखा जाता है।

अनुराग शुक्ला बोला– देखो बहिन ! न तो मै कोई जासूस हू और नहीं कोई तुम्हारा अनर्थ करने वाला हू। मैं भी एक मानव हू और तुम भी एक मानवी हो। इस नाते तुम मेरी बहिन हो। क्या भाई को बहिन का हाल पूछने का अधिकार नहीं होता ?

यामिनी ने आज पहली बार बहुत अर्सों के बाद अपने लिए परम पवित्र शब्द का सबोधन सुना था। क्योकि इस बाजार म आने क बाद तो उसके पास ऐसे ही विलासी कीडे आते थे जो चद रुपया क पीछे उसका देह निचोडकर चले जाते थे। पहले पहल तो उसने काफी कुछ विरोध किया।

उसका जी भी मचलाया। आत्मा कराहती रही। उन्मुक्त आकाश मे जाने के लिए बहुत कुछ हाथ पैर पटके। लेकिन जब वह सफल नही हो पाई तो जिन्दगी को इसी प्रकार जीने की अपनी नियति मानकर के वही बस गई। धीरे–धीरे अब उसे इसी काम मे रस आने लग गया। लेकिन जब पहली बार एक नवयुवक मे मुख से अपने लिए बहिन शब्द सुना तो उसके भीतर मे गहरी हलचल मच गई। अतीत का जीवन मन मस्तिष्क पर तरगित होने लगा।

वह उत्तरप्रदेश मे मुगलसराय की रहने वाली थी। उसके पिता का नाम जुजारसिह था। चार बहिने और एक भाई मे सबसे पहली लडकी वही थी। यानी की अपने भाई–बहिनो मे सबसे बडी थी। परिवार की आर्थिक स्थिति बडी कमजोर थी। घर का खाने–पीने का खर्च चलाना भी बडा मुश्किल हो रहा था। जुजारसिह एक कम्पनी मे मामूली सी नौकरी करते थे। उससे मिलने वाले पैसो से घर खर्च चलना असमव था। ऐसी स्थिति मे कॉलेज मे पढकर स्नातक बनने की इच्छा होते हुए भी वह नही बन पाई। घर पर ही रहना पडा। इतने से भी पर्याप्त नहीं था, कुछ नौकरी करने का प्रयास किया गया। मुगलसराय मे ही एक अफसर के यहा टाईपिस्ट (Typist) की नौकरी मिल गई। जिसका नाम मानसिह था। टाईप करना उसने सीख लिया था। वह नौकरी पर जाने लगी। लेकिन मानसिह का ध्यान जितना उसके काम पर नही था उससे ज्यादा उसके जवान जिस्म पर था। वह बार बार उसे अपनी तरफ आकर्षित करने का प्रयास करने लगा। लेकिन वह अपने काम से ही मतलब रखती थी। किन्तु कामी मानसिह ऐसे ही छोडने वाला नही था। उसने पूछा तुम कितने भाई–बहन हो। यामिनी ने सक्षिप्त में जवाब दिया। फिर पूछा तुमने दसवी तक ही पढाई करके स्कूल क्यो छोड दिया। यामिनी ने घर की आर्थिक स्थिति की कमजोरी का कारण बताया। [illegible] फिर बोला–जो तुम मेरे यहा काम करती हो मैं तुम्हे छात्रवृत्ति देकर [illegible] रखना चाहता हूँ। मै तुम्हारा सहयोग करूगा।

आया कि उसके चरित्र का पतन हो गया।

प्रथम बार तो उसकी आत्मा बहुत घबराई। पर उसके बाद जो सिलसिला चल पडा, वह अविराम चलता ही चला गया। और वह भी उसमे ढल गई। इधर मानसिह उसे फासे रखने के लिए नये–नये आकर्षण देता चला गया। लेकिन वह शादी तो कर नही सकता था क्योकि उसकी 10 वर्ष पहले ही शादी हो चुकी थी। उसके दो बच्चे भी थे। लेकिन उसने झूठे झासे देने मे शादी करने की स्वीकृति दी थी। उसी के परिणामस्वरूप यामिनी शादी करने के लिए बार–बार आग्रह करने लगी। इससे मानसिह भी काफी परेशान था और अब यामिनी के प्रति उसकी कोई विशेष रुचि भी नही रही थी। ऐसी स्थिति मे वह इस काटे को निकालना चाहता था। इसके लिए एकदिन अत्यधिक रूप से कोमलता एव सहानुभूति दर्शाता हुआ यामिनी से बोला– यामिनी मुझे तुमसे शादी तो करना ही है। मेरी सच्ची मोहब्बत तो तुमसे ही हैं। मेरी पहले वाली पत्नी तो नीरस है। घर वालो ने मेरे नही चाहते हुए उससे जबर्दस्ती शादी कर दी थी। जिसके कारण मैं आज तक पछता रहा हू। पर तुम्हारे आ जाने से मेरी जिन्दगी मे एक नई बहार आ गई है। मैं तुम पर न्यौछावर हू।

इस प्रकार प्रशसात्मक प्रेम भरी बाते सुनाने से यामिनी बेहद खुश हो गई। अपनी सुन्दरता की झूठी प्रशसा सुनकर भी खुश होकर सीमा का अतिक्रमण कर जाना नारी की अन्तरग कमजोरी है।

मानसिह ने आगे कहा कि चलो पहले बाम्बे आदि बड शहरो मे घूम आए ओर शादी के बाद विदेशो मे हनीमून मनाने चलेगे। यामिनी ने इस बात को सहज रूप मे मान लिया और घर पर लडकियो के साथ घूमने जाने का बहाना बनाकर एक रात अचानक वह मानसिह के साथ बाम्बे के लिए रवाना हो गई। बाम्बे पहुचने के बाद एक होटल मे ठहर गए। दो दिन तक तो सब ठीक ठाक चलता रहा। उसके बाद एक दिन मानसिह ने बाम्बे की कोठे की सचालिका से बात करके कुछ पैसे के लोभ मे उसे बेच दिया और भुवाजी से मिलने का बहाना बनाकर उसे कोठे पर छोडकर चला गया जो आज तक वापस नहीं आया।

यामिनी को 2–4 दिन बाद यह पता चला कि वह जिन्दगी का सबसे बडा धोखा खा गई है। लेकिन अब तक उसके पर कट चुके थे। अत उसने भी परिस्थितियो के साथ समझौता कर लिया और तब से वह उस ढर्रे पर बढ चली थी। जो भी नया ग्राहक आया उसे फासने मे लगी रहती थी।

छटे हुए बदमाश भी जीवन बदलकर महान व्यक्ति बन गए। जबकि जैन इतिहास मे तो प्रभवस्वामी जैसे ऐसे व्यक्ति का वर्णन आता हे जो कि 500 डाकू दल का सरदार था, वह जम्बू कुमार का सम्पर्क पाकर इतना सुधरा कि सव कुछ छोडकर अपने दल सहित जैन सन्यास स्वीकार कर लिया और भविष्य मे जैन समाज का सर्वोत्तम आचार्य पद भी उसने प्राप्त कर लिया। समूचे जैन समाज मे ही नहीं, जन समाज मे भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। व्यक्ति अपने आप मे अच्छा बुरा नही होता है, उसके कर्म ही उसे अच्छा बुरा बना देते हैं अत बहिन तुम भी अपने इस दुराचरण का परित्याग कर दो तो सारे जहान मे प्रतिष्ठा पा सकती हो।

यामिनी बोली– साहब ! आपका कहना किसी दृष्टि से ठीक भी हो सकता है, लेकिन अब मैं जाऊ भी तो कहा जाऊ। प्रथम तो इस चाल की मालकिन विजया मुझे जाने नहीं देगी। क्योकि उसने मुझे खरीदा है। दूसरी बात उससे छुटकारा पा भी जाऊ तो घर तो जा नहीं सकती। नहीं जाने के कई कारण हैं, एक तो इतने लम्बे समय से घर से भाग चुकी हू। सभी परिचित लोग यह जानते हैं कि किसी प्रेमी के साथ भाग गई है। लेकिन जब वापस जाऊगी तो सभी लोग तरह–तरह के प्रश्न पूछेगे और जब मेरी इस जिन्दगी का कीचड जनता के सामने आएगा तो वहा मेरा जीना तो दुर्भर हो जाएगा। साथ ही कीचड के छींटे परिवार पर भी उछलेगे। परिवार वालो की भी बदनामी होगी। उनकी बची हुई प्रतिष्ठा भी धुल मे मिल जायेगी। मेरे कारण मेरे परिवार पर सकट गहराए यह मे नही चाहती इसलिए मे इसी हाल मे रहना चाहती हू।

बहिन यामिनी ! यद्यपि तुम इस अति भोग वाली जिन्दगी मे जी रही हो, फिर भी तुम्हारी सोच सूक्ष्म और उचित है। यह सही है कि तुम्हारे घर जाने से तुम्हारे एव तुम्हारे परिवार के ऊपर कई सकट आ सकते हैं। अत वहा जाने की आवश्यकता कहा है ?

अनुराग के कहने पर यामिनी वोली– फिर कहा जाऊ अपने भैया के घर।

भैया ! कौन ?

अभी तक तुमने नहीं पहचाना ?

कौन भैया ? मेरा भैया तो ऐसा है कि वह अपनी जिन्दगी भी सही ढग से चला नहीं सकता तो मेरा क्या निर्वहन करेगा ?

ओ हो वहा जाने की तो बात ही नहीं रही।

फिर भैया कौनसा ?

अरे यह सामने जो खडा है ?

हाय आप ! क्या आप जैसे महान् व्यक्ति के घर पर मेरी जैसी नारी, नारी ही नही अपितु नारी जाति का कोढ रूप बदनाम औरत के लिए पनाह मिलेगी ?

क्यो नही मैंने पहले ही कहा था ना, व्यक्ति अपने काम से ही अच्छा बुरा बनता है। जब तुम यह काम छोड दोगे तो तुम्हारा जीवन भी पवित्र बनता चला जाएगा। मै तो तुम्हारे भीतर उस महान महिला के अस्तित्व का दर्शन कर रहा हू जो पवित्रता का नूर है तथा जन कल्याण से ओत प्रोत है। लेकिन उस पर जमाने की आई हुई है। जिस प्रकार दहकते अगारे पर राख आई हुई है। अत उठो साहस करो। दृढ सकल्प करो छोडो इस गन्दगी पूर्ण माहौल को। मानव जीवन अमूल्य हीरा है उसे नमक जीरे जैसे मामूली से कार्य के लिए बर्बाद मत करो। जीवन का विशिष्ट उल्लास तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। उसमे समा जाने के लिए कदम आगे बढाओ। मै तुम्हारे साथ हू।

योग्य अयोग्य की बात छोडो यामिनी बहिन ! मे तुम्हारी सब व्यवस्था कर दूगा। तुम्हे किसी प्रकार का विचार करने की आवश्यकता नही है।

यह तो ठीक है पर मुझे आपके आवास मे रहने से काफी सकोच है। दूसरी बात इससे लोगो मे काफी अफवाहे उड सकती है। मेरे कीचड के छीटे आप पर भी उछल सकते हैं।

इसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं है।

आपको है या नहीं, पर मुझे अवश्य है। मेरे ही उद्धारकर्त्ता की बदनामी हो, यह मुझे सह्य नही है।

खैर यामिनी बहिन ! मैं तुम्हारी अलग स्वतन्त्र व्यवस्था कर देता हू। मेरी दिल से तमन्ना है कि तुम यहा से बाहर निकलो और जिन्दगी को मानवता की महक के साथ खुशमिजाज माहौल मे व्यतीत करो।

मेरे उद्धार की आपकी इस प्रबल इच्छा को देखते हुए मेरे अन्तर मन ने भी यह दृढ निर्णय ले लिया है कि चाहे कैसी भी स्थिति मे मैं उसका सामना करते हुए जी लूगी। पर मुझे अब इस भोग की गन्दगी मे नही रहना।

बहुत–बहुत शुक्र गुजार। तुमसे मुझे यही अपेक्षा थी। तुम्हारा जीवन यहा से हटने के बाद शान्ति से गुजरेगा। इसकी गारटी मेरी है।

मैं आपके इस अहसान से जिन्दगी भर उऋण नहीं हो सकूगी। लेकिन एक बात कह देती हू कि यहा पर मेरी जैसी कई महिलाए हैं। जो देश के विभिन्न स्थानो से आकर भाग्य की मारी अनचाही घोर यातनाए सहन कर रही है।

क्या । अनुराग शुक्ला यामिनी के कहने का तात्पर्य समझ गए। वे तुरन्त बोले–क्यो नहीं मैं। उन सबको सहयोग देने के लिए तेयार हू। जो इस काम को छोडकर मानवता की राह पर आगे बढना चाहती हें। तुम उन सबसे बात करो। और जो भी आने को तैयार हो उन्हे सहर्ष साथ मे ले लो। अब एक सप्ताह तक तुम्हारा यही काम होगा। पूरी चाल मे स्वतन्त्रता सग्राम की तरह एक आन्दोलन चलाओ। मे भी हर रात को यहा पर आऊगा और किसी न किसी को समझाने का प्रयास करूगा। यदि कुछ महिलाए इस काम से मुक्त हो जाय तो एक नैतिक चरित्र जागरण मे बहुत बडी क्रान्ति आ जाएगी।

बाहर और भीतर जहा गहरा अधेरा छाया रहता हो वहा अनुराग शुक्ला महायोगी की शिक्षा से आलौकिक चरित्र का दिव्य प्रकाश लेकर पहुचा

ओर यामिनी जैसी वासना से ओतप्रोत नारी के दिल मे चरित्र की बुझी बत्ती को प्रज्वलित कर दिया। अनुराग शुक्ला की स्नेह भरी बातो से यामिनी के दिल मे उसके प्रति भ्रात प्रेम जाग उठा। और अनुराग शुक्ला के बार–बार प्रेरित करने पर उसने भी भैया कह कर अनुराग शुक्ला को पुकारा और दोनो भाई बहिन का एक पवित्र सम्बन्ध कायम हो गया। दोनो एक दूसरे के प्रति सहोदर भाई बहिन की तरह ओतप्रोत हो गए। अनुराग शुक्ला को जाते वक्त यामिनी बोली– भैया ! आपने अपने सिर पर बहुत बडा दायित्व ले लिया है। तब अनुराग शुक्ला बोला– चिन्ता की कोई बात नहीं, तुम जैसी बहिन को पाकर वह सब भी पूरा होगा। यो कहते हुए रात के उतरार्द्ध मे एक शुभ काम शुरू करके अनुराग ने वहा से विदा ली।

दूसरे दिन फिर वह उसी चाल मे भामिनी नामक युवती के कक्ष मे पहुचा तो वहा भी वही हाल। उसकी दशा तो और विचित्र थी। 10 वर्ष की नाबालिक लडकी थी। तब उसे उठाकर यहा लाया गया था। उसे तो पूरा यह भी मालूम नहीं कि उसके मा बाप का नाम क्या है। इतना जरूर याद था कि उसका गाव जयपुर के आसपास था। इससे यह फलित होता है कि उसका गाव राजस्थान के जयपुर शहर के पास ही है। उसे विजया ने पालपोष कर बालिक होने से पूर्व ही इस काम मे डाल दिया।

क्यो नही ! काच गदा जब तक ही रहता है, जब तक उसकी सफाई नही होती है। ज्योही उसे साफ कर दिया जाता है तो वह चमकने लगता है। उसी प्रकार परिस्थितियो ने तुम्हारी आत्मा पर चरित्रहीनता की कालिख पोत दी है। उसे धोने का प्रयास करो। तुम्हारी आत्मा फिर से चमक उठेगी। तुम्हारा जीवन चाद की भाति दूसरो को भी शीतलता देने वाला बनेगा। भामिनी भी अनुराग शुक्ला के बाहरी व्यक्तित्व से भी अधिक आन्तरिक व्यक्तित्व से प्रभावित हो गई। बहिन का सम्बोधन उसे भी बहुत भाया। वह भी अनुराग शुक्ला की प्रेरणा पाकर वहा से मुक्त होने को तेयार हो गई। उसे भी अनुराग शुक्ला ने यामिनी की तरह समझाया और स्वतन्त्र स्थान पर रखने का आश्वासन देकर उससे भी विदा ली।

तीसरी रात अनुराग शुक्ला फिर किसी कोठे पर पहुचा। इस बार तह निलिमा नामक नवयुवती से मिला। वह कुछ तेज तर्रार थी। साथ ही भोगी जीवन मे आसक्त होकर आधुनिकता मे रहने वाली थी। जब उससे अनुराग शुक्ला ने नाम पूछा तो उसने पहले उसे घूरा फिर रूखे व्यवहार के साथ इतना ही कहा कि निलिमा।

अनुराग शुक्ला ने आगे पूछा कि तुम कहा की हो ? इस बार वह भडक उठी और बोली कि दिख नहीं रहा मैं कहा की हू। जहा रहती हू वही मेरा घर है।

अनुराग शुक्ला को समझते देर नहीं लगी कि इसे समझाने के लिए धेर्य और सहनशीलता की आवश्यकता हे। उसने कहा–ओ हो निलिमा बहिन ! तुम यहीं की हो तो तुम्हारे पिता का क्या नाम है ?

निलिमा–शटअप तुम्हे मेरे अन्तरग जीवन मे झाकने की कहा आवश्यकता है। अपने काम से मतलब रखो। नही तो रास्ता नापो।

अहो ! तुम नाराज क्यो हो रही हो। मैंने तुम्हे अपनी बहिन माना है। ऐसी स्थिति बहिन के सुख–दु ख का ख्याल रखना हर भाई का नेतिक कर्त्तव्य हो जाता है।

लेकिन मैं तुम्हारी बहिन नहीं।

तुम्हारे मानने या न मानने से क्या फर्क पडेगा बहिन तो बहिन ही रहेगी। तुम जिस भारत माता की गोदी मे जन्मी हो मे भी उसी की गोद मे जन्मा हू। अत एक सहोदर होने से भाई बहिन हो ही जाते हें। मेरी इच्छा है कि तुम्हारे जीवन का विकास हो।

निलिमा– यह तो हो ही रहा है।

अनुराग शुक्ला – हा–हा यह तो मैं देख ही रहा हू। लेकिन मैं चाहता हू कि ऐसा विकास हो कि सारा जहान देखे।

निलिमा– हा हो लिया–ऐसी लाइफ मे तो ऐसा विकास। जहा देह शोषण एव अर्थ प्रधान ही जीवन हो वहा खान–पान वेश–विन्यास के अलावा अन्य विकास समव नहीं।

अनुराग को तुरन्त बात समझ में आ गई कि निलिमा यह बात तो अच्छी तरह जानती है कि इस वारागना की जिन्दगी में उच्चस्तर का विकास नही हो सकता और इसके दिल के किसी कौने मे यह बात जरूर जमी हुई है कि विकास तो मेरा भी ऊचे स्तर का हो। बस अनुराग शुक्ला को निलिमा के भीतर मे उतरने का सूत्र मिल गया। उसने कहा– बहिन ! मैं तो यही चाहता हू कि तुम्हारा उच्चस्तर का विकास हो। चाहे वह देश की राजनीति मे हो अर्थ निति मे या जनकल्याण मे हो।

लेकिन यह सभव कैसे हो मेरे चारो और सगीन पहरा है। मेरे पास इस काम के अलावा कोई काम नही है। अनुराग बोला यह मेरी जिम्मेवारी है। मैं तुम्हारी सारी व्यवस्था कर दूगा। तुम्हे इस सम्बन्ध मे किसी प्रकार की चिता की आवश्यकता नही रहेगी।

उसकी सारी व्यवस्था कर देता हू। तुम मेरी बहिन हो मैं तुम्हारा कल्याण चाहता हू।

निलिमा पर अनुराग शुक्ला की बातों का चमत्कारिक असर हुआ। उसने कहा चलो मैं आपकी बात मान भी लू और यह धन्धा छोड भी दू तो आप मेरी क्या व्यवस्था करेगे। कैसे मैं अपनी जिन्दगी यापन करूगी।

अनुराग बिलकुल सही बात कही तुमने। तुम चाहो तो मेरे आफिस के कार्यों मे लग सकती हो। बहुत सारे काम हैं। जैसी तुम्हारी योग्यता होगी ? वैसा काम मिल जाएगा। या चाहो तो हेण्डी क्राप्ट (Hand। Craft) का एक स्वतन्त्र व्यापार खोला जा सकता है और इसका हुनर सिखने के बाद तुम इसका सचालन स्वय कर सकती हो। तुम्हारे साथ और भी बहिने काम कर सकती है। हाथ से बनी वस्तुओ की विदेशो मे भारी खपत है। अत माल का एक्सपोर्ट किया जा सकता है जिससे अच्छी कमाई हो सकती है। वह सब तुम्हारी व तुम्हारे साथ काम करने वालो की होगी। मैं तो चाहता हू कि तुम ऐसा माहौल बनाओ कि यहा से अन्य लडकिया भी इस धन्धे को छोडे और अपनी जिन्दगी मे रचनात्मक कार्य करके आगे बढे।

जब तुम्हारा जीवन पूरी तरह से चरित्र एव नैतिकता के धरातल पर आगे बढने लगेगा तो हमारी पूरी कोशिश होगी कि तुम अच्छे खानदानी घरानो की बहुए बन सको। तुम्हे सामाजिक प्रतिष्ठा मिल सके। और भी कोई खातिरी करना हो तो कर सकती हो।

निलिमा– नही नहीं ! आप जैसे महान् व्यक्ति पर सन्देह करना ही पाप होगा। इस बॉम्बे की माया नगरी में हमारे द्वार पर आने वाला कोई भी व्यक्ति हमारे सुख–दु ख सुनने का इच्छुक नहीं होता। वे रूप के पतगे देह का शोषण करके चले जाते हैं। आप पहले व्यक्ति आए जिन्होने हमारी भीतरी जिन्दगी मे झाकने का प्रयास किया। यद्यपि में आपकी बहिन बनने लायक नही हू। लेकिन जब आपने बहिन मान ही लिया है तो यह लीजिये– यो कहते हुए उसने अपनी साडी फाडी और एक टुकडे से अनुराग के रक्षा सूत्र बाधकर कहा– भैया ! मेरी जिन्दगी का कोई भी दाग आपको न लगे। लोग यह न कहे कि अनुराग की बहिन कैसी है ? मैं आज से इस कुकर्म का सदा सदा के लिए त्याग करती हू और भैया आज के बाद मेरा कोई भी आचरण चरित्रहीन नहीं होगा। अब मैं आपके मिशन को आगे बढाने के लिए सारे चकले मे अनुकूल वातावरण बना दूगी।

अनुराग शुक्ला को निलिमा मे हुए परिवर्तन से वो खुशी हुई जो कि एक–एक दिन मे करोडो रुपये कमाने मे भी नही हुई। उसने कहा– बहिन ! आज तुमने मुझे बहुत अधिक खुशी दे दी है जिसे मैं व्यक्त नही कर सकता हू। अब मे चलता हू पर यह बतलाओ कि मैं वापस कब आऊ।

निलिमा– भैया ! बहुत जल्दी। अब यह काम कल से प्रारभ समझो। आज मगलवार है आप अगले सण्डे (Sunday) तक पहुच जाय। अनुराग शुक्ला ने जाने से पहिले अपना एड्रेस (Address) उसे दे दिया। साथ ही 2 लाख रुपये नगद दिया। ताकि कही भी किसी को समझाने मे रुपयो की आवश्यकता पड जाय तो दिये जा सके। निलिमा ने बहुत मना किया पर अनुराग नही माना।

दूसरे दिन सवेरे ही निलिमा ने अपनी मम्मी विजया के सामने बात छेड दी। मम्मी ! मेरा मन इस धन्धे मे नही लगता। विजया एकदम हतप्रभ रह गई क्या बात हुई निलिमा अचानक ऐसा कैसे बोल गई। आज तक इसने कभी अरुचि नही दिखलाई। आज ऐसा क्या हुआ ? विजया बोली– बेटी ! ऐसी क्या बात हुई जो इस काम से तेरी रुचि खत्म हो गई।

से ऐसी शान–शौकत नहीं मिल सकती। पर पाप पूर्ण कमाई से मिली शान–शौकत कोई महत्त्व नहीं रखती। कोई भी भले घराने की महिला अपने से मिलना पसद नहीं करती। बडे–बडे सेठ साहूकार भले रात्रि मे यहा लुके–छिपे आ जाते। पर दिन मे तो वे इस रास्ते से निकलना भी पसद नही करते। हमारी छाया भी उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा खत्म करने वाली बन जाती हे तो फिर चद रुपयो के लिए इस जिन्दगी को इस प्रकार बर्बाद करना मेरी दृष्टि मे ठीक नहीं है।

विजया– पर मुझे यह समझ मे नहीं आया कि यह सब ज्ञान आज ही तुमको समझ मे कहा से आ गया। किसी साधु सन्यासी का उपदेश सुनने चली गई क्या ? लेकिन मैंने तो तुझे कहीं जाते देखा नही। फिर पता नहीं किसने तुम्हारा दिमाग घुमाया हे।

निलिमा– मम्मी ! तुम इस चक्कर मे क्यो उलझती हो कि मुझे किसने समझाया। तुम तो यह समझने की कोशिश करो कि यह धन्धा ठीक नहीं है। यह भी साफ सुन लो की अब यह धन्धा मैं नही करने वाली।

विजया– पर अपना काम कैसे चलेगा ?

निलिमा– मम्मी ! तुम यह चिन्ता मेरे ऊपर छोड दो। मैं बिना देह व्यापार के भी घर धधा चला लूगी।

विजया– अगर ऐसा है तो मुझे ऐसे धन्धे को छोडने मे कोई एतराज नहीं होगा।

मम्मी के मुख से ऐसी बात सुनकर निलिमा को बडी खुशी हुई। अब वह अन्य महिलाओ को भी समझा कर इस रास्ते लाना चाहती थी। उसने यामिनी, भामिनी जो उसकी अन्तरग सखिया थी। सबसे पहले उन्हीं से बात करने की सोची। मध्यान्ह मे लच के बाद मकान के एक कमरे मे बेठी तीनो बाते कर रही थी। इसी बीच निलिमा ने ही बात छेड दी यामिनी, भामिनी भी बात करना चाहती थी। पर उन्हे यह सकोच था कि निलिमा उनकी बात मानेगी भी या नहीं ? क्योकि वह विजया की बेटी थी। निलिमा का बात मानने का मतलब था कि उसका सारा व्यापार ठप्प हो जाना। किन्तु यहा तो निलिमा ने ही अपनी तरफ से ही बात छेड दी।

वह बोली– यामिनी क्या बतलाऊ अब इस देह व्यापार से मेरा मन पूरी तरह उचट गया है। मैंने तो मम्मी से आज बोल दिया कि आज के बाद मैं यह धधा बिल्कुल नहीं करूगी।

इसी बीच भामिनी बोली– फिर मम्मी ने क्या कहा ?

निलिमा– वह क्या कहती। पहले तो मम्मी ने मुझे विभिन्न तरीके से समझाने का प्रयास किया। लेकिन जब मैं अपनी बात पर अटल रही तो वह भी झुक गई। और उसने मान लिया कि अगर तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो छोड दो इस व्यापार को। पर कमाई कैसे होगी ?

निलिमा– तब मैंने कहा कि यह मैं विश्वास दिलाती हू कि हम दूसरा धन्धा करके भी अपना गुजारा करने की स्थिति मे आ जाएगे। तब वह इस विश्वास पर मान गई। लेकिन यामिनी भामिनी तुम दोनो भी मेरी सखिया हो। मैं चाहती हू कि तुम दोनो भी इस धन्धे को सदा सदा के लिए तिलाजली दे दो।

निलिमा के मुख से यह बात सुनकर यामिनी, भामिनी को ऐसा लगा मानो उसने उनके दिल की बात कह दी।

वे बोली– सखी तुमने तो बहुत अच्छी बात कह दी, हम दोनो तुम्ह साथ है जो भी तुम कहोगी। आज से ही हम इस व्यभिचार–कदाचार त छोडते हैं। हम तो सब तुम्हारी मम्मी विजया के कारण कुछ कर नहीं पा थे। लेकिन अब जब तुम्हारा इतना बडा सबल मिला है तो हम इन्सानि की जिन्दगी जीने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

निलिमा, यामिनी, भामिनी ने उसका जोरदार स्वागत किया। सभी के सामने बतलाया कि यह वही होनहार नवयुवक हमारे लिए एक फरिश्ता बनकर आया है। इन्ही की प्रेरणा से आज हम सबके जीवन मे यह अदभुत परिवर्तन आया है। लेकिन अनुराग शुक्ला ने उसी वक्त कहा– कि यह कृपा मेरी नहीं होकर उस महायोगी की है जिसके कारण से मेरे जैसी पतित आत्मा में परिवर्तन आया था। और वह मैं आपके पास लाया था। मुझे बहुत–बहुत प्रसन्नता है कि आप सबने बहुत जल्दी ही अपने में अदभुत परिवर्तन कर लिया है।

अनुराग शुक्ला के पास मे पैसो की कतई कमी नही थी। उसने उसी वक्त बोरीवली मे चार फ्लेट (Flate) उन गणिकाओ के लिए जो अब शीलवती सन्नारिया हो चुकी थी, खोल दिये थे। उनके लिए खाने पीने रहने–सहने के लिए समुचित व्यवस्था कर दी। इसके अतिरिक्त हाथ खर्च के लिए सभी को 50–50 हजार रुपये दे दिये।

अनुराग शुक्ला ने उन्हे काम कराने हेतु हेण्डीक्राफ्ट का काम प्रारभ किया। 5 कारीगर बुलाए गए। जिन्होने उन महिलाओ को यह काम सीखाना प्रारभ किया। 6 महीने मे सभी महिलाए काम मे दक्ष बन गई। हाथ से निर्मित वस्तुओ का विदेशो मे काफी मूल्याकन किया जाता है। ऐसी स्थिति मे उन वस्तुओ का विदेश विक्रय प्रारभ किया गया। इन सब के पीछे अनुराग शुक्ला के 2 करोड रुपये खर्च हो गए थे। पर उसके मन मे जरा भी गम नही था बल्कि इन महिलाओ के सुधर जाने से उसे भारी सगुन मिल रहा था। 3 वर्ष मे तो निलिमा, यामिनी, भामिनी सभी महिलाए अपने व्यापार मे दक्ष हो गई थी। अब वह स्वय एक्सपोर्ट आदि का कार्य समालने लगी। कमाई बहुत अच्छी होने लगी। तब सभी ने मिलकर अनुराग शुक्ला का जितना पेसा लगा था, वह बडे आग्रह पूर्वक लौटा दिया। लेकिन अनुराग शुक्ला ने यह पेसा अपने पास न रखकर उसका जनहित के लिए एक ट्रस्ट बना दिया। जिससे अन्य लोगो को भी सहयोग दिया जा सके।

महाराष्ट्र की नही अपितु देश–विदेश की पत्र–पत्रिकाओ मे तथा दूरदर्शन ने भी एक जन उद्धार के पवित्र कार्य को भारी कवरेज किया। अनुराग शुक्ला की शोहरत पूरे देश मे फैल गई। सभी लोग उसे आदर की दृष्टि से देखने लगे। पर वह अपने आप मे पूर्ण विनम्र था। क्योकि उसे यह लग रहा था कि यह श्रेय मुझे नही होकर उन निष्पृह महासाधक–महायोगी को है। जिसने मुझे सही रास्ता दिखलाया। उन्हीं की कृपा से मैं आगे बढ रहा हू। सच मे श्रेष्ठ व्यक्ति कभी किसी का उपकार नहीं भूलते।

अनुराग शुक्ला का नाम बाम्बे मे ही नहीं पूरे महाराष्ट्र मे प्रसिद्ध हो गया था। हर प्रबुद्धजीवी व्यक्ति ने अनुराग शुक्ला के कार्य की प्रशसा की । वैसे भी अनुराग शुक्ला ने ऐसे अनेक कार्य सम्पन्न किये जो मानवता के भाल को ऊपर उठाने वाले बने। अनुराग शुक्ला ने अब तक जन–उद्धार के कार्यो मे 50 करोड रुपये लगा दिये थे। जन–उद्धार का कार्य, अनुराग शुक्ला की जिन्दगी मे व्यापार की तरह ही मुख्य धारा के साथ जुड गया था।

जन–उद्धार के कार्य को तेजी के साथ सक्रिय बनाने के लिए प्रशासन के सहयोग की आवश्यकता अधिक लगने लगी। तब अचानक अनुराग शुक्ला के दिमाग मे एक विचार आया कि क्यो न महराष्ट्र मे एक नई पार्टी बनाई जाय और पूरे महाराष्ट्र मे उसके उम्मीदार खडे किये जाय तो यह कार्य बडी तेजी के साथ आगे बढ सकता है। विचार को क्रियान्वयन करने की योजना बनाने लगी। यद्यपि नई पार्टी बनाना सरल कार्य नहीं था। पर जिसके सकल्प मे मजबूती हो उसके लिए कहीं कोई कठिनाई नहीं रहती। अनुराग शुक्ला ने अपनी सोच के अनुसार कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। पहले तो आपकी अपनी पार्टी के नाम से रजिस्ट्रेशन करवा लिया गया। उसके बाद उसका व्यापक प्रचार किया जाने लगा। यद्यपि विधान सभा चुनाव होने मे अभी एक वर्ष बाकी था। पर पार्टी का नाम जन–जन तक पहुचाने के लिए अनुराग शुक्ला और उसके सहयोगी पूरी तेजी के साथ लग गए।

वैसी स्थिति मे वह स्वस्थ प्रशासन नहीं चला सकता। जनता को सही न्याय नहीं दे सकेगा। जो धनवान व्यक्ति है उसका आर्थिक दृष्टि से पेट भरा होगा। अत उसका पैसा कमाने का कोई लक्ष्य नहीं होगा। वह तो नाम कमाना चाहेगा। और उसके लिए वह अच्छे–अच्छे जनकल्याण के आयोजन चला सकेगा। अत वोट श्रीमत को ही दिया जाय ताकि वह देश का कल्याण कर सके। दूसरी बात हर केडीडेट (Candidate) से 5–5 लाख रुपये, जनकल्याण के लिए पार्टी ने पहले ही ले लिए। कुछ मिलाकर पार्टी ने 10 करोड रुपये एकत्रित कर लिए। पार्टी के जीतने के साथ ही ये 10 करोड रुपये जन कल्याण मे लगा दिये जाएगे।

जब साधारण जनता ने सारी बात समझ ली तो उनका आकर्षण पार्टी के लिए निरन्तर बढता चला गया। अन्त मे वोटिग (Voting) हुई। 228 सीटो मे से 205 सीटो पर 'आपकी अपनी पार्टी' के केडिडेट जीत गए। यह सबको सुखद आश्चर्यकारक लगा। पहली बार ही पार्टी प्रचण्ड बहुमत के साथ उभर कर सामने आई। पार्टी ने महाराष्ट्र मे अपनी सरकार बनाई और उसके नेता अनुराग शुक्ला को सर्वानुमति से पार्टी का मुख्यमत्री चुना गया। उसके बाद मत्री मण्डल का विस्तार हुआ। करीब 35 व्यक्तियो को मत्री बनाया गया। उन प्रत्येक मत्रियो से जनकल्याण के लिए पाच–पाच लाख रुपये और लिए गए। इस प्रकार 2 करोड रुपये और एकत्रित किये गए।

सारी सरकारी मिशनरी को एलर्ट कर दिया गया। कोई घूस लेता हुआ पाये जाने पर उस पर सख्त से सख्त कार्यवाही की जायेगी। हर मत्री अपने विभाग की देखभाल अच्छी तरह करने लगा। हर विधायक अपने क्षेत्र की समस्या का समाधान करने लगा। जहा जिस काम की कमी पाई गई उसे तुरन्त पूरा किया जाने लगा। हर विभाग मे ईमानदारी आने से सरकार को करोडो रुपये की इन्कम (Income) बढती चली गई। सब के सब रुपये जनकल्याण मे लगने लगे। कहीं भी भ्रष्टाचार नहीं पनपे इसके लिए पूरी जागरूकता रखी गई। यही नहीं किसी के साथ अन्याय हो रहा हो तो उसे न्याय दिलाया जाने लगा। कोई केश कोर्ट मे लम्बित नहीं करने दिया जाएगा। शहर एव गावो मे नैतिकता एव चरित्र के विकास के प्रति सख्त आध्यादेश जारी किये गए।

3 साल के प्रशासन मे ही महाराष्ट्र की काया पलट गई। लोगा को रामराज्य की याद आने लगी। सुना था रामराज्य में अमन चैन की बशी बजती थी। लेकिन यहा अनुराग के शासन काल मे जनता को शान्ति का अनुभव

हो रहा था। मुख्यमंत्री अनुराग शुक्ला के दूर–दूर तक गुण गाये जाने लगे। मानो भारत के एक प्रान्त महाराष्ट्र मे स्वर्ग उतर आया हो। स्कूल कॉलेज वाचनालय अनाथालय वृद्धाश्रम आदि का विकास किया गया। सडको की व्यवस्था सही की गई। बगीचो से प्रान्त की शोभा निखारी गई। मानवीय सभ्यता नैतिकता के आदर्श को ऊपर उठाया गया। मीडिया से हो रहे गलत प्रचार को रोका गया। गुडागर्दी को तो जड से उखाड दिया गया।

अनुराग शुक्ला को प्रान्त मे अमन चेन देखकर शाति और सुख मिलने लगा। उसे लगा अब कुछ जनकल्याण का काम हो पाया। उसके मन में रह–रह कर महायोगी का स्मरण आता रहता था। उसको लगता था कि उनका आशीर्वाद हरपल उसके साथ है। जिससे वह जिस किसी काम मे हाथ डालता है वह उसमे पूरी तरह सफल हो जाता है।

अब उसे एक बार महायोगी के दर्शन की प्रबल भावना पैदा हुई। सोचा अब शीघ्र ही उनके पावन दर्शन करने चाहिये।



मुख्यमत्री अनुराग शुक्ला ने वित्तमत्री चैतन्यसिह से कहा कि मैं तो दो दिन के लिए राजस्थान जाना चाहता हू। वित्तमत्री बोला- क्या राजस्थान घूमना है या फिर अपनी जन्म भूमि पर किसी से मिलने जाना है।

यार ! ये दोनो ही काम नहीं है।

वित्तमत्री बोले- तो फिर ऐसा क्या काम है जो आप राजस्थान जाना चाह रहे हैं।

मुख्यमत्री- एक बहुत ही विशिष्ट कार्य है।

क्या राजस्थान के मुख्यमत्री भवानीसिह ने बुलाया है।

मुख्यमत्री- अरे यह सब कुछ नही है।

वित्तमत्री तो फिर क्या काम है ? मुख्य मत्री- सुनो मैंने जानकारी की है कि समता साधक महायोगी उदयपुर विराज रहे हैं। उस पावन पुरुष के दर्शन करने जाना है।

वित्तमत्री - इतने बुद्धिमान होकर भी आप किस चक्कर मे पडे हो। सन्यासियो मे क्या पडा है ? ये सब नशा करने वाले होते हैं। सुल्फा चरस शराब पीने वाले होते हैं। रुपये पैसे एकत्रित करके मठ बनाकर ऐश आराम करते हैं। समाज का भारी शोषण करते हैं।

मुख्यमत्री- तुम्हारा कहना भी ठीक है मैं भी यह चाहता हू कि शोषण बद हो। इसके लिए गृहमत्री नटवरसिह को निर्देश दे चुका हू कि महाराष्ट्र मे जितने मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर, गुरुद्वारा आदि धर्म स्थान हे उन सबकी लिस्ट बनाई जाय। उनका क्या ट्रस्ट है क्या आय है। इन सबका हिसाब व्यवस्थित रूप से तैयार किया जाय। लेकिन मैं जिस महायोगी के लिए कह रहा हू वे ऐसे नहीं है। बल्कि सबसे विलक्षण व्यक्तित्व है उनका। यो समझ लो कलियुग मे सतयुग का अवतार है। इतने असाधारण साधनशील होकर भी साधारण से साधारण परिवेश मे जीने वाले हैं।

वित्तमत्री - ऐसा क्या अदभुत व्यक्तित्व है उनका ? वित्तमत्री का भी आकर्षण बढने लगा।

मुख्यमत्री- मैं उनके नजदीक से सम्पर्क मे आया हुआ हू, आज से 15 वर्ष पूर्व से अपने बगले मे पधारे थे चाहता तो मैं भी नहीं था, पर मेरी माता

जी व बहिन के आग्रह पर उन्हे घर पर आमन्त्रित किया। जब वे पधारे तो उनके सानिध्य मे रहा। उनका समीप्य ही अदभुत शान्ति देने वाला बना। उनके उपदेश ने मेरे सोच की दिशा ही चेन्ज (Change) कर दी। जिन्दगी मे आमूल क्रान्ति खडी हो गई। आज जितने भी जनकल्याण के काम मेरे द्वारा हुए हैं। यह नई पार्टी जो खडी करके चुनाव जीता हू इन सबका श्रेय उस महायोगी को जाता है। क्या तुम्हे आश्चर्य नही होता कि प्रथम बार तो पार्टी बनाई और चुनाव लडकर प्रचड बहुमत से जीत भी गए। इन सबके पीछे महायोगी जी का आशीर्वाद ही काम कर रहा है।

वित्तमत्री– जब तो बडा अदभुत व्यक्तित्व है उनका फिर भी लोग उन्हे जानते भी नही। लोग तो पता नहीं कहा–कहा जाते रहते हैं। लेकिन ऐसे महायोगी का नाम तो हमने सुना नही।

मुख्यमत्री– तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है। वे इस प्रसिद्धि से बहुत दूर हैं। वे एक सच्चे साधक हे। प्रसिद्धि ही किसी की करवानी हो तो बडे आराम से हो जाती है। आजकल तो विज्ञापन का युग है। विज्ञापन से रद्दी से रद्दी माल भी बिक जाता है। तो अच्छी चीज तो बिकेगी ही। पर वे महायोगी ऐसे प्रचार–प्रसार से बहुत दूर हैं। वे अपनी ही साधना में जीने वाले महासाधक हैं। उनके पावन दर्शन करने से तो इस भव मे भी अभी शान्ति मिलती है। जैसे गर्मी से तपे व्यक्ति को ए सी मे जाने से शान्ति मिलती है। उसी प्रकार ससार के दु खो से उद्विग्न व्यक्ति को उनके पास जाने से शान्ति मिलती है।

भी कुछ कारगर नहीं होती।

वित्तमत्री–आपने तो अच्छा समझा ओर समझाया। यदि आपकी स्वीकृति हो तो हम भी आपके साथ चलना चाहते हैं।

मुख्यमत्री– जरूर चलो । मैं तो चाहता हू कि आप लोग भी उनका सानिध्य प्राप्त करें तो आपके जीवन के विकास के साथ ही आपके माध्यम से देश का विकास भी होगा। वित्तमत्री ने महाराष्ट्र की सारी मिनिस्ट्री को मुख्यमत्री के प्रोग्राम से अवगत कराया। जिसे सुनकर सब के सब मिनिस्ट्री विथ (With) फैमली (Family) तैयार हो गए। स्पेशल (Special) हवाई जहाज की व्यवस्था की गई। राजस्थान सरकार को पता चला कि महाराष्ट्र की सारी मिनिस्ट्री उदयपुर आ रही है तो उन्हे भी आश्चर्य हुआ। फिर पता चला कि वहा पर किसी पहुचे हुए महायोगी के सतसग का लाभ लेने आ रहे हैं, तब और भी अधिक आश्चर्य हुआ। इस कलियुग मे भी जहा चरित्र एव नैतिकता का पतन निरन्तर होता जा रहा है, वहा धर्म और अध्यात्म के प्रति रुचि तो आकाश कुसुम की तरह असमव है। पर यहा तो समव हो रहा है लगता है महायोगी निश्चय ही बहुत सिद्धि सम्पन्न साधक है। राजस्थान का मुख्यमत्री भवानीसिह सोचने लगा, लगता है उसी महायोगी के आशीर्वाद का ही परिणाम है कि महाराष्ट्र मे जो पार्टी बनी। वह पहली बार तो बनी और पहली ही बार चुनाव मे प्रचड बहुमत से चुनाव मे जीतकर सरकार भी बना ली। सरकार बनाने के बाद जन उद्धार का काम जितना इस समय महाराष्ट्र मे हो रहा है, उतना अन्य प्राप्त मे नहीं है। इसके साथ ही भ्रष्टाचार भी जडमूल से उखडता जा रहा है। जनता चैन की बशी बजा रही है। पार्टी की लोकप्रियता निरन्तर बढती जा रही है। इस चुनाव मे 285 मे से 205 सीटे आई है लेकिन लगता है अगले चुनाव मे तो शतप्रतिशत सीटे इसी पार्टी की आएगी। क्योकि पब्लिक आकर्षण इसके जनकल्याण के कार्यों के कारण निरन्तर बढ रहा है।

जबकि देखा यह जाता है कि जो पार्टी जीत जाती है, सरकार बना लेती है, उसके बाद उसका आकर्षण निरन्तर घटता जाता है। ओर अगले चुनाव मे ज्यादातर हार जाती है। पर इस पार्टी का आकर्षण तो निरन्तर बढता जा रहा है।

भवानीसिह– सोचने लगे– जिस महायोगी के लोग दर्शन करने के लिए महाराष्ट्र से आ रहे हैं। ऐसे महायोगी का मेरे प्रान्त में रहते हुए मैं उनके दर्शन नहीं कर पाया। उसने तुरन्त निर्णय लिया कि मुझे भी उदयपुर जाना

है। महाराष्ट्र के मन्त्रीमण्डल का स्वागत करना है साथ ही महायोगी के दर्शन भी।

मुख्यमत्री– भवानीसिह के साथ 6 मत्री और तैयार हो गए। सभी पहुचे उदयपुर सबसे पहले डबोक एयरपोर्ट पर। वहा महाराष्ट्र के मत्रियो का स्वागत किया। उनकी सभी प्रकार से उचित व्यवस्था की। उसके बाद सबके सब महायोगी के दर्शनार्थ उनके धर्म स्थान पहुचे।

महायोगी जी, श्वेत साधारण परिधान मे एक काष्ट के पाट पर विराजमान थे सभी ने उस अलौकिक महापुरुष को श्रद्धा से प्रणाम किया। सभी को अनिर्वचनीय शान्ति की अनुभूति हुई।

सभी शातभाव से बैठ गए। कुछ ही देर मे महायोगी ने ध्यान पूर्वक नेत्र उन्मीलित किये तो सामने अग्र पक्ति पर दो मुख्यमत्री अनुराग शुक्ला और भवानीसिह बैठे थे। उन्होने फिर महायोगी को प्रणाम किया। महायोगी ने अपना हाथ उठाकर सभी को आशीर्वाद प्रदान किया। हाथ के आशीर्वाद से सभी कृतार्थ हो गए। दृष्टाओ को लग रहा था, जैसे कलियुग मे सतयुग का अवतरित हुआ हो।

महायोगी ने पूछा– आप तो अनुराग शुक्ला लगते हो और आप भवानीसिह ?

कुछ पता है। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि इनका तीसरा नेत्र भी खुल चुका है। इनसे भूत भविष्य की कोई बात अगम्य नहीं है।

मुख्यमत्री–भवानीसिह बोले–योगी जी ! मैं तो बहुत घाटे मे रहा।

महायोगी– वह कैसे ?

भवानीसिह– यह तो आप स्वय जानते हो। आप जैसे महायोगी मेरे प्रान्त मे होकर भी मैं अभागा वचित रहा। इतने मे अनुराग शुक्ला बोले– भवानीसिह जी ! यह सब तो समय की बाते है। अब भी कुछ नहीं बिगडा है। आप तो अब भी दर्शन सेवा का लाभ ले सकते हैं। भवानीसिह– वह तो लूगा ही सही।

इसके बाद अनुराग शुक्ला ने अपने सारे मत्रियो का परिचय कराया और राजस्थान के मत्रियो का भी परिचय कराया। उसके बाद सभी ने कुछ देशना सुनने की जिज्ञासा दर्शायी।

महायोगी ने देशना की उपयोगिता को समझकर कुछ क्षण के लिए ध्यानस्थ हो गए। उसके बाद नेत्रो को उन्मीलित करते हुए देशना प्रदान की।

शरीर और आत्मा भव–भव से साथ होने के कारण आत्मा अपना मौलिक स्वरूप भूलकर शरीर को ही अपना मान बैठा है। लेकिन इस मनुष्य जीवन मे सत्य तथ्य जानकर योग के बल पर आत्म स्वरूप को व्यवस्थित रूप से जगाया जा सकता है। सासारिक सुख, हकीकत मे सुख न होकर सुख का अहसास देने वाले होते हैं। जिस पदार्थ मे सुख मिलने लगता है उसी पदार्थ का बार–बार उपयोग करने पर वह पदार्थ अधिकाधिक सुख न देकर दु ख ही अधिक देने लगता है।

सत्ता और सपत्ति का उपयोग स्वय के लिए करने पर इतना सुख नही मिलता, जितना कि दूसरों के उपकार के लिए करने पर सुख की प्राप्ति होती है। अति उपलब्ध साधनो का उपयोग जनकल्याण मे करना ज्यादा हितकर होता है। किसी का भी कोई भी स्तर सदा–सर्वदा एक सा नहीं रहता। अत अनुकूल सयोग मिलने पर अहकार और प्रतिकूल सहयोग मिलने पर अपमान का भाव मन मे कभी नहीं लाना चाहिये।

किसी धर्म के क्रियाकाण्ड से पहले इन्सान मे इन्सानियत आना जरूरी है। जिस इन्सान मे इन्सानियत नहीं वह भगवान को प्यारा नही हो सकता अर्थात् उसमे भगवद् रूप प्रकट नहीं हो सकता।

कुव्यसन यद्यपि सुख नही देते। परन्तु ना समझी वश जिस प्रकार कुत्ता हड्डी को चूसता है, जबकि खून हड्डी से नही उसके मसोडो से निकलता है। और अन्त मे उसके मसोडे छिल जाते हैं। उसी प्रकार दुर्व्यसन भी व्यक्ति के अन्दर और बाहर के जीवन को क्षत–विक्षत करने लगते हैं। कई बार गम्भीर बीमारियो को आमन्त्रित कर देते हैं। यही नही दुर्व्यसनी व्यक्ति अपनी वश परम्परा को भी खराब कर देता है। अत दुर्व्यसनो से मुक्ति अनिवार्य है।

सुख देने से सुख मिलता है, प्रधानमत्री जी को जब देहाती भी गले मे माला डालता है तो झुकना पहले प्रधानमत्री जी को ही पडता है।

प्रकृति का नियम है कि अनाज खेत मे अन्दर जाने पर शत गुणित रूप से फलता है। उसी प्रकार पुण्य पाप भी व्यक्ति यदि गुप्त रखता है तो वह भी शतगुणित फल देने वाले बनते हैं। अत व्यक्ति को चाहिये कि पुण्य को बढाने के लिए गुप्त रखे और पाप को घटाने के लिए लोगो के सामने प्रकाशित करे। गलती को गलती के रूप मे स्वीकार कर ले। आज व्यक्ति अपने पुण्य–दान को तो सबको बतलाता है। और अपने पापो को छुपाता है। इसलिए परेशानिया बढ रही है। इसलिये कहा गया है–

जिन्दगी का आनन्द खाने मे नही खिलाने मे है।

पीने मे नही पिलाने मे है।

जीने मे नही जिलाने मे है।

निन्दा करने मे नही प्रशसा करने मे है।

किसी के अवगुण गाने मे नही गुण गाने मे है।

जीवन का स्तर धन से नहीं धर्म से उठाईये।

दुराचार से नही सदाचार से उठाईये।

[illegible] से नही सत्कार से उठाईये।

को छूती चली गई।

अनुराग शुक्ला ने उठकर महायोगी को प्रणाम करते हुए कहा– आप तो इस कलियुग के भगवान है। आपके सानिध्य को पाकर पतित से पतित आत्मा भी पावन बन जाती है। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके निर्देशानुसार स्वय का और इस युग के निर्माण करने का भरसक प्रयास करेगे। सभी मत्रीगण हाथ जोडकर खडे हो गए। इतने मे महायोगी का आशीर्वाद परक हाथ ऊपर उठा और सभी भाव विभोर हो उठे।

अन्त मे महायोगी देह से ऊपर उठकर विदेह आत्म साक्षात्कार मे लीन हो गए।

❑❑❑